अन्तिम परीक्षा

अन्तिम परीक्षा

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

ANTIM PAREEKSHA (अन्तिम परीक्षा)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-59-0
दाम: 251/- (भा.रु.)
सत्त्वाधिकार: © लेखक (श्री जगदीश प्रसाद मण्डल)
दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2020)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम:

जबुरिया कागज

हरिहर क्षेत्रक मेलासँ गाम पहुँचते बसन्त भाइक पत्नी-सितिया भौजी कहली-

"गाममे धमगज्जर मारि भेल!"

भौजीक मुँहक बात बसन्त भाय अधे-छिधे सुनलैन। अधा-छिधा सुनैक माने भेल जे चेतनशून्य कान तँ सुनलकैन मुदा चेतनशील मन नहि सुनलकैन। नहि सुनैक कारण भेलैन जे हरिहर क्षेत्रक मेलाक देखल-सुनल बात मनमे ओहिना नाचि रहल छेलैन जेना मेलाक दृश्य देखलैन। देखलैन ई जे एक दिस गज आ ग्राहक दृश्य, आ दोसर दिस बाढ़िक प्रकोपसँ मेला-मैदान थाल-पानिसँ चपचाएल धरती, जइसँ दोकानो-दौड़ी आ आनो-आन काज लेल जमीन अनुकूल नहि देखि पेब रहल छला। माल-जाल, माने सभ रंगक पालतू पशु थालमे लगातार केतेक समय रहि सकैए? समस्या तँ उपस्थित छेलैहे।

ओना, अपनोपर कखनो-कखनो तामस सेहो बसन्त भाइक मनमे उठैन। तामस उठैक कारण रहैन जे जेही दिन मेला शुरू भेल माने कातिकक प्रथम दिन, तही दिन मेला पहुँच गेला। तामस उठला पछाइत अपने मन सिपारिस करैत कहए लगलैन जे कोनो कि हरिहरे क्षेत्रक मेलाक प्रश्न अछि आकि धार-धूर-कातक सभ मेलाकेँ एहने गति अछि। आनो-आनक तँ वएह गति अछिए, जे सार्वजनिक उत्सवक आयोजन सामूहिक शक्तिसँ हेबा चाही ओ बेकतीगत

शक्तिक हाथमे गेने गतिहत होइते अछि।

रसे-रसे बसन्त भाइक मन वैशाखक रौद जकाँ तराससँ तरैसिये गेल छेलैन, बजला-

“अपन मारि कियो देखनिहारे नहि आ..? बाहरसँ एलौं हेन, रस्ताक गरमाएल छी तँए पहिने नहाएब, जखलै करब, चाह पीब तखन गाममे की भेल से सुनब।”

अपन नियमबद्ध जीवन बना कौल्हुक बरद जकाँ अपना सीमामे घुमैत दिन-राति बीता ली, यएह ने भेल जीवन गुदस करब। एकाएक बसन्त भाइक मनमे अपन दायित्व भाव जगलैन। जगिते उठलैन जे जाबे गाममे नइ छेलौं, तइ बीच जँ मारिये-पीट भेल, तइमे हमर कोन दोख भेल। मुदा जखन गाम आबि गेलौं तखन जँ देख-भाल नहि करिऐन सेहो तँ अपन मन नहियेँ मानैए...। बसन्त भाय बजला-

“अखन नहाए लगब तँ देरी हएत, संजोग छिऐ किछु लाभ हमरोसँ हुनका सभकेँ भऽ जाइन। अहाँ जाबे चाह बनाएब ताबे हमहूँ कलपर हाथो-पएर धो लेब आ चारि घोँट पानियोँ पीब अबै छी।”

चाह पीब बसन्त भाय दरबज्जापर सँ जखने निकलला कि गुलटेनकेँ उत्तरसँ अबैत देखलैन। उत्तरे-दच्छिने सड़क अछि, अपन डेगकेँ बसन्त भाय छोट केलैन। लगमे गुलटेनकेँ अबिते बसन्त भाय बजला-

“गुलटेन सुनै छी गाममे खूब रमन-चमन भेल अछि?”

‘रमन-चमन’ सुनि गुलटेन सहैम गेल। सहमैक कारण भेलै जे जइले मारि भेल से केते उचित भेल, मुदा अपनामे ओते दम अछि जे अपन विचार लोकक बीच बाजि सकब। तखन तँ गाममे छी, पुछलैन तँ किछु कहै पड़त। गुलटेन बाजल- “ठीके सुनै छी बसन्त भाय।

मुदा अपना कोनो मतलब नहि अछि तँए जहिना अहाँ सुनलिऐ तहिना हमहूँ सुनैत आबि रहल छी।”

गुलटेन जखन अपनाकेँ ओइ घटनासँ मुक्त[1] रखने अछि तखन ऐसँ बेसी पुछब उचित नहि हएत। बसन्त भाय मने-मन हियाबए लगला जे दू पक्षक बीच झगड़ा अछि, झगड़ाक आधार जे होउ मुदा दस गोरे मारि तँ जरूर खेलक अछि। पहिने केकरो ऐठाम जाइसँ नीक हएत जे रस्तेपर जँ कियो भेट जेता तँ पहिने हुनकेसँ आरो हुलिया[2] लेब। तैबीच मनमे ईहो प्रश्न उठि गेलैन जे गाममे दस गोरेसँ ऊपरे मारियो खेलैन आ एक-दोसरकेँ मारबो केलैन। जँ सभसँ पुछए लगिऐन जे केते मारि खेलौं आ केते मारलिऐ जइसँ हिसाब मिलि जाएत जे घट्टामे रहला आकि नफ्फामे। मुदा लगले अपने मन रोकलकैन जे एते जे समुद्र उपछए लगब, माने एते गोरेसँ जे एते बात पुछि बुझए लगब तखन तँ समुद्रे जकाँ उपछैमे समय लगत। अनेरे जे समुद्र उपैछ रस्ता बनाएब तइसँ नीक ने जे या तँ अर्जुन जकाँ एक तीरमे पुल बनबैक साहस करब वा हनुमान जकाँ कुदैक बल बनाएब। से तँ सम्भव नहि अछि। मुदा लगले अपने मन दुतकारैत कहलकैन अस्पतालमे कोनो रोगीक सेवा डॉक्टरसँ परिचारिका धरि करै छैथ तँए कहब जे परिचारिको डॉक्टरे जकाँ अध्ययन-मनन केने छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। तँए ईहो कहब जे रोगीक रोगक उपचारमे डॉक्टर सेवा केलैन आ परिचारिका नहि केलैन, सेहो बात नहियेँ अछि। जखन सेवाक प्रश्न अछि तखन तँ सभ सेवामे भागीदार भेला, सभ सेवा केलैन।

..बसन्त भाइक मन मानि गेलैन जे जे कियो पहिने भेटता

---

[1] अलग

[2] जानकारी

हुनकेसँ अपन सेवा शुरू करब।

बसन्त भाइक मनमे जहिना एकदिस सेवाक भवन (भव+अन) जगलैन तहिना दोसर दिस कुभाव सेहो जगलैन। कुभाव ई जगलैन जे दू पक्षक बीच मारि भेल, समाजक रूपमे अपनाकेँ बुझि आगू बढ़ि रहल छी, कियो पहिने भेटता आ हुनकासँ पुछबैन माने मारिक विषयमे, आ हुनका जँ तत्काल सेवाक जरूरत होनि आ अपने ओ सुनि-बुझि जाइ, आ दोसर पक्षक कियो देखि कऽ बुझैथ जे फल्लाँ फल्लाँ पक्षमे छैथ तखन तँ अपने सीमांकित भऽ जाएब। तखन निष्पक्षता केना औत? निष्पक्षता लेल निष्पक्षदार बनि जखन निष्पक्ष भाव मनमे राखब। ऐ ले निर्विचारी बनब तखन ने भेल जखन जमीनी[3] विचारसँ फराक होइत निरविकार जकाँ निरविचार करैत निरविकार शब्द बाजब।

बसन्त भाइक मन बीच रस्तापर ठाढ़ भेल ठमैक गेलैन। एक दिस देखैथ जे कियो-ने-कियो एक पक्षक जँ भेटत तँ दोसर पक्षकेँ मनमे डाह हेबे करतैन जे फल्लाँ सेहो गुल्ली-पेंच कऽ रहला अछि। हमरा जखन कोनो मतलब माने कोनो सम्बन्ध नहि अछि तखन किनको मनमे कुवाथ जनमाएब करब उचित नहि...। उचित-अनुचित लग अबिते बसन्त भाइक मन अपने दुतकालरकैन जे समाजमे रहि समाजसँ मुँह नुकाएब कायरता छी। कायर बनि, समाजक बोझ बनि जीबसँ नीक ने मरि जाएब भेल।

..असमंजसमे पड़ल बसन्त भाइक डेग ने आगू उठैन आ ने पाछू हटैन, खरहोरिक कड़ची जकाँ माने खरहोरिक रखबार जकाँ, रखबाइर करब बुझि पड़लैन। तैबीच अपने मन अतीतमे वौआ गेलैन जेकर फलाफल समाजमे अखनो बीर्तमान अछि। बसन्त भाइक मन

---

[3] सतही

अतीतमे ई वौएलैन जे अखन जेते झगड़ा-फसाद समाजमे अछि ओकर जड़ि केना शुरू भेल। माने ओ रोपाएल केना? इतिहासो तँ एहने ने अछि जे केतौ कुत्ता ले तँ केतौ बिलाइ ले झगड़ा-फसाद होइत रहल अछि आ समाज गोपलखत्ता दिस ढरकैत आबि रहल अछि।

बसन्त भाइक आगूमे जेना चारू दिस अन्हारे अन्हार बुझि पड़ए लगलैन। जहिना गुप-गुप अन्हारोमे माने जेतए अपनो देह-हाथ अपन आँखि नहि देखि पबैत तहूठाम, तँ ज्योति पुंज काज करिते अछि तहिना बसन्त भाइक विचारमे ज्योतिपुंज प्रकाशित होइते संकल्पक एकटा रेख मनमे जगलैन।

बसन्त भाइक मनमे रेख ई जगलैन जे दू पक्षक बीच घटना भेल, दुनू पक्षक अपन-अपन आधार हेबे करतैन। तैठाम नीक हएत जे अपन तेसर रस्ता पकैड़ दुनू पक्षक बीच निष्पक्ष बनि समाजमे किए ने डेग उठाबी। बसन्त भाइक मनमे जँचलैन जे जेतए जे होउ, मुदा अपन निष्पक्षता तँ जीवित रहत। कियो अपने केलहा ने पबैक अधिकार रखैए। अनकर कएल लूट-खसौत तँ सभ दिन होइत आबिये रहल अछि अखनो होइए।

बसन्त भाइक मनमे जगलैन जे जखन समाज बुझि डेग उठा एते दूर आबि गेलौं तखन पीठ देखबैत घरमुहाँ घुमब नीक नहि। किए ने रस्ते-रस्ते सौंसे गाम टहैल देखी। जे भेटता, हुनका कहबैन जे जे घटना भेल ओइसँ जे नोकसान भेल, तेकरा आब सम्हारैक अछि, जइसँ आगू नोकसान नइ हएत। अतीतक घटनाकेँ वर्तमानक घटना कोन रूपमे मानल जाए? किए तँ समाजमे अनेको रंगक घटना, चाहे वैचारिक होइ आकि बेवहारिक, सभ दिनसँ घटैत आबिये रहल अछि आ घटितो तँ अछिए। तैठाम तँ यएह ने नीक

हएत जे जे घटना तत्काल घटल अछि ओकर सिर पकड़ैत सोरक–सोर भेल जइसँ जन्म लेलक–रूप देखि विचार करी।

बसन्त भाइक मनमे एते भरोस अपनापर जगि गेलैन जइसँ अपने मन कहलकैन जे दुनियाँ एक दिस किए ने भऽ जाउ मुदा अपनो तँ जिनगीक दिशा अछिए। जइ दिशामे अपनो चलबे अछि...। हीय खोलि बसन्त भाय आगू दिस डेग उठौलैन कि थोड़बे आगू बढ़ला पछाइत जीवानन नामक एकटा युवक भेटलैन। बसन्त भायकेँ सभ दिनसँ जीवानन 'काका' कहैत आबि रहल छैन।

जीवाननकेँ देखिते बसन्त भाइक मनमे उठलैन जे किए ने जीवेनन लगसँ अपन विचारकेँ आगू बढ़ाबी। मनमे बसन्त भाय विचारिये रहल छला कि जीवेनन आगूसँ टोकि देलकैन-

"गोड़ लगै छी काका, बहुत दिनक पछाइत देखलौं हेन?"

बसन्त भाय बजला-

"जीवानन, पाछूक जे अधा अंश कहलह ओ दुनू गोरेक एक्केरंग भेल। जहिना तूँ बहुत दिनक पछाइत देखलह तहिना हमहूँ ने तोरा देखलिअ। मुदा ऐगला, माने पहिलुका जे अंश अछि 'गोड़ लागब' तेकर जवाब दैत कहै छिअ जे जहिना तूँ गोड़ लगलह आसिरवाद ले, तहिना हमहूँ गोड़ लागि कहै छिअ जे हमरा संगे चलह आ कोनो धरानी गामक नोकसानकेँ रोकह।"

समाजक तेसर श्रेणीक परिवारक जे विचारधारा अछि, तइ विचारधाराक परिवारमे पलित जीवानन अपन स्थिति स्पष्ट करैत बाजल-

"काकाजी, जँ दुर्गापूजाक प्रस्ताव रहैत तँ मिसियो भरि पाछू नहि हटितौं, मुदा गामक जे घटना अछि तइमे पकैले किए जाएब?"

जीवाननक विचार सुनि बसन्त भाइक मनक भीतरक एकटा

फाटक जेना सेहो भेटलैन। फाटक भेटते मन पड़लैन बीस साल पहिलुका विचार। केना प्रशासन जनसमूहकेँ बड़गलबै छल...। मुदा तइ विचारकेँ मनेमे रखि बसन्त भाय बजला-

"जीवानन, ठीके तूँ कहलह। मुदा मनमे जे विचार उठि गेल ओ उठल केना रहत, तइले ते हमहीं-तोहीं ने विचार करब।"

ओना, बेकतीगतो रूपमे आ सामाजिको रूपमे बसन्त भायकेँ जीवानन हृदयसँ आदर करिते छैन। तैपर अपना संग विचार-विमर्श करब, ई तँ बहुत पैघ उपलब्धि समृद्धिक छीहे। समृद्धिता तँ वएह ने भेल जे अपन जीवनक जंजालसँ ऊपर चढ़ि गाम-समाजक सम्बन्धमे सोच-विचारक जेते समृद्धिता रहत...। ओना जीवाननक अपनो मन डोल-पत्ता कइये रहल छल। डोल-पत्ता ई करै छल जे जखन गाममे एते पैघ मारि-पीट भेल, जइसँ गामक लोक दू फाँक भऽ दुनू दिस भऽ गेल, तैठाम अपने केना जीब सकै छी? तहूमे टोलबैइयो आ दियादोवाद दुनू दिस बँटाइये गेल छैथ...। पानिमे डुमैतकेँ जेना किछु सहारा भेटने जीवनक आशा जगैए तहिना बसन्त भाइक विचार सुनि जीवाननक मनमे जगल। जीवानन बाजल-

"काकाजी, अपनेक विचार मानि संग चलैले तैयार छी, मुदा कोनो एहेन काज नइ हुअए जे अनेरे लोक दोष लगबैत ओहन पक्षक मानि लिअए जेकर अनुचित वृत्ति होइ।"

जीवाननक बात सुनि बसन्त भाइक अपनो मन चौंकलैन। चौंकिते विचार जगलैन जे ठीके जीवानन कहलक अछि। अपराध करत कियो, अपराधक लाभ उठौत ओ, आ अपराधीक संग अपने फाँसीपर चढ़ी, ईहो तँ उचित नहियेँ भेल। बसन्त भाय बजला-

"जीवानन, पहिने ई कहह जे मारिक सूत्रपात केना भेल?"

बसन्त भाइक प्रश्नक भीतर जे विचार छल, जीवानन नीक

जकाँ ओइ विचारकेँ नहि बुझि पेलक। बुझबो केना करैत। जमीन तँ अपने जाल छी, तहूमे ओइक भीतर जे घुरछी अछि ओ तँ आरो जंजाल छीहे, जे एकटा साधारण लोकक विचारसँ बाहर अछिए। ओ तँ मात्र गामक मुँहगर-कन्हगर आ कोट-कचहरीमे बैसनिहार लोकक बीचक शिकार छी। जे ओहन शिकारी अछि वएह ने एहेन शिकार बुझैए। सोझमतिया जीवानन अछिए, बाजल- “काकाजी, अहाँ तँ गाममे नहि छेलौं तँए नइ देखलिऐ, मुदा हम तँ अपना आँखिसँ देखलिऐ।”

जीवाननक बात सुनि बसन्त भाइक मनमे जगलैन जे जीवाननसँ सभ भाँज लगि जाएत। माने ई जे जखन जीवानन अपने मुहेँ कहैए जे अपना आँखिसँ देखलौं, तखन मारि उठल केना सेहो देखने हेबे करत। बसन्त भाय बजला-

“मारि शुरू केना भेल जीवानन?”

जीवानन बाजल-

“काका, जलखै बेर उनैह गेल छेलै, हमहूँ घास लऽ कऽ बाधसँ आएले रही कि हल्ला भेल। हल्ला सुनि सड़कपर एलौं कि स्त्रीगणो आ पुरुखो सभकेँ दौड़ल भोगीलालक घर दिस जाइत देखलिऐ, हिया-हिया देखिते रही कि ताबे ओमहरसँ माने जेमहर मारि भेल तेम्हरसँ, जुगेसर भैयाकेँ अबैत देखलयैन।”

बीचमे बसन्त भाय बजला-

“तब तँ सभ भाँज लगिये गेल हेतह?”

जीवानन बाजल-

“जुगेसर भैया अपने धड़फड़ाएल टेम्पूक भाँजमे अबै छला। आगूए-सँ पुछलैन जे जीवानन रामधनक टेम्पू गामपर अछि। तइ बीचमे किछु पुछब उचित होएत।”

बसन्त भाय बजला- "से तँ नहियेँ होएत। अच्छा ठीक छै, जखन ऐ निमित्ते माने काजक निमित्ते निकलल छी तखन किछु-ने-किछु करबेक अछि। चलह संगे। दुनू गोरे एक्के बात बाजब।"

जीवानन बाजल-

"एक्के बात की बजबै?"

बसन्त भाय बजला-

"अप्पन बात बाजब। दू पक्षक बीच मारि-पीट भेल, अखनो केते गोरे डॉक्टरे ऐठाम छैथ, थाना-पुलिसक दौड़ सेहो भऽ रहल अछिए। तैठाम अपना सभ एतबे बाजब जे जे भेल से तँ भइये गेल। आब जँ सातुक संग घून पीसब से नीक नहि। तँए दुनू पक्ष समझौता कऽ लिअ।"

बसन्त भाइक विचारकेँ जीवानन जखन हिया कऽ देखलक तँ अपन खाँच-खरोंच केतौ ने देखलक। तैसंग ई देखलक जे अखन भलेँ कियो एकरा उपकार बुझए वा नहि बुझए, मुदा जखन वेहोशसँ होशमे औत तखन उपकार बुझबे करत। मनुक्ख बनि जखन धरतीपर छी तखन जँ उपकारी जीवन नइ भेल, ईहो तँ नीक नहियेँ भेल...।

जीवानन बाजल- "बड़बढ़ियाँ, चलू।"

बसन्त भाय आ जीवानन थोड़बे आगू बढ़ला कि डॉक्टर ऐठामसँ श्रमिकलालक पितिऔत भाय–जीवनलाल–केँ अबैत देखलैन। जीवनलालकेँ देखि बसन्त भाय डेग थोड़ेक छोट कऽ लेलैन। लगमे अबिते जीवनलालकेँ बसन्त भाय कहलखिन- "जीवन, जइ दिनक जे दोख छल भेल, मुदा आगू जे बेरबादी हएत, तेकरा कमसँ कम करैक रस्ता अपनाबह।"

बसन्त भाइक बात सुनि जीवनलालक मन ठमकल। मने-मन

विचारि जीवनलाल बाजल-

“चाचाजी, झगड़ा तँ दू पक्षक बीच भेल अछि आ बेरबादियो दुनू दिस भऽ रहल अछि। हम तँ एक पक्ष भेलौं। पहिने हुनका माने दोसर पक्षक भोगीलालकेँ, पुछिअनु जे ओ करता।”

जीवनलालक बात सुनि बसन्त भाय जखन मनमे विचारलैन तँ बुझि पड़लैन जे ऐ सँ ओझरी छुटत नहि, आरो बेसी लागत। जहिना जीवनलाल बाजल तहिना जँ भोगियोलाल बाजए जे पहिने ओइ पक्षकेँ पुछियौ, तखन तँ पुच्छे-पुच्छी होइमे केते समय चलि जाएत। जेते समय जाएत तेते बेरबादी बेसीए हएत...। विचारकेँ समटैत बसन्त भाय बजला-

“जीवनलाल, कोइ अपन भागी ने छह, तूँ अपन छह आ भोगीलाल अपन छैथ। हम ई नहि ने कहै छिअ जे ओ मानैथ वा नहि, तोरा मानए पड़तह। हम तँ समाजक एकटा अदना लोक भेलौं, समाजक बेरबादीकेँ बँचबए चाहि रहल छी, पहिने तूँ भेटलह तँए तोरा पुछलिअ।”

बसन्त भाइक विचारकेँ सुनि जीवनलाल सेहो मने-मन विचारलक तँ बुझि पड़लै जे बसन्त चाचा ठीके कहै छैथ। विचारमे मोड़ दैत जीवनलाल बाजल-

“चाचाजी, झगड़ा अपना जगहपर अछि, मुदा अहाँक जे विचार अछि तेकरा हम आदर करै छी। जँ भोगीलाल मानता तँ हमहूँ मानैले तैयार छी। अपने जे बीचमे पड़ि बचाउ करए चाहै छी, ई स्वागत योग्य विचार अछि।”

जीवनलालक बात सुनि बसन्त भाय मने-मन विचारए लगला तँ दुनू पक्षक जिनगी मन-आँखिक आगूमे झलकए लगलैन। एक दिस देखैथ जे अनकर कमाइ खाइले जहिना कियो खून पीब रहल

अछि तहिना दोसर दिस ओकरा रोकैले खून केनिहारो तँ तैयार अछिए। तही बीच ने समाजो आ जीवनो चलिते अछि। बसन्त भाय बजला- "अखन तोहू अपना काजमे लागह जीवन, आ हमहूँ आगू बढ़ि अपना काजमे लगै छी, पछाइत जे जेना हएत से कहैत रहबह।"

जीवनलाल बाजल-

"चाचाजी, समाज समुद्र सदृश अछि आ ओइ समुद्रक संचालनकर्ता तँ मनुक्खे ने छैथ। जइ समाजकेँ जेहेन संचालनकर्ता भेटैए ओ समाज ओइ रूपेँ आगू बढ़ैए। ओना, ईहो बात सत् अछिए जे मनुक्खक जन्म अन्हारमे होइए माने चेतन-विहीन अवस्थामे मनुक्ख जन्मैए आ धीरे-धीरे प्रकाश पेब प्रकाशित होइत आगू बढ़ैए, मुदा ओहो सभकेँ एक्के रंग उपलब्धि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। खाएर अखन जाह।"

दुनू गोरे, माने जीवाननो आ बसन्तो भाय किछु आगू बढ़ला कि जीवानन बाजल-

"कक्काजी, जीवनलालक की विचार अछि?"

जीवाननक बात सुनि बसन्त भाय बुझि गेला जे जीवानन नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। जीवाननकेँ बुझबैत बसन्त भाय बजला-

"जे विचार समाज करत ओ जीवनलाल मानैले तैयार अछि।"

जीवानन बाजल- "जखन एक पक्ष तैयार भेल तखन बुझू जे समझौता हेबे करत।"

बसन्त भाइक मन मानि लेलकैन जे आब जँ ओ पक्ष माने भोगीलालक पक्ष, रस्तापर नहियोँ भेटता तँ हुनका ऐठाम जा कऽ पुछैक रस्ता खुजिये गेल। जखन एते दूर आबिये गेल छी तखन किए

ने ओहू पक्षसँ विचार कइये कऽ जाइ। जीवाननक आशा देखि बसन्त भाय बजला-

"से तूँ केना बुझै छह जीवानन?"

सोझचलिया प्रवृत्तिक लोक जीवानन अपन हृदयाभाव व्यक्त करैत बाजल-

"कक्काजी, कोनो काजे वा विचारे जँ अधा भऽ जाइए तखन अनेरे ने मन मानए लगैए जे जखन एते भइये गेल तखन जे शेष अछि सेहो हेबे करत।"

अपना मने जीवानन बाजल आ अपना मने बसन्त भाय सोचलैन जे कोनो काज करैले जखन विदा होइ तखन पहिने ई सोचि ली जे काजक उपयोग केहेन अछि, जँ जीवनोपयोगी अछि तँ ओकरा आशान्वित भऽ करैक पाछू लागि जाइ। जँ जीवनोपयोगी नहि अछि तँ ओइ पाछू जे शक्तिक ह्रास माने श्रमक संग समयक ह्रास, हएत सेहो अनुपयोगीए बनि जाइए। तँए ओहन काजसँ परहेज करी। जीवाननक मन जखन मानि रहल अछि, आ ओकरा संग चलबैक सेहो अछि तखन किए ने जीवाननेक प्रशंसा करी...। बसन्त भाय बजला-

"जीवानन, अपनो मन मानैए जे काज सफल हेबे करत।"

बसन्त भाइक विचार सुनि जीवाननक मन चेतनशील भेल। चेतनशील होइते बाजल-

"काकाजी, जखन एते दूर आबिये गेल छी तखन भोगीलाल चाचा-ऐठाम होइत चलू।"

भोगीलाल ऐठाम पहुँचते बसन्त भाय देखलैन जे भोगीलालसँ हुनक पत्नी मोबाइलसँ गप-सप्प कऽ रहली अछि। दरबज्जापर बैसते बसन्त भाय बजला- "भोगीलाल भायसँ गप-सप्प भऽ रहल

अछि?”

मनमोही, माने भोगीलालक पत्नी बजली- “हँ।”

बसन्त भाय बजला- “कहिअनु जे बसन्त बैसल छैथ हुनकासँ कने गप-सप्प करू।”

नीक जकाँ भोगीलालकेँ श्रमिकलाल मारने छेलैन। जइसँ जीवन देखैक विचार भोगीलालक रसे-रसे रिसय लगल छेलैन। भोगीलाल बजला- “बसन्त भाय?”

बसन्त भाय- “हँ।”

भोगीलाल- “की गप-सप्प करए चाहै छी?”

बसन्त भाय बजला-

“दिनक जे दोख छल से भेल, आगू बेरबादी नइ हुअए, सएह कहै छी।”

भोगीलाल- “हमरा दिससँ कोनो एतराज नहि, सभ दिन समाजमे रहलौं, अखनो छी आ आगूओ रहबे करब।”

भोगीलालक विचार सुनि बसन्त भाइक मन मानि गेलैन जे दुनू पक्ष करीब-करीब रस्तेपर अछि। बजला-

“कहिया तक अस्पतालसँ घुमब?”

भोगीलाल बजला- “तीन दिन आरो रहैक अछि, तेकर पछाइत घरेपर दवाइ चलैत रहत।”

बसन्त भाय- “पाँचम दिनक समय पनचैतीक राखी?”

भोगीलाल- “राखू।”

भोगीलाल ऐठामसँ बसन्त भाय विदा भेला। किछु दूर जखन आगू बढ़ला तखन मनमे उठलैन जे पनचैतीक समय तँ बनि गेल, मुदा गामक पनचैतीक जे रूप-रंग अछि सेहो तँ शुद्ध नहियेँ अछि।

मुँह देखौवैल पनचैती होइए। जखन कि पनचैती हेबा चाही निष्पक्ष। दूधकेँ दूध कहल जाय आ पानिकेँ पानि। मुदा ई कहत के? पंचे ने कहता। से तँ पंच अपने रोगाएल छैथ, कियो दियादवादक पक्षधर छैथ तँ कियो जतिआरएक पक्षधर, कियो सम्प्रदायवादक पक्षधर छैथ तँ कियो क्षेत्रवादक। एहेन स्थितिमे पनचैती केना निष्पक्ष भऽ सकैए..!

बाढ़िक घोर-मट्ठा पानि जकाँ देखि बसन्त भाइक मन तरसए लगलैन जे एहेन घोर-मट्ठा पानिकेँ पीबै-जोकर–शुद्ध–केना बनौल जाएत। जहिना विचारे-विचार माने गप-सप्पक क्रममे बाल-बोध बच्चा सेहो चेष्टगर बात बाजि दइए तहिना बसन्त भाइक अपने मन कहलकैन जे कोनो विचार स्थापित करैमे जँ ओकर वस्तुस्थिति स्पष्ट रूपेँ राखल जाए तँ निष्पक्ष लोकक सहमत बनबे करत। मुदा तइले पहिने अपने निष्पक्ष विचार स्थापित करए पड़त...। अनायास बसन्त भाइक मनमे उठलैन जे जीवनक एकोटा काज जँ सार्थक केलौं तँ ओ जीवन सार्थक हेबे करत। जखन आगू डेग उठेलौं तखन ओइ सार्थकताकेँ प्राप्त करबे अछि।

श्रमिकलाल आ भोगीलालक बीचक मारि-पीटक आइ पनचैती छी। जहिना आगि लागल जगहपर माने घर-घराड़ीपर बेर-बेर आगि लगैक सम्भावना बनैए, पैघ भुमकम भेलापर बेर-बेर भुमकमक झटका अबैए तहिना मारि-पीटि भेने सेहो दोहरा-तेहरा कऽ मारिक सम्भावना बनिते अछि। एहेन सम्भावना रहने दुनू पक्षसँ माने भोगियोलालक पक्षसँ आ श्रमिकोलालक पक्षसँ अधिक-सँ-अधिक लोक पनचैतीमे पहुँचल छला। ओना, गाम छी दस-पनरह प्रतिशत परिवारक लोक मारि-पीटमे छला। जखन कि पचासीसँ नब्बे प्रतिशत लोक निष्पक्ष छैथ, मुदा पनचैतीमे पाँच-सँ-दस प्रतिशत परिवारक लोक पहुँचल छला। पनचैतीक सूचना ढोलहोक

माध्यमसँ देल गेल छल, मुदा पहुँचला पाँचे-दस प्रतिशत। पाँच-दस प्रतिशत लोक पहुँचैक अनेको कारण अछिए। किछु लोक समाजमे अखनो एहेन छथिए जे उचित-अनुचितक विचार बिनु केनहि अपनाकेँ कात राखए चाहै छैथ, तहिना किछु लोक एहनो छथिए जे पर-पनचैतीक पंच-जोकर अपनाकेँ नहि बुझै छैथ। तहिना किछु लोक एहनो छथिए जिनका अपने एते काज रहै छैन जे पर-पनचैतीमे जाइले समये ने भेटै छैन। किछु लोक एहनो छथिए जे आवश्यक काजसँ बाहर गेल रहै छैथ। सभसँ मुख्य अछि जे जैठाम मारि-पीटक सम्भावना रहैए तैठामसँ गामक तिक्रमवाज सभ हटले रहैए। कहलो गेले अछि जे 'आगिमे कुत्ता नइ झड़कैए।'

जहिना बसन्त भाय समझौताक डेग उठौलैन तहिना पनचैतीक आयोजनपर सेहो मुस्तैज छला। पनचैती शुरू भेल।

जहिना भोगीलाल अपन सभ समांगक संग छला तहिना श्रमिकलाल सेहो अपन समांगक संग सहयोगीक संग छला। तैसंग ईहो विचारि नेने छला जे ने हमरा सभकेँ झूठ बजैक अछि आ ने सत्यसँ पाछू हटैक अछि। श्रमिकलालकेँ ज्ञानचन पुछलखिन-

"श्रमिकलाल, अहाँ जइ जमीनपर घरक नाओं लिअ गेल छेलौं ओ जमीन अहाँक केहेन अछि माने ओइ जमीनक की सबूत अछि?"

श्रमिकलाल बाजल-

"ज्ञानचन भाय, देखिते छी जे अपन घर-आँगन बँसबीटीमे अछि, तँए सोचलौं जे सड़कक कातमे जमीन कीनि घर बनाएब। तीन साल बम्बैमे भरि-भरि दिन खटि, एक लाखमे एक कट्ठा जमीन जीबछसँ पैछला साल कीनलौं। दस्तावेजो अछि।"

ज्ञानचन भोगीलालसँ पुछलखिन- "भोगी, अहाँक जमीन

केहेन अछि?”

भोगीलाल बजला-

“श्रमिकलालसँ छह मास पूर्वे जीबछसँ कीनने छेलौं।”

ज्ञानचन-

“जखन छह मास पहिने जमीन कीनने छेलौं तखन तँ ओइ जमीनक दखल सेहो रहल हएत?”

भोगीलाल बजला-

“देखिते छिऐ जे जमीन परती पड़ल अछि टोलक धिया-पुता सभ हगनार बनौने अछि।”

बसन्त भाइक मन मानि गेलैन जे झगड़ाक जड़ि जीबछ छी। जीबछकेँ बसन्त भाय पुछलैन-

“जखन छह मास पहिने भोगीलालक हाथे जमीन बेच नेने छेलौं तखन श्रमिकलालक हाथे केना बेचलौं?”

तइ बिच्चेमे लक्खन बाजल-

“भोगीलालक चालि छी। अहिना हमरो संग भोगीलाल केने रहए।”

पनचैतीक बीच गल-गूल शुरू भेल। गल-गूलकेँ शान्त करैत बसन्त भाय बजला-

“एक्के बेर सभ नइ बाजू। ओना जइ काजे सभ बैसल छी तखन हमरा सभकेँ ओ निपटेबाक अछि। मुदा एहेन जँ आरो, माने एकरंग समस्या भेल अछि तइसँ एते तँ पता चलिये जाएत जे ओकर निपटारा केना भेल?”

फेर गल-गूल शुरू भेल। ‘हमर बेइमानी भेल’ तँ ‘हमर बेइमानी भेल।’ ज्ञानचन पुन: जीबछकेँ पुछलैन-

"एक्के जमीनक दोबर दाम किए लेलिऐ?"

ज्ञानचनकेँ सम्हारैत बसन्त भाय बजला-

"ज्ञानचन, दोबर-तेबर दामक बात छोड़ह। डाक-डकौवैलमे पँच-पँच दस-दस गुणा दाम भऽ जाइए। ऐठाम जीबछ ई जवाब दिअ जे जखन छह मास पूर्व भोगीलाल लिखौलैन तखन ओइ जमीनक मालिक भोगीलाल भेला कि जीबछ, जे श्रमिकलालक हाथे बेचलैन?"

करेज फाड़ि जीबछ बाजल-

"भोगीलाल जबुरिया कागज बनबौलैन।"



शब्द संख्या : 3366, तिथि : 22 अक्टुबर 2020

बेटाक बिआह

उद्यमपुर एकटा गाम। ओही गाममे रमानन्द नामक शिक्षक छैथ। गाम तँ मझोलके अछि मुदा गामक सोल्होअना जमीन चौरस छइ। कहब जे चौरस तँ सभ गाम होइते अछि तखन उद्यमपुरक चौरसपन की भेल? उद्यमपुरक चौरसपन ई अछि जे आन गाम जकाँ जमीनक आकार ऊपर-निच्चाँ नइ बल्कि एकरंग समतल अछि। तइसँ एते तँ गुण गाममे अछिए जे बाढ़िमे दहाएल तँ सौंसे गाम दहा गेल आ रौदीमे रौदाएल तैयो सौंसे गाम रौदिया गेल। आन गाममे से नहि अछि, रौदी भेल तँ चर-चाँचर उपैज गेल आ जँ दाही भेल तैयो ऊपरका भीठ-भठिआर उपैज जाइए।

अमैया छुट्टी रमानन्द मास्टर साहैब आमक गाछीमे बीता रहल छैथ। सातेटा आमक गाछ आ पनरहे धुरक कलम छैन। अखड़े चौकीपर चीत गरे पड़ल-पड़ल रमानन्द अकास दिस देखि रहल छैथ। कहब जे तरेगन गनै छैथ? नहि..! दिन रहने तरेगन अलोपित भेल अछि।

मास्टर साहैबक मन अपन पनरह धुरक कलम-गाछीमे घुमिये रहल छेलैन कि मोन पड़लैन दादीक मुँहक बात- 'कलयुगक लोक लग्गी लगा कऽ भँट्टा तोड़त..!' ओना, लगले मन घुमिकऽ कहलकैन जे दादी भरिसक कलयुगक नइ छेली। किए तँ बुझले अछि जे कलयुगकेँ केतेक हजार बर्ख बीतनो भेल अछि आ केते हजार बर्ख आगूओ बाँकियो अछि।

दादीपर सँ मास्टर साहैबक मन अपन कलम गाछीपर एलैन। आठ बर्ख लगौना भेल अछि। चारि साए पान साएक लगभग गाछ पाछू आम लटकल अछि। अगातसँ लऽ कऽ पिछात तकक किस्म। अगात-सँ-पिछात धरिक माने भेल बम्बई जकाँ अगतेसँ पकैत मालदह होइत, राड़ि, फैजली धरि।

आमक हिसाब विचारमे अबिते मन खुशी भेलैन। मनमे खुशपन अबिते रमानन्द मास्टर साहैबक मन घुसैक कऽ अपन परिवारपर एलैन। परिवारपर अबिते अपने मन कहलकैन जे बाल-बच्चापर माने बेटा-बेटीपर, जेते अधिकार पिताक अछि तेते अधिकार तँ माइयोक अछिए किने। ऐठाम एकटा प्रश्न बीचमे अछिए, ओ अछि उपार्जनक रूपमे नहि विचार रूपमे। तीन बर्ख अपन नोकरी बँचल अछि, चारि सन्तानमे दूटा बेटी आ एकटा बेटाक बिआह अपना मने केलौं, माने पत्नीसँ बिना विचार-विमर्श केने केलौं, तइसँ अधिकारक हनन भेबे कएल। जे भेल से भेल चारिमक बिआहमे कमसँ कम विचारक दौड़मे एकरूपता लऽ अनैक अछि। विचार केना निर्धारित होइए ओ तँ परिवेशक संग अनेको आरो कारण अछि, मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे साल भरिसँ रमानन्द बाबूक विचारमे, मोड़ कहियौ आकि उन्नति, एहेन विचार जगि गेलैन अछि। घरसँ कनियेँ हटल अपने चौमास लगक खेतमे पूबसँ कलम-गाछी लगौने छैथ। पत्नी–फूलटुसी–केँ शोर पाड़ि बजला- “कने एमहर आएब।”

जहिना मास्टर साहैब शोर पाड़लैन तहिना फुलटुसी पहुँच बजली- “की कहलौं?”

रमानन्द बजला-

“सुधीर, बी.ए.मे पढ़ैए, परीक्षा लगिचाएले छै, अपनो आब

तीनियेँ बर्ख नोकरी रहल अछि। तँए पुछलौं जे केना की सुधीरक बिआह करब?”

पतिक विचार सुनि फुलटुसी चौंकली नहि, एक कुशल गृहिणी जकाँ गृह कार्य बुझि बजली-

“जेठका बेटा परिवारक संग परदेशे धेलक। अपनो दुनू परानी आब रसे-रसे निच्चेँ मुहेँ हएब, तँए अपनो जिनगी दिस ने देखए पड़त..!”

पत्नीक विचार सुनि रमानन्द मास्टर साहैब विचारमग्न भऽ गेला। पत्नीकेँ आगूमे ठाढ़ देखि बजला-

“अखन जाउ। मुदा मनमे राखब जे बेटाक बिआह करैक अछि।”

पत्नीक परोक्ष भेला पछाइत रमानन्द मास्टर साहैबक मनमे दूटा प्रश्न उठलैन। पहिल प्रश्न उठलैन जे आजुक परिवेशमे जेना बेटा-पुतोहु माता-पितापर सँ धियान उतारि बेटा-बेटीपर केन्द्रित केने जा रहल अछि तइसँ वृद्ध माता-पिताक जिनगी कष्टमय हेबे करतैन आ दोसर प्रश्न उठलैन जे जखन दुनू परानी, बेटा-पुतोहु पढ़ि-लिखि नोकरी करए लगत तखन परिवारक की गति हएत?

पहिल प्रश्नपर पहुँचते मास्टर साहैबक नजैर अपने परिवारपर पड़लैन। सात बीघा खेत अछि ओ बटाइये लगल अछि। अपने केने जेते होइत से नहियेँ भऽ रहल अछि। ओना, छोट परिवार रहने खेबा-पीबाक अभाव नहियेँ होइए, मुदा जेतेक उपार्जन होइत सेहो तँ नहियेँ भऽ रहल अछि। तखन तँ नोकरीसँ आमदनी अछि तँए परिवारक काजमे अभावो नहियेँ होइए। मुदा अखन जेना चलि रहल अछि, तीन बर्खक पछाइत तँ ओ बदलबे करत। अपनो आमदनी अधिया भऽ जाएत। ओना, आन शिक्षक जकाँ दरमाहाक पाइ दुनू

परानीक दवाइ-दारूमे खर्च नहियेँ होइए, जइसँ चारू धियो-पुतोकेँ अपन दुनू परानीक समकक्ष बनाइये लेलौं, तँए अखन तकक जे जीवन रहल अछि ओ अपन समाजमे माने शिक्षकक समाजमे, नीक रहले अछि, मुदा आगूक लेल तँ विचार करए पड़त..?

दोसर प्रश्न मास्टर साहैबक मनमे उठल छेलैन जे जँ दूनू परानी नोकरी करत तँ परिवारक की स्थिति हएत? रमानन्द बाबूक मनमे एकाएक विचारक ओहन झलक उठलैन जेहेन भाँग खेला वा पीला, आकि ताड़ीए-दारू पीला पछाइत नशाक पहिल झलक होइए। झलकी उठिते मास्टर साहैबक मन विहुसैत कहलकैन, 'एके बेकती किए दोसराक गुलामी करत, दुनू बेकती किए ने हँसी-खुशीसँ करत?'

ई तँ भेल विचारक पहिल झलकी, मुदा जइ परिवारमे पुरुख नोकरिया छैथ माने घरसँ बाहर धरि पुरुख नोकरी करै छैथ आ खेतो छैन, तैठाम खेती करैबलाक खगता तँ अछिए। मुदा महिलाक बीच जे परिवेश अछि, सेहो तँ देखिते छी जे हजारो बन्धन बीचमे अछिए। दिन-राति ढोल पीटले जाइए जे 'नारी मुक्ति', 'नारी मुक्ति' हुअए। बड़बढ़ियाँ, 'मुक्ति' की आ ओकर आकार की? कहैले ते ईहो कहले जा सकैए जे पुरुख नोकरियाकेँ दोहरी नोकरी करए पड़ै छै, पहिल ऑफिस, कारखन्नामे आ दोसर अपन पत्नीक। ऐठाम तँ 'नारी मुक्ति'क जगह 'पुरुख मुक्ति' चाही किने..?

अपन इलाका माने मिथिलांचल किसानी जिनगीक इलाका रहल अछि। जइसँ किसानी ढाँचामे परिवारो आ श्रमोक ढाँचा बनल अछि। जइ ढाँचाक अन्तर्गत जीवन चलि रहल अछि, एहेन जीवनक क्रमिक विकासक जे दिशा अछि सएह ने अनुकूल भेल। ओना, कहैले ईहो कहले जा सकैए जे अपना ऐठामक खेती जहिना

मौसमक जूआक पाशापर बैसल अछि, तहिना धार-धुरक नैहर-सासुर सेहो छीहे, तैसंग मौसमोक एहेन रूप अछिए जे एक दिस जाड़मे कोढ़ हिला अनेको रोग-वियाधि पैदा करैए, तँ दोसर दिस गरमीमे बाधे-बोने लू लगबैए। कहैले किछु कहल जा सकैए मुदा किछुओ भेलिऐ तँ अपना सभ एकैसमी शदीक भेलिऐ किने। जैठाम लोक खड़ही-बत्तीक मरबा बना बिआहक यज्ञ सम्पादित करैत आबि रहला अछि तैठाम हवाई जहाजमे वैवाहिक यज्ञ नइ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो होइते अछि। तैठाम लाजमी अछिए किने ने हजारो-लाखो समस्यासँ ओहिना ग्रसित छी, जेना गुलाम देशक गुलाम-जन रहैए। आइ जरूरत अछि अपन शक्तिसँ भूमिक शक्ति पैदा करैक। से के करत? हमहीं-अहाँ ने करब। लगले-सूरे विचार मनुक्खक जीवन-शैलीपर रमानन्द मास्टर साहैबक नजैर गेलैन।

जीवन-शैलीपर नजैर पहुँचते मास्टर साहैब चौंकला। चौंकला ई जे जीवनक जे पद्धति अछि ओ तँ घर-घर बनले अछि। माने भेल जे जहिना परिवारमे खेतक उपार्जन-ले माटिक संग ओकर जोत-कोर, बीआ-बालिक संग चलैक जे खगता अछि.., ओ तँ हर परिवारमे अछिए। ई दीगर भेल जे कोनो परिवारमे समांग नहि अछि तँ कोनो परिवारक समांग, रोग-वियाधि दुआरे करै-जोकर नहि अछि, मुदा से अखन नहि।

जहिना परिवार-परिवारक जीवन आ जुगानुसार जिनगी रहल अछि ओइ अनुकूल बेटी जातिकेँ अँगनाक भीतर जे काज अछि तेकर जानकारी–चाहे ज्ञान कहियौ कि शिक्षा–ओ तँ परिवारमे भेटते अछिए। तहूमे मिथिलाक जे सुभिमानी ऋषिका (रीसिका) जगत रहल अछि ओ तँ एहेन रहले अछि जे सभ माए अपन बेटीकेँ अपने सन माए बनबैक अपन सभ कलासँ मण्डित करए चाहै छैथ। करैये-टा नहि चाहै छैथ, करबो करै छैथ आ करितो आबिये रहल छैथ।

यएह ने जीवनक बुनियाद भेल। आब प्रश्न उठैए जे जीवनक बुनियाद की? अखन से नहि, अखन एतबे जे जन्मसँ मृत्यु धरिक समय देखि जीवन निर्धारित करब। मुदा जीवनो तँ जीवन छी जे हजारो-लाखो डारि-पातसँ जुड़ल अछिए। ..मास्टर साहैबक नजैर नारी जगतसँ ससैर पुरुख दिस बढ़लैन।

पुरुख दिस बढ़िते रमानन्द मास्टर साहैबक मन चकोना भेलैन। चकोना ई भेलैन जे नारीक अपेक्षा पुरुखक जीवनक ढाँचा किछु अलग अछिए। अपने हाइ स्कूलमे शिक्षक छी, बच्चा सभकेँ पढ़बै छी, बेटा कारखानामे नोकरी करैए, माने कारखानाक उत्पादित वस्तुक गिनती करैए। ऐठाम श्रमिकक चर्चा ओइ श्रेणीक नहि भऽ रहल अछि जे बोनिहार-मजदूर अछि। किसानक ओहन परिवारक चर्च भऽ रहल अछि जेहेन रमानन्द मास्टर साहैबक परिवार रहलैन। एक पीढ़ी माने मास्टर साहैबक जिनगी, बौद्धिक स्तरक रहलैन माने ज्ञानदानक रहलैन, तैठाम जेठका बेटाक जिनगी कारखानामे नोकरी केने वस्तुक गिनतीमे बीत रहल छैन। तैठाम तँ जीवन स्तरमे मोड़ एबे करत। मुदा अखन से नहि, अखन एतबे जे जिनगीक चौबगलीक पिच्छर रस्तामे पिछड़ैत रमानन्द मास्टर साहैबक मन किसानी जीवनपर आबि अँटकलैन।

किसानी जीवन लग अबिते मास्टर साहैबक मन अपन पूर्वज दिस बढ़लैन। जैठाम, माने जइ मिथिलामे ओहन विकसित (अगुआएल) परिवार रहल अछि जे कट्ठा भरि जमीनपर ओइ गतिये चलै छल जे अतिविशिष्ट बनि ज्ञान दान करै छल। जखन अपन अतीत दिस देखब तखन सभ किछु ने देखब। पानक पातपर चून, खएर, सुपारी, जरदाक पछाइत जे गुलावी खिल्ली पानक आनन्द लइ छी से ओहिना..? एके दिनमे भऽ गेल आकि हजारो पीढ़ीक संचरित क्रियासँ भेल...। तँए ईहो नइ ने बिसरब जे पान पत्ती

करिकऽ एकटा लत्तीनुमा गाछ होइए माने झड़ होइए, पान अलग किस्म भेल। जे पान खाइ छी, से नहि। एकर अपन वंश छै माने ऐ पान-पत्तीक, मुदा तइसँ भिन्न ओइ पत्तीकेँ लीचीक पातक संग खेलासँ पाने जकाँ मुहोँ लाल होइए आ थूको लाल होइए जेकरा देखि खेनिहार बुझिते अछि जे पान खेलौं हेन। एकर माने ई भेल जे पान खेबाक चलैन पछाइत भेल, मुँह रंगैक इच्छा पहिने। किसानक परिवारक क्रम रहल अछि जे बारहो मासक गणना करैत, ओकरा मौसममे–जाड़, गरमी, बरसात–विभाजित करैत खेतीकेँ ओइ रूपेँ जोड़ि जे भूगोलानुकूल हुअए, बरहमसिया किसानी जीवन जीबैक कला रहल अछि। ओ कला अनेको कारणे टुटल। जेकरा जोड़ैक जरूरत अछिए। पितासँ पुत्र, मातासँ पुत्रीक जीवन शैलीक क्रमिक इतिहास सभ दिनसँ आबिये रहल अछि...।

डेढ़ मासक अमैया छुट्टी समाप्त भऽ गेल, माने गरमी छुट्टीक अन्त भेल। काल्हिसँ स्कूल खुजत। ओना, गरमी छुट्टी सेहो एक रंग नहियेँ अछि। कौलेजक नमहर अछि, तइसँ छोट हाइ स्कूलक आ तहूसँ छोट मिडिल स्कूलक होइए। गाम छोड़ैसँ पहिने रमानन्द मास्टर साहैबक मनमे उठलैन जे किए ने पत्नीसँ स्पष्ट विचार बुझि ली जे बेटाक माने सुधीरक, बिआह कोन रूपेँ करए चाहि रहली अछि। अखन तक जे तीनू बेटा-बेटीक बिआह केलौं तइमे पत्नीसँ वैचारिक सहयोग नहि लऽ संगी सभसँ नेने छेलौं, मुदा परिवार-परिवारमे भिन्नता सेहो अछिए। ओना, परिवेशक हिसाबसँ लोक अपन अँटावेश करिते छैथ मुदा रमानन्द मास्टर साहैबक विचारमे सेहो मोड़ एलैन अछि जइसँ पत्नीक विचार लेब बेसी नीक बुझि पड़ि रहल छैन।

बेरुका समय, चाह पीब पान खा मास्टर साहैब दरबज्जापर एकाग्र भऽ अपन जीवन सुतियाबए लगला। बेटाक बिआह मनमे

छेलैन तँए पहिल मन ओम्हरे दौड़ गेलैन। पत्नीकेँ शोर पाड़ैत बजला- “कने एम्हर आउ?”

लगमे फुलटुसी आबि बजली- “की कहलौं?”

रमानन्द-

“ठाढ़े-ठाढ़सँ काज नहि चलत। बैसू, सुधीरक बिआह करब जरूरी अछि। बुझले अछि जे अपन नोकरी आब तीनियेँ बर्खक अछि। बेटाक बिआह हुअ कि बेटीक, साल भरि तक बीधो-बेवहारमे लगबे करैए। खाएर जे लगैए, मुदा एते तँ अपना ऊपर कर्ज अछिए किने जे जहिना माता-पिताक सेवाक कर्ज अन्तिम क्रिया माने मृत्यु धरिक होइए तहिना बेटो-बेटीक कर्ज बिआह धरिक तँ हेबे करैए।”

रमानन्द मास्टर साहैबक सभ बातपर फुलटुसी गौर केलैन कि नहि केलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा बजली एतबे-

“हँ, से तँ हेबे करैए।”

पत्नीक मुनल-बान्हल बात सुनि रमानन्द मास्टर साहैब विचारलैन जे ई तँ किछु ने भेल। मात्र अपन विचारमे सोंगर लगाएब भेल। से नहि तँ अपने प्रश्नकर्त्ता बनि जाइ आ हुनकेसँ जवाब ली। बजला-

“सुधीर बेटा छी, ओएह आब ऐगला संचालक परिवारक हएत, पुतोहु घरमे औती। जहिना जेठका बेटा परिवारक संग परदेश चलि गेल तहिना जँ सुधीरो करत, तखन अपना दुनू परानीकेँ देखनिहार के हएत?”

अखन तक फुलटुसीक मनमे एहेन विचार उठले ने छेलैन। उठबो केना करितैन..! गाम-समाज तँ ओहन अछिए जइमे किछु गोरे परिवारक संग बाहर रहै छैथ आ किछु गोरे गामेमे रहै छैथ, तँए एहेन विचारपर सभक नजैर थोड़े पड़ैए। तँए, फुलटुसीक नजैरपर

सेहो नहि पड़ल छेलैन। तैसंग दोसरो कारण मनमे नुकाएल छेलैन। ओ ई रहैन जे जहिना अखन तक जीवन चलैत रहल तहिना सभ दिन चलैत रहत। अपन आदि-अन्त मनमे उठबे ने कएल छेलैन। कनियोँ जँ फुलटुसी अपन जीवनकेँ आँकि सोच-विचार केने रहितैथ तखन ने किछु विचार मनमे झलैकतैन, से तँ छेलैन नहि। आशा हारि बजली- "हम किछु भेलौं तँ स्त्रीगणे ने भेलौं, मुदा अहाँ तँ पुरुख-पात छी, अहाँ जे कहबै सएह ने हमहूँ करबै।"

पत्नीक बात सुनि मास्टर साहैबक मनमे दुनू तरहक विचार उठलैन। जहिना अपन पुरुखक वर्चस्व बुझि मनमे खुशी भेलैन तहिना अपन जीवन संगीक अभाव सेहो मनमे खटकलैन। जइसँ मन दुखसँ दुखी सेहो भेबे केलैन। मुदा अखन धरिक जे रमानन्द मास्टर साहैबक जीवनानुभव छेलैन तइ अनुकूल पत्नीक विचार बुझि मन मारि लेला। तँए मनमे ई नहि उठलैन जे हमरा काजकेँ ओ आँगुर देखौती...। रमानन्द बजला- "काल्हि हम चलि जाएब।"

जहिना कोनो कार्यालयमे भेल समारोहक दोसर दिन माने परात भनेक काज, वा जहिना कोनो परिवारमे यज्ञ-जापक दोसर दिन माने परात भनेक स्थिति रहैए तहिना रमानन्द मास्टर साहैबक विद्यालयक छैन। अमैया डेढ़ मासक समय, आमक गाछीक मचानक पुबरिया हवाक आनन्द तेना रसा कऽ शिक्षको आ छात्रोकेँ मोहिया नेने छेलैन जे तेरह शिक्षकमे तीन, आ तीन साए विद्यार्थीमे तेरह गोरे पहुँचल छला। ओना, एक बेर रमानन्द मास्टर साहैबक मनमे उठबो कएल छेलैन जे जँ कहीं विद्यार्थी आबि गेल आ शिक्षकक उपस्थिति नहि देखत तखन पीहकारी दैत सड़क पकैड़ घरपर जेबे करत। ईहो तँ सम्भव अछिए ने जे जँ कहीं ऊपरका पदाधिकारी कोनो जाँच-परताल करैले आबि जाइथ तखन जँ ऐना नँगरकटक संग अपनो नाँगैर कटाएब से कहाँ धरि उचित अछि। जखन से मानब तखन

छाती तानि हनुमान जकाँ अपन नाँगैरिक आसन बना रावणक आगू छाती खोलि राम केना देखा सकै छी।

तीनू शिक्षक मिलि तेरहो विद्यार्थीकेँ कहलखिन-

“बौआ, पढ़ाइ चलै-जोकर विद्यार्थीक उपस्थिति नइ छह। समयो उनैह गेल। आब कियो ऐबो ने करतह, तँए तोहू सभ जाइ जाह।”

ओना, आजुक परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे शिक्षक सभकेँ सभसँ बेसी समयक अभाव भइये गेलैन अछि। मुदा तीनू शिक्षककेँ डेढ़ मासक जे एक-दोसराक बीच बिछोह भेल छेलैन ओ बिछड़ानुभव जे रहैन ओ गप-सप्प करैक जिज्ञासा मनमे जगाइये देने छेलैन। रमानन्द मास्टर साहैबकेँ मनमे टटका विचार रहबे करैन, अपन बेटाक बिआहक गप चालैत बजला-

“मास्सैब, छोटका बेटाक बिआह करैक अछि, से नजैरपर देलौं हेँ, मनमे रखै जाएब।”

बुझले बात अछि जे जहिना शिक्षालय तहिना कार्यालय सौराठे सभा जकाँ कथा-कुटुमैतीक जगह छीहे। रमानन्द बाबू साहित्य आ व्याकरणक शिक्षक, मनोज बाबू फिजिक्स, केमेस्ट्रीक शिक्षक आ गोविन्द बाबू मनोविज्ञानसँ ऑनर्स केने छला तँए ई.पी.एच.क संग अंग्रेजियो शिक्षक छैथ। ओना, अपन विषयानुकूल जीवनसँ हटि सामाजिक जीवन सेहो बनौनहि छैथ। गाम-घरक हाइ स्कूल शहरक हाइ स्कूलसँ भिन्न रूपमे अछिए। अपन परिवारकेँ सोझमे राखि रमानन्द बाबू बाजल छला। अखुनका जे वैवाहिक प्रक्रियाक बेवहार अछि तेकरा धियानमे रखैत मनोज बाबू बजला-

“सुधीरक तँ परीक्षा लगिचाएले हएत?”

रमानन्द बाबू बजला- “तँए ने चर्चा केलौं हेन। शादी-बिआह

कि केकरो जेबीमे अछि आकि छह मास साल भरि भाँजपर चढ़बैमे लगिते अछि।”

गोविन्द बाबू बजला- “लेन-देन केना की?”

सामान्य परिवेशमे जहिना चलैन अछि जे आदर्श विवाह[4] सभसँ उत्तम होइए, तँए के एहेन अछि जे अपन उत्तम विचार नहि बाजत। मुदा समाजक भीतर जे समाज बनि कुठारघात कऽ रहल अछि ईहो तँ विचारणीय अछिए। मुदा से सभ विचार रमानन्द बाबूक मनसँ हेरा गेलैन आ आबि गेलैन जे अपन पारिवारिक जीवनानुगतिक परिवार जकाँ केना परिवार आगूओ चलैत रहए। ओना, धरतीपर जेते मनुक्ख अछि ओते तँ ओकर जीवनो छइहे। मुदा मनुक्खक बीच जे मनुक्खता अछि ओ तँ मनुक्खपनेसँ ने निमहत। बजैकालमे सभ बजिते छी जे ईश्वरक अंश जीव छी, मुदा मनसँ ई किए हटि जाइए जे माता-पिताक अंश बेटा-बेटी छी तँए यएह अंश वंशक निर्माण केलक आ वंशगत परिवार बनल।

गोविन्द बाबूक मुँहक खसल ‘लेन-देन’ सुनि रमानन्द बाबूक मनमे कने रीस उठलैन जइसँ मन रिसिया गेलैन, ओना रसिआइयो सकैत रहैन मुदा से भेलैन नहि। हेबो केना करितैन? अपन जिनगीक आदि-अन्त ने देखि रहल छला। अखन सिरपर सवार बेटाक बिआह छैन। केतबो रमानन्द बाबू मनकेँ बुझौलैन जे अपन काजपर नजैर राखि, गोविन्द बाबूसँ विचार-विमर्श करी। मुदा अपन अलंकारिक भाषा विचारकेँ समेट लेलकैन। बजला-

“लेन-देन बस ओतबे, जइसँ परिवार चलइ।”

अपन भाषा-संस्कृत आ साहित्योक जानकार जहिना रमानन्द

---

[4] बिनु लेन-देनक बिआह

बाबू, तहिना अंग्रेजी भाषा-साहित्यक जानकार गोविन्द बाबू, तँए मनमे कनी बेसी ऊर्जा रहबे करैन। बजला-

"की कन्यागत अपन घर-घराड़ी लिखि कहत जे आब चैनसँ जिनगी बिताउ?"

रमानन्द बाबू बजला-

"अपनौं बेटाक विवाह तँ करबे केलौं, केहेन आदर्श छल से गाममे केतौ छीपल अछि।"

दुनू गोरेक बाता-बाती सुनि, दुनू हाथ उठा थोम-थाम करैत मनोजबाबू बजला-

"मास्सैब, अहाँ दुनू गोरे अनेरे लखराज-ब्रह्मोत्तरक विवाद करै छी। जरूरत अछि आजुक परिवेशमे जीवन शैली जेहेन हएत तही अनुकूल ने परिवारक गठन करब।"

ओना, मनोजबाबूक विचार रमानन्द मास्टर साहैबकेँ नीक लगलैन। मुदा अपन अभ्यंतर ई कहिते रहैन जे जहिना मनोजबाबू दुनियाँकेँ भौतिक दृष्टिये देखनिहार छैथ तहिना गोविन्द बाबू अंग्रेजिया विचारक–अंग्रेजी साहित्य–छैथ। प्रश्न अछि अपन मिथिलांचलक, जेकर सीमा एक निश्चित भू-भागसँ आगू बढ़ि दुनियाँमे पसैर गेल अछि। जइसँ अनेकानेक जीवन-शैली भइये गेल अछि। मनोज बाबूक विचारमे सह दैत रमानन्द बाबू बजला-

"मनोज बाबू, उत्तम विचार अछि। मुदा समाजक जे रूप बनल जा रहल अछि, तइठाम..?"

भाय, बाजबो तँ एहेन गुण छीहे जे प्रश्नक उत्तर बुझी वा नइ बुझी, जवाब देबे करब। जे जेते कम बुझनिहार ओ ओते नमहर वक्ता आ जे जेतेक बेसी बुझनिहार से तेतेक गोंग। रमानन्द बाबूक सह पेबते मनोज बाबू फुदैक उठला- "मास्सैब, आजुक समाजमे

मरद-औरतक बीच एक दिस होड़ो अछि, आगू बढ़ैक होड़, आ दोसर दिस ईहो होड़ लगले अछि जे दिनानुदिन मनुक्खक जीवन संकटग्रस्त भेल जा रहल अछि।”

ओना, रमानन्द बाबूक ऊपरका मन मनोज बाबूक विचारकेँ आदर केलकैन मुदा भीतुरका तँ टँगाएल छेलैन अपन तरेगन देखैपर। मनमे अपन शेष जिनगी नाचि रहल छेलैन जे जहिना जन्मौटी बच्चाक सेवा माता-पिताक लेल धरम-काज छी तहिना ने माता-पिताक सेवा सेहो बेटा-बेटीक धर्म-कर्म भेल। अखन तक जे बेटा अछि माने सुधीर, ओकरो जीवनमे मोड़ अबैक समय भऽ गेल आ अपनो जीवनक कर्मक संग जीवन-धर्मोमे माने आयुक अनुकूल परिवर्तनमे, मोड़ एबे करत। गोविन्द बाबूकेँ सुसकारी दैत रमानन्द बाबू बजला-

“गोविन्द भाय, अहाँक की विचार अछि?”

गोविन्द बाबूक मनमे विचारक पैछला जलन नीक जकाँ मेटाएल नहि छेलैन तँए ओ घाव मनमे रहबे करैन, झिझैक कऽ बजला-

“बेटा अहाँक आ घटकैती करी हम। अपन विचारो आ काजो छी, जे मन हुअए से करब।”

ओना, गप-सप्प करैत-करैत बेर उनैह गेल। माने समय बीत गेल मुदा रमानन्द बाबूक पेटमे जे बात छैन ओ अखनो पेटेमे नाचि रहल छैन। ने निकालैक अवसर भेटलैन आ ने निकालै-जोकर जगह देखलैन तँए पेटेमे रखने रहि गेला।

गाम (घर) सँ पाँच किलोमीटरक दूरीपर हाइ स्कूल, जइ स्कूलमे रमानन्द मास्टर साहैब कार्यरत छैथ। शुरूमे पएरे विद्यालय जाइ-अबै छला, पछाइत साइकिल लेलैन। जखन पएरे जाइ छला

तखन दस बजे स्कूलक समय पकड़ैले साढ़े आठे बजे घरपर सँ विदा होइ छला। तइसँ पहिने पाँच मिनट आरामसँ भोजन करैत नहाइत, चाह-पान करैत भिनसरेसँ अपना पाछू लगि जाइ छला, तखन अपन काजक–ड्यूटीक–पूर्ति होइ छेलैन जइसँ परदेशिया जीवन अपनाकेँ बुझिते छैथ तँए पत्नीकेँ कहने रहथिन।

विद्यालयसँ वापसी कालमे रमानन्द बाबूक मनमे फेर अपने बेटाक बिआह उपकलैन। उपकबो केना ने करितैन? जहिना कियो मृत्युक भयसँ इमानदारीक चरित्र बनबैक परियास करै छैथ तहिना जँ क्षणमे क्षणाक होइबला प्राण तत्त्वकेँ सेहो बुझि जाए तखन ने अपन क्षण-क्षण, पल-पलक समयक महत्त बुझि उपयोगी बनौत। खाएर जेकरा जे मन हेतै से अपन बुझत। तइसँ रमानन्द मास्सैबकेँ कोन मतलब छैन। हुनका तँ एतबे खगता छैन किने जे जहिना जन्म भेल बच्चाक तकतियान माता-पिता वा परिवार नहि करता तँ ओ बच्चा[5] केते काल धरतीपर जीब सकैए, तहिना उमर-पेब–वृद्धावस्थामे, जे हर मनुक्खक एक अवस्था छी– दोसराक खगता भइये जाइए, तँए परिवारो आ बेकतियोक खगता मनुक्खकेँ भइये जाइए। ओना, कहब जे एकरंगा ऋषि-मुनि ई बात नहि बुझै छला? हँ, जरूर बुझै छला आ बुझैत कहै छला, 'मरब विदेशमे नीक, जैठाम अपन कियो ने रहए। जानवर सभ देहक मौस खाएत तँ ओकरो पेट भरतै, जइसँ ओकरो मन तृप्ति हेबे करत।' मुदा तेतबे नइ बुझै छला, ईहो बुझै छला जे 'अपन जीवन अपन हाथ, अपन जहान अपन साथ।'

विद्यालयसँ घरपर अबैकाल रस्तामे रमानन्द बाबूक मनमे ईहो खौंझ उठैत रहैन जे गाम-गाम विद्यालय अछि आ समाजक लोक

---

[5] नवजात शिशु

ढलैक कऽ नीचमुँह बनल अछि। तइ दिस नजैरिये ने जा रहल छैन आ बच्चा सभकेँ आदर्शक रस्ता धड़बै छैथ। फेर अपने मनमे रमानन्द बाबूकेँ भेलैन जे अनेरे 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता'क भाँजमे पड़ि कऽ की करब। मुदा सुधीरक बिआह तँ अपन परिवारक समस्या छी, तँए नीक हएत जे अपने सभ परिवार माने बेटो आ पत्नियोँक बीच बैस अपना मनमे जे अछि ओकरा पर्दाक भीतर नहि रखि वेनग्न रूपमे किए ने सभकेँ कहि दिऐ। जइसँ ओकरो सबहक विचार देखि-सुनि लेब...। रमानन्द बाबूक मन मानि गेलैन जे यएह नीक हएत।

रमानन्द बाबूक मनमे बेटा-बिआहक विचारक उद्वेग रहबे करैन। घरपर अबिते पत्नियोँ आ बेटोकेँ कहलखिन, 'रौतुका भोजनसँ पहिने आ सौंझुका जलखै-चाह-पानक पछाइत बीचमे जे एक घन्टाक समय अछि, तइमे परिवारक एकटा यज्ञक विचार अछि। तँए सभ एकठाम बैस विचार करैक अछि।'

ओना, 'यज्ञ' सुनि फुलटुसीकेँ भेलैन जे भरिसक एकादशी यज्ञक विचार करता, मुदा सुधीरक विचार मनमे ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे एक शब्दक अनेको अरथो अछि आ अनेक जगहो तँ अछिए। तही बीचमे ने अनर्थ करैक जगह सेहो अछिए...।

जहिना रमानन्द बाबू बजला तहिना दुनू गोरे- फुलटुसियो आ सुधीरो अपन-अपन विचारक संग अपन नित्य क्रिया-कर्ममे लगि गेल। रमानन्द बाबू सेहो टहलैले बाध दिस निकलैक विचार केलैन। जलखै नहि केलैन, मात्र एक लोटा पानि पीब चाह-पान केलैन।

तेसरि साँझ भऽ गेल। रमानन्द मास्टर साहैबकेँ गाम तँ अन्हारमे डुमले बुझि पड़िये रहल छेलैन जे परिवारो सभकेँ एकाएकी डुमैत देखि रहल छैथ। जहिना रमानन्द बाबू अपन निसचित

समयपर दरबज्जापर पहुँच विचार करए बैसला तहिना फुलटुसियो आ सुधीरो आबि बैसल।

ओना विचार करैक समय जे रमानन्द बाबू निर्धारित केने छला तइ अनुकूल परिवारजनकेँ देखि मनमे खुशीक प्रस्फुटन सेहो भइये गेल रहैन जइसँ मन बिहुँसल रहबे करैन। पत्नी दिस मुँह उठा कऽ बजला- “सुधीरक बिआह करब, परिवारक अगुआएल काज बनि रहल अछि। किए तँ पढ़ाइक अन्तिम दौड़मे सुधीर पहुँच गेल अछि। बिआह-दानक काज छी, छह मास साल भरि देखै-सुनैमे लगबे करत।”

जहिना रमानन्द बाबूक मुहसँ सुधीरक बिआहक विचार खसलैन कि ठनका जकाँ दुनू गोरे–सुधीरो आ फुलटुसियो–क मनमे खसलैन। जइसँ अपन-अपन चोटसँ दुनू गोरे मुँह बन्न केनहि रहल। सुधीरक मनमे जे ठनका जकाँ खसल ओ छल- अखन तक समाजमे माता-पिताक धर्म-कर्ममे बेटा-बेटीक बिआहक चलैन रहल अछि, तैठाम हमर बाजब नीक हएत। तहिना दोसर दिस फुलटुसीक मनमे अपन चारित्रिक सोभावक अनुकूल विचार, चारित्रिक सोभावक लक्षण जहिना पुरुखोमे अछि जे काजसँ देह छीपब, उठलैन। उठलैन ई जे तीनटा बेटा-बेटीक बिआह अपना विचारे केलैन आ चारिममे झाँगि बान्हए चाहै छैथ तँए चुपे रहली।

सुनसान देखि रमानन्द बाबू पत्नी दिस मुँह उठा देखैत बजला- “देह चोरौने काज नहि चलत। दुनू गोरे अपन-अपन बात सुनि लिअ। साठिक लकधक दुनू परानीक उमेर भेल, तीन साल बाद हमहूँ सेवा-निवृत्त हएब। अखन काजक धुनिमे लागल रहै छी तँए फुहराम छी, जखन काज छुटत तखन निकम्मा हेबे करब। तँए अखने विचारि लिअ जे बेटा-पुतोहुक केहेन परिवार गढ़ब जे मनुक्ख

जकाँ अपना घरमे मरबो करब आ अपन गाछी-कलममे साराक ऊपर रोपल तुलसीक छाहैर तर बासो करब।”

ओना सुधीरकेँ कहैले रमानन्द बाबूक मनक बात पेटेमे रहैन कि सुधीरकेँ हँसी आबि गेल जइसँ जोड़सँ हँसा गेलइ। सुधीरक हँसी देखि रमानन्द बाबू गम्भीर भऽ गेला। गम्भीरता अबिते, पहिलुका विचार तर पड़ि गेलैन आ दोसर विचार मनक ऊपर आबि धमकलैन। धमकलैन ई जे किए ने सुधीरकेँ अखने चेता दिऐ...। बजला-

“बौआ सुधीर, बेटा ओ बेटा भेल जे अपन स्वतंत्र जिनगी–माने स्वाबलंमी जीवन–बना अपन स्वतंत्र विचार करैक शक्तिक संग जीवन गुदस कऽ लिअए।”

बी.ए. ऑनर्सक विद्यार्थी सुधीर तँए विचारक दौड़मे बुझि गेल, मुदा बेवहारिक दौड़मे अपनाकेँ ओहने बुझलक जेहने रणवास आ वनवासमे अन्तर अछि। ने सुधीर किछु बाजि रहल छल आ ने फुलटुसी किछु बाजि रहल छेली। रमानन्द बाबू सुधीर दिस मुँह घुमा बजला-

“बौआ, बाबा-दादीकेँ तँ तोहूँ ने देखने छेलहुन। हुनकर बुढ़ाड़ी केना बितलैन से तँ तोहू ने देखलहुन। साले-साल अखनो सारा लग जा बैशाख मासमे पनिसल्ला टाँगि तुलसी गाछमे जलढार करै छी। ओना, नीक जकाँ कहितिअ, जे आजुक परिवेशमे परिवारक गढ़ैन केहेन होइ मुदा से अखन नहि। भानसोक समय भऽ गेल तँए माइयोक मन अगुताएले ने हेतैन।”



शब्द संख्या : 3734, तिथि : 30 अक्टुबर 2020

जीवनमे जान आएल

जीवनक साठिम बर्खक पछाइत रघुनन्दन काकाकेँ ऐ पाँतीक अर्थक सुआद भेटलैन-

"लीख-लीख गाड़ी चलए, लीखे चलै कपूत
लीख छोड़ि तीन चलए, शायर, सिंह, सपूत।"

कौलेज छोड़ला पछाइत, जाबे धरि ऊपरका पाँतीक बेवहार रघुनन्दन काका दोहा-शायरीक रूपमे ओहिना करै छला जेना सामान्य लोक करै छैथ, तँए ताबेक धुनि किछु आरो छेलैन आ आजुक धुनि किछु आर भऽ गेलैन अछि। आठ बजे सौंझुका समय। बिजली लगने दरबज्जापर मरकड़ीसँ ज्योर्तिमय छेलैन्हे। अपन दैनिक जीवनक हिसाब देखि रघुनन्दन कक्काक मन बिहैस कऽ प्रस्फुटित भेलैन। अनायास मुहसँ निकललैन-

"ह!, ह.! जीवनमे जान आएल..!"

'जीवनमे जान आएल' मुहसँ खसिते रघुनन्दन काका पाछू उनैट माने अपन बीतल जिनगी दिस तकलैन कि आजुक आ काल्हुक जोड़पर नजैर पहुँचलैन। माने बीतल समय आ चढ़ल समयक जोड़क जोड़ सुढ़ियबए लगला। जेना-जेना पैछला जोड़ सुढ़ियबैत छला तेना-तेना आरो पछुलका जोड़ सभ सिनेमाक रील जकाँ नचैत-नचैत आबए लगलैन। मुदा तेकरा समेट जखन आजुक जोड़पर अनलैन कि रघुनन्दन कक्काक मुहसँ खसलैन-

"यएह छी संकल्प..!"

किये दोसर लगमे रहितैन तखन ने किछु पुछबो करितैन, से तँ किये लगमे छेलैन नहि। आजुक जोड़सँ जखन मन आगू बढ़लैन कि विचारनाथ बाबा मोन पड़लैन। विचारनाथ बाबा मोन पड़िते जहिना समाधिपर समाधिभोक्ताकेँ तुलल अंजलिसँ जलढार भेटने मन तिरपित होइए तहिना रघुनन्दन काकाकेँ सेहो भेलैन। तिरपित मन होइते बमछी जगलैन। बमछी जगिते मुहसँ निकललैन-

"जीवन की? जीवन यएह ने जे हँसी-खुशीसँ समयक संग चलैत रही..!"

ओना, मुहसँ निकैल गेलैन मुदा जखन पाछू उनैट तकला तखन बुझि पड़लैन जे अखन तक तँ विपरीते जिनगी जीबैत एलौं, तखन हँसी-खुशी जीवनमे प्राप्त केना भेल? मुदा दोसर किये रहैत तखन ने कोनो विचारो दैतैन, से तँ किये छल नहि।

बच्चेसँ रघुनन्दन कक्काक मनमे किछु करैक जिज्ञासा जगलैन। जहिना लोअर प्राइमरी स्कूलमे बच्चा सभकेँ फुलवाड़ी लगबैक लूरि भेटैए, ओही लूरिसँ किये कृषि विशेषज्ञ बनै छैथ तँ किये माली। कृषि विशेषज्ञ आ मालीमे ई भेद अछि जे एक गोरे कर्ता भेला दोसर भोक्ता। एक गोरे फुलवाड़ी लगौनिहार भेला दोसर फूलकेँ तोड़ि चुआ लगा गमक बँटनिहार भेला...।

कौलेजमे जखन रघुनन्दन काका बी.ए.मे पढ़ैत रहैथ तखन इतिहासो आ समाजशास्त्रोकेँ नीक जकाँ माने मन लगाकऽ पढ़लैन। गाममे माने विक्रमपुरमे विचारनाथ बाबाक गिनती जानकार लोकमे छेलैन। गाममे रघुनन्दन काका सन लोक, माने विक्रमपुरमे कौलेजमे पढ़ैबला लोक पतड़ाएले सन छल। मुदा विचारनाथ बाबा-दे रघुनन्दन काकाकेँ बुझल रहबे करैन। तँए जखन रघुनन्दन काका निचेन रहै छला तखन कमसँ कम एकबेर विचारनाथ बाबासँ भेँट करिते छला।

विचारनाथे बाबाक मुहसँ कहल जुग-जुगसँ सुदिखोर महाजनक वृतान्त सभ सुनल रहबे करैन जे रघुनन्दन कक्काक मनकेँ मोहि देलकैन। महाजनक क्रिया-कलाप रघुनन्दन कक्काक मनकेँ तेना घेरि लेलकैन जे बिना ओइ घेराकेँ तोड़ने अपन भविस घोर अन्हारे अन्हार बुझि पड़लैन।

कौलेज छोड़ला पछाइत जखन रघुनन्दन काका अपन समाजक अंकन केलैन तँ बुझि पड़लैन जे सुदिखोरी सेहो एकटा नमहर अस्त्र छीहे जइसँ बहुसंख्य लोक दिन-राति मृत्युक मुँहक बाट पकैड़ रहल अछि। अखन गमैया सुदिखोरीक चर्च भऽ रहल अछि, तँए बैंकक लोनक सुदिक चर्च नहि बुझब। जहिना मीठहा बीख धियो-पुता आँगुरसँ उठा-उठा जीहपर चाटि-चाटि हँसैत रहैए तेहने सन भविसक समाजोक विचारमे अछि। संजोग बनल, रघुनन्दन काकाकेँ चारि-पाँचटा संगी–कौलेजक संगी–क भाँज अपने अड़ोस-पड़ोस–माने, चौबगली गामक अड़ोस-पड़ोस–मे लगि गेलैन। चारू-पाँचो संगीसँ रघुनन्दन काका वैचारिक सम्बन्ध स्थापित केलैन। एक विषयक विद्यार्थी जहिना सभ तहिना एक-इलाकाक रहनिहारो। जइसँ एक तरहक सामाजिक परिस्थिति सेहो बनले अछि। सामाजिक परिस्थिति सम बनैक जहिना अनेको आधार अछि तहिना विषम बनैक सेहो अछिए। माने भेल जे जहिना रौदी वा दाही इलाका-इलाकामे होइए, ओइमे वएह टा इलाका ने प्रभावित होइए, मुदा दोसर इलाकाक तँ परिस्थिति दोसर रंग रहबे करत। तहिना महाजनीक माने सूदी कारोबार करैबलाक अछिए। जे अन्नो आ रुपैयोक सुदि-सवाइ करबो करै छैथ आ करितो तँ अबिये रहल छैथ।

पाँचो बेकती माने रघुनन्दन काका, श्याम, तारकेश्वर, महावीर आ गोपाल मिलि एकटा विचार मंच बनौलैन। भाय, जेहने लोक रहैए तेहने ने गपो बजैए आ काजो तँ करिते अछि। आब अहाँ कहबै जे

वैज्ञानिककेँ वा इंजीनियर वा डॉक्टर साहैबकेँ शास्त्र-पुराणक बोध नहि छैन, अध्यात्म की छिऐ से ओ नहि बुझै छैथ, तइ कहैसँ पहिने ईहो ने देखए पड़त जे हुनकर जीवन केहेन छैन। अध्यात्म सिर्फ विचारे नहि, आचार सेहो छी, तँए हुनकर आचार जेते चढ़ल-बढ़ल रहतैन ओते ओ पैघ आध्यात्मिक भेला। मुदा से अनका कहने थोड़े होइ छै ओ तँ अपन मन जखन तृप्तिसँ तिरपित होइ छै तखन ने अपने आत्माराम ओइपर मोहर लगबैए। मोहर लगला पछातिये ने शील दिस बढ़ैए आ सील-मोहरक संग अपन प्रमाणित करैए। सुदिखोरक चाँगुरमे ओझड़ेबाक अनेको कारणो अछिए। तेकर अनेको कारणमे मुख्य अछि, मनुक्खक अनिश्चित जीवन। किसान प्रधान इलाका रहितो किसान सोल्होअना मौनसुन आधारित जीवन बनाइये नेने छैथ। जइसँ अनिश्चितता बनलो अछि आ आगूओ बनले रहत।

पाँचो बेकती मिलि अपन-अपन गामक सूची बनौलैन जे केते महाजन माने सुदि-सवाइ लगौनहार छैथ वा आन-आन गामक पैघ-पैघ महाजन करोबारी गाम छैथ। पाँच साए घरक गाम विक्रमपुर अछि। रघुनन्दन काका जखन अपन गामक हिसाब लगौलैन तँ देखि पड़लैन जे पाँच साए परिवारमे चारि साए परिवार कर्ज लेनिहार अछि। जेकर फलाफल गाममे सभ देखिये रहल छी जे गामक जमीन अनगौंआँ हाथे बिक रहल अछि। लोक निच्चाँ मुहेँ ससैर-ससैर खसि रहल अछि। त्राहिमाम करैत भगवान-भगवान कऽ रहल अछि, बचौनिहार कियो ने। मुदा प्रश्नो–माने समस्यो–तँ छोट-छीन नहियेँ छी। देशक समस्या छी। हजारो लड़ाइ-झगड़ा जहाँ-तहाँ पसरले अछि। कानूनो बनियेँ गेल अछि।

पाँचो गोरे पाँच गामक छैथ। जहिना रघुनन्दन कक्काक गाम विक्रमपुर छिऐन तहिना श्यामक पराक्रमपुर, तारकेश्वरक

अकरमपुर, महावीरक मकड़मपुर आ गोपालक तिक्रमपुर छिऐन। खाएर.., गामक नामक कोन ठेकान अछि। जहिना लोकक नामक ठेकान नहि अछि तहिना ने गामोक अछि। गामक नाम किछु हुअ मुदा गामेक लोक ने अपन गामक नामक मुँह-कान बनौता। जेहने काज तेहने ने मुहोँ। आ जेहने गप तेहने ने कानो आकि कतौसँ कियो माँगि आनत।

पाँचो गोरेक बीच वैचारिक समता ऐठाम आबि गेलैन जैठाम पाँचो बेकती–रघुनन्दन काका, श्याम, तारकेश्वर, महावीर आ गोपाल–क मन मानि गेलैन जे सुदिखोरी समाजकेँ निच्चाँ खसबैक पैघ हथियार बनि ठाढ़ अछि।

जहिना पाँचोक बीच वैचारिक समता एलैन तहिना बेवहारिक विषमता तँ पाँचोक बीच छेलैन्हे। ऐठाम एकटा बात आरो अछि जे हर मुद्दाकेँ अपन-अपन आधार होइए, तँए ऐ बारिकीपर नजैर देब अछिए। रघुनन्दन कक्काक ओहन परिवार जे पीढ़ी-दर-पीढ़ी माने तीन पीढ़ीसँ एहेन रहलैन जे सुदिक लेन-देनक सीमासँ बाहर रहला। अपन बेर-बेगरता पैंच-पालटसँ चलैत आबि रहल छेलैन। जखन कि तारकेश्वरक पिता नगदीक[6] पैघ कारोबारी छैथ। तहिना महावीरक पिता नगदक तँ नहि मुदा अन्नक पैघ करोबारी छथिए। गोपालक ओहन परिवार रहल जइमे लाख-करोड़क नगदी कारोबार तँ नहि मुदा हजारक बजार तँ छैन्हे। समाजक बीच विशाल रोग रहितो पाँचो रोगमुक्त छेलाहे। तँए कहब जे समाज नहि छल सेहो बात नहियेँ अछि। सत्तैर-अस्सी प्रतिशत लोकक बीच तँ रोग पसरले अछि।

---

[6] रुपैआक

संजोग एकटा आरो बनल। ओ ई बनल जे तारकेश्वरक रुपैआक सुदि 'दू रुपैआ महिना' छेलैन जखन कि विक्रमपुरमे 'पाँच रुपैये सैंकड़ा' सुदि चलै छल। ओना, किछु महाजन एहनो छथिए जे बैंके जकाँ कटबी सुदि, माने जहिना बैंकक लोनक सुदि छह मासक पछाइत मूड़मे मिलि सुदि पैदा करए लगैए, तहिना कटबी सुदिक सेहो महाजन सभ छथिए। सुदिक अन्तर तारकेश्वरक मनकेँ सेहो मोहि लेलकैन। ओना, सुदिक रुपैआक माने अन्नक सवाइ नहियेँ भेल, तँए महावीरोकेँ अपना ऊपर कोनो आँच अबैत नहि देखि मन मोहित भेबे कएल। एक तँ कौलेजमे पढ़ल समाजशास्त्र आ इतिहासक बिसवास मनमे छेलैन तैपर अपन चढ़न्त उमेरक उत्साह सेहो। जइसँ समाजक बीच किछु करैक उत्साह रहबे करइ। पाँचोक बीच सहमत बनल जे रघुनन्दनक अगुआइमे विक्रमपुरमे ऐ मुद्दाकेँ उठौल जाए।

पाँचोक बाल-मन, तँए ई नहि गौर कऽ सकला जे जे मुद्दा अछि ओकर मुख्य मुद्दालह तँ रघुनन्दन छिया नहि। आनक मुद्दा छी। आनो-आन तँ ओहने छैथ जे लेबाल एककेँ तीन किए लिअए मुदा ओकरा ले कोनो प्रतवाए–माने पाप–नहि, मुदा देबाल जँ सुप्पतो भरि दिअए तैयो रहबे करत, तँए ओकरा पापक घैल कपारपर खसबे करत। ओना, बाल मन रहने पाँचो बेकती ईहो ने विचारि सकला जे महाजनी समाजक कोढ़ तँ छी, मुदा कोनो जरूरतक पूर्तिक साधन नइ छी, सेहो बात नहियेँ अछि। लोक खगल अछिए। सैंकड़ो रंगक बेर-बेगरता होइते छै, जे अपना नहि रहने महाजनीक भीड़ जाइये पड़ैए। तैसंग ईहो ने बुझि सकला जे महाजनीसँ दूर तखने रहि सकै छी जखन अपन बेर-बेगरता सम्हारैक शक्ति अपनामे भऽ जाए।

सूर्यास्तक समय, पाँचो गोरे माने रधुनन्दन काका, श्याम, तारकेश्वर, महावीर आ गोपाल एकठाम बैस विचार केलैन जे पाँचो

गाममे पाँच रंगक सुदियो आ सवाइयोक बेवहार अछिए, से जहिना रुपैआक सुदिक तहिना अन्नक सवाइक। केतौ ‘सवाइ’ तँ केतौ ‘डेढ़िया’ तँ केतौ ‘एगारही’ चलैए। तँए पहिने महाजनी प्रथामे एकरूपता आबौ तहूसँ किछु लेबालकेँ लाभ हेबे करत। माने जैठाम दू रुपैआसँ पाँच रुपैआ सुदिक चलैन अछि, तैठाम पहिने पाँचसँ उतैर दूपर आबउ। तहिना जैठाम एगारही अन्नक चलैन अछि तैठाम डेढ़ियापर आबउ, पछाइत सवाइपर औत आ तेकर पछाइत ले ते बैंकक कर्जक सुदि सोझामे अछिए, ओइसँ रस्ता निकलह। जइ दर बैंकमे सुदि दइए, माने लइए से नहि, तहूठाम जँ गामक सुदि अबैए तैयो लाभ भेबे कएल।

पाँचोक बीच विचारकेँ बेवहारिक धरतीपर उतारैले विक्रमपुरक चुनाव भेल। रघुनन्दन काका विक्रमपुरक छेलाहे। उत्साहित युवक रहबे करैथ, पीठपोहू चारूकेँ देखि बजला- “आगू बढ़ैले तैयार छी।”

महाभारतक लड़ाइमे जहिना कृष्णकेँ शंख बजिते कौरव-पाण्डवक बीच लड़ाइयक सूत्रपात शुरू होइ छल तहिना विक्रमपुरक सेहो भेल। यमुनामे नाग केना नथाएत, ई तँ विचारो ने भेल अछि। हजारो बर्खक विचारो आ बेवहारोक लोक समाजमे अछिए। जहिना देखै छी जे बाध-बोनमे साहोर वा आने कोनो गाछ तर एकटा बाँस, एक बोझ खढ़ आ एक मुट्ठी साबेक जौड़सँ खोपरी–घर–बना परिवार हँसी-खुशीसँ जीवन-बसर कइये रहल अछि तैठाम दोसर दिस कुत्तो-बिलाइक रहैले तीन मंजिला संगमरमर कएल मकान नहि अछि सेहो तँ अछिए। एतबे टा रहैत तँ एक सीमाक बात भेल। जखन अहाँकेँ तीन मंजिला पक्का मकान भइये गेल तखन बाप-दादा जकाँ–खढ़क घर दुआरे–साले-साल घरहटो तँ नहि करए पड़त। तँए दोसरो-तेसरोकेँ हुअ दियौ। तहिना विचारोक दौड़मे अछिए जे कियो कहता

जे जे राजा-रजबारक खानदान टुटि गेल ओ दोहरा कऽ नहि भऽ सकैए। तँ दोसर दिस राजा-रजबारक खानदानक सैकड़ो पीढ़ीक इतिहास कहनिहार नहि छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। जे सुनलौं से तँ कानसँ सुनलौं, आब हाथक काज दिस चलू।

पुस्त-पुस्तानिसँ, भोजनक रूपमे धानक चाउर अबैत रहल अछि। जेकर उपज उतरैत-उतरैत एते निच्चाँ उतैर गेल जे कट्ठा मन सालमे एक बेर हएबकेँ एक दिस समुचित उपज मानल जाइए, तँ दोसर दिस विज्ञानक अनुसन्धान भेने ओतबे खेतमे माने पहिलुका एककट्ठा अखुनका एकरक हिसाबसँ लगभग सबा कट्ठामे, एक क्वीन्टलसँ डेढ़ क्वीन्टल माने पुरना मनक हिसाबसँ अढ़ाइसँ तीन गुणा बेसी, भेल जइसँ अमेरिकाक गहुमक खगता नहि रहत। एहेन मुख्य काजक जखन समय अबैए तखन एहनो विचार तँ समाजमे पसारले जाइए, जे ऐ धानमे सुआद नइ छै। तँ ई अंग्रेजिया धान छी, पूजा-पाठमे काज नहि औत...। समाजो तँ समाज छी, ओही मुहसँ बजै छैथ जे 'लोभ पाप छी', वएह अपने एकटंगा दऽ दऽ उचिती-विनती करबे करै छैथ जे 'हे भगवान, धन दिअ, समांग दिअ।' तइ काल अपने बिसैर जाइ छैथ जे हमहूँ लोभे पतन छी। ने तँ अपना करनीसँ प्राप्त करितौं।

हजारो रंगक विचारक टक्कर समाजमे उठल। महाजनक सहयोगसँ गामक लौह-पुरुष सभ रघुनन्दन काकाकेँ दर्जनो मुकदमामे फँसा देलकैन। एक दिस खर्चक बढ़ोत्तरी भेलैन, दोसर दिस तइसँ अर्थक बोझ माथपर पड़लैन, जहल जाएब-आएब शुरू भेलैन, तैसंग अपन खेत-पथारक उपजक उजाड़ि सेहो भेलैन आ तैसंग प्राकृतिक लीला बुझले अछि जे कोनो साल बाढ़िमे डुमा देत तँ कोनो साल रौदीमे सुखा देत। आर्थिक दृष्टिये रघुनन्दन कक्काक स्थिति बहुत डोलि गेलैन। तीस सालक पछाइत एहेन परिस्थितिसँ

उबाड़ि रघुनन्दन काकाकेँ भेलैन। तैबीच मे दुनू दिससँ बन्धनक बीच सेहो बन्हाएल रहला। माने ई जे लेन-देनक मामलामे रघुनन्दन काका बेइमान, पापी समाजक बीच बनल रहला। मुदा जेना-जेना समाजक बीच जालकेँ रघुनन्दन काका देखैत गेला तेना-तेना जालक फन्दाकेँ खोलैक लूरि सेहो सिखैत गेला, जइसँ मनक बिसवास जहिना दिनो-दिन बढ़ैत गेलैन तहिना विचारक बाट आरो मजगूत होइत गेलैन।

एक तँ रघुनन्दन कक्काक जन्म कम आँट-पेटबला किसान परिवारमे भेल छैन, तैपर हथियाक सतैहिया झटकाक झाँटसँ झँटिआइते अपन आत्मशक्तिक असल गुण देखलैन। अपन जीवनक सभ बेवस्था अपना हाथ अनैमे साठि बर्ख गुजैर गेलैन।

दू दिन रघुनन्दन काकासँ भेँट भेना भऽ गेल छल तँए मन उबियाइत रहए, जे कखन भेँट होइथ। उबियाइत-उबियाइत मन तेना उबिया गेल जे भेँट करए विदा भेलौं।

दलानक ओसारक चौकीपर बैसल रघुनन्दन काका अपन जीवन गुनि रहल छला। गुनैत-गुनैत अपन साठिम बर्खक टपानमे पहुँचला कि मुहसँ खसलैन-

“ह ह, जीवनमे जान आएल..!”

कनी फरिक्के रही, अपने-आप रघुनन्दन काका बाजल छला, मुदा कनी फरिक्कोसँ नहि सुनलौं सेहो बात नहियेँ अछि, सुनबे केलौं, बात सुनलौं। किए तँ अपन मन तँ टाँगल छल हुनकासँ भेँट करैपर। मुदा रघुनन्दन कक्काक मुँहक बात सुनिते दोसर-तेसर दिस हिया-हिया देखए लगलौं जे आरो के सभ छैथ। कियो दोसर नजैरपर नहि पड़ला। तखन अपने मनमे शंका भेल जे भरिसक हमरे देखि कऽ ने तँ काका बजला अछि। मन मानि गेल जे किए ने हमहीं पुछिऐन जे ‘जीवनमे की जान आएल?’ लगमे पहुँचते कक्काक

विचारकेँ मनेमे दाबि रखलौं। दाबि कऽ रखैक कारण भेल जे जँ जानि कऽ हमरा कहने हेता तखन जँ हम अनसूनी कऽ देबैन तखन अपने दोहरा कऽ कहबे करता। जखने दोहरा कऽ कहता तखने विचारकेँ सुतियबैत बाजब जे 'जीवनमे की जान आएल?' अपने तँ सभ बात बुझि लेब। रघुनन्दन कक्काक विचारकेँ मनेमे दबने बजलौं-

"काका, तीन दिन पहिने भेँट भेने मन उबियए लगल जे काकासँ भेँट भेना बहुत दिन भऽ गेल। शरीरसँ स्वस्थ छिऐ किने?"

अपन जिनगी प्राप्त भेने रघुनन्दन कक्काक मनमे तेतेक खुशी आबि गेल छेलैन जे फुलि-फुलि कऽ प्रफुलित छेलाहे। बजला-

"शरीरेटा सँ नहि मनोसँ स्वस्थ छी।"

रघुनन्दन कक्काक विचार अधा बुझैमे तँ बाँकी नइ रहल मुदा अधा बुझबे ने केलौं। बुझबो केना करितौं? दिन-राति सभक मुहेँ सुनै छी जे 'शरीरसँ स्वस्थ छिऐ किने' तैठाम रघुनन्दन काका पुछड़ी जोड़ि देने छैथ जे 'शरीरे टासँ नहि, मनोसँ स्वस्थ छी', अपन मन औनए लगल। जेकरा लोक बताह कहै छै सेहो अपन बतहपनी थोड़े मानैए, आकि अपनाकेँ मगन बुझैए। भलेँ ओकर काजक फल अधले किए ने होइ। मुदा ओहने-ओहने मगन मोही ने नीकक कोन बात नीकोसँ हजार गुणा नीक नहि करै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो छथिए। ओना जखन गप-सप्प करए माने कुशल-क्षेम करए दुनू गोरे एकठाम बैसल छी तखन बुझलो आ बिनु बुझलो बातकेँ बुझैक तँ समुचित जगह अछिए। बजलौं-

"काका, 'मनक स्वस्थ' की कहलिऐ?"

जेना मनक बात बुझनिहार पेब मनन-कर्ताक मनमे आनन्दक हिलोर उठैए तहिना रघुनन्दन कक्काक मनमे जुआरि उठलैन।

बजला- “बौआ, पैछला साठि बर्खक सभ कएल-धएल भेट गेल, तँए मन स्वस्थ भऽ गेल।”

रघुनन्दन कक्काक बात सुनि अपन मन मति गेल जइसँ विचार उठल जे, पैछला साठि बर्खमे नीको केने हेता, तेकर नीक फल भेटल हेतैन तँए मन खुशी छैन, मुदा अधलो तँ केनहि हेता, तेकरो फल तँ भेटबे कएल हेतैन। नीक अधला दुनू भेलैन। नीक देखि मन खुशी छैन तँ उचिते छैन मुदा अधलाक चर्च तँ नहि केलैन। ओना, अपन मन पहिलुके विचारक गीरहक गाँठ बान्हि अँटकल छल तैबीच मे दोसर-तेसर गप-सप्प उठि गेल। तँए ऐ सभ विचारपर विराम दैत बजलौं-

“काका, की कहने छेलिऐ जे जीवनमे जान आएल?”

दुखाएल मन जहिना भीतेर-भीतर मुरछित रहैए आ ओही मुरछल मनकेँ सुमंगल बनबैक पाछू लगि जाइए आ जाड़क ठिठुरल गुलाव जहिना बसन्त पेब प्रस्फुटित भऽ उठैए तहिना रघुनन्दन कक्काक मन प्रस्फुटित भेलैन। बजला-

“बौआ, कियो जीतल जिनगी अपन भोग-विलासमे लगबैए तँ कियो हारल जिनगीकेँ अपन सुकर्म-धर्मसँ जीतैए, दुनूमे अकास-पतालक अन्तर अछिए किने।”

ओना, रघुनन्दन कक्काक विचार सोल्होअना नइ बुझलौं, जे ऐठाम अकास-पतालक कोन खगता भेल जे बजला। मुदा अपने ओकरा खोंरचाल करैसँ परहेज केलौं। जहिना खिस्सकरक खिस्सा सुनैबेर सुननिहार आँखि-कान एकाग्र केने सुनैए, तहिना अपनौं केलौं। हनुमानजीक संगी सभ जे बानर-भालु छेलैन, जे दुनू कानपर हाथ रखि कोनो बात सुनै छला तहिना अपने सूहकार करैत बजलौं-

“ईहो की कोनो चोराएल विचार अछि, ओ तँ अछिए किने।”

अपने सोचि जे बाजल छेलौं आ रघुनन्दन काका की विचारि बुझलैन से तँ वएह जनता, मुदा जहिना पानिक वा दूधक वा घीवक भरल घैल ओंघरा जाइए आ ओइसँ बमैक-बमैक पानि, वा दूध वा घीव धरतीपर खसि-खसि छिड़िया जाइए तहिना रघुनन्दन कक्काक मन छिड़िया गेलैन। बजला-

“बौआ, पैछला साठि सालक बीच जहिना विद्यालयमे पढ़ल विद्या ‘सुदिखोरी’ मनमे जनमल आ ओकरा पोसि-पालि जहिना समाजक बीच संकल्पक संग डेग उठेलौं, भर्लें संग पूरनिहार संगी सभ छिड़िया-बितिया किए ने गेल, मुदा अपन पथक पथिक बनि अपन संकल्पक गीरह बान्हि चलैत रहलौं जइसँ ओइ मुक्तिक स्थानपर पहुँच गेल छी।”

एक तँ रघुनन्दन कक्काक अपन जीवनक यात्रा, मुदा अपने तँ ओहन बाट पकैड़ चलल नहि छेलौं, तँए हुनकर जीवनक वास्तविकताकेँ केना बुझि पेबितौं। मुदा लगले अपन विचार बदैल गेल। विचार ऐ दुआरे बदलल जे खिस्सा-पीहानी सुनि कियो राजा बनबो करैए आ मेटतो तँ अछिए। तँए किए ने अपने रघुनन्दन काकाकेँ एक-एक विचारकेँ प्रश्न बना पुछि-पुछि बुझि ली। ईहो तँ बुझैक एक माध्यम भेबे कएल। पुछलयैन-

“से केना मुक्त छी, काका?”

एहने दोसर विचार मनकेँ ओझरौनहि अछि जे ‘देश सेवा’ की भेल आ देश भक्ति की भेल? तँए पुछने छेलिऐन। ज्वालामुखीक भीतुरका लावा जकाँ रघुनन्दन कक्काक मनमे जेना ज्वार उठलैन तहिना बजला-

“बौआ, पैछला साठि सालक बीच, जेते दिन विद्यालयमे बीतल, से छोड़ि बाँकी समय जे बीतल से..!”

‘बीतल’ कहि रघुनन्दन कक्काक विचार रूकि गेलैन। तैबीच अपने यएह हिसाब जोड़ैत रही जे बी.ए. पास करैमे बीस बर्ख लगले हेतैन। पाँच बर्ख आरो जँ मिला दइ छी, तँ पचीस बर्ख भेल। साठिमे सँ पचीस घटने पैंतीस बर्ख रहल। तहूमे पाँच बर्ख आरो कम कऽ दइ छी, तखन बँचल तीस बर्ख।

तीस बर्खक संघर्षसँ उबैर आइ रघुनन्दन काका अनुभवपूर्ण जीवनमे पहुँच गेल छैथ। मुदा अपने तँ से छी नहि, तँए किए ने हुनके मुहसँ सुनि अपन संकल्पकेँ जगाबी। बजलौं- “से की काका?”

अनुभवपूर्ण लोक जहिना कम-सँ-कम शब्दमे बेसी-सँ-बेसी विचार रखए चाहै छैथ, तइ बीचमे अपनो मनमे ई बैसाइये लिअ पड़तैन ने जे सुननिहार केहेन पात्र छैथ। एहनो तँ पात्र होइते अछि जइमे दूध तँ सखरा नइ होइए मुदा पानि तँ होइते अछि। सखरा माने छूत, छुबाएब होइए। विचारो तँ विचार छी, पात्रक पात्रताक पवित्रता हेबेक चाही। रघुनन्दन काका कौलेजमे पढ़ैत विद्यार्थी बुझि आँकि लेलैन जे मनोज पवित्र पात्र अछिए। बीस बर्ख पैछला बात छी, आजुक परिवेशमे विद्यालय आ विद्याकेँ आँकब भरिगर भइये गेल अछि।

हीय खोलि रघुनन्दन काका अपन बीतल जीवनक वृतान्त कहए चाहि रहल छला, मुदा अपने मन रोकि रहल छेलैन जे कियो दुख बाँटियो तँ नहियेँ लेत। लगले ईहो होनि जे जँ कियो दुख नहि बाँटि सकैए तँ सुखो तँ नहियेँ बाँटि लेत। हँ, एते जरूर भऽ सकैए जे दुखक माटिक धरतीक बाटपर चलि केना सुख प्राप्त कऽ सकैए से तँ बुझिये सकैए। जइसँ कल्याण हेबे करत। रघुनन्दन कक्काक मन मानि गेलैन जे किए ने जड़ियेसँ माने शुरूहेसँ सभ बात मनोजकेँ कहि दिऐ आ अपनेपर निर्णय करए छोड़ि दिऐ जे जे मन फुरतै से

करत। ओना, मनमे ईहो विचार नचैत रहैन जे अखन मनोज बाल सूर्य सन माने उदयकालक सूर्य सन कुहेसो, बादलोसँ दूर अछिए तँए करबो कठिन नहियेँ अछि। अनायास रघुनन्दन कक्काक मुहसँ खसलैन-

“बौआ मनोज..!”

कान ठाढ़ करैत रघुनन्दन कक्काक बात सुनए चाहलौं मुदा ओ ‘बौआ मनोज’ कहि चुप भऽ गेला। अपना मनमे ईहो भेल जे भरिसक मलेटरीक कमाण्डर जे ‘एटेनसन’ ने ते कहलैन। तत्-मत् करैत बजलौं-

“हँ..।”

रघुनन्दन काका बजला-

“बौआ, केकरो ने प्रशंसा करए चाहै छी आ ने निन्दा, तँए अपन बीतल जे समय अछि मात्र सएह टा कहबह।”

रघुनन्दन कक्काक विचारमे सतरंजक गोटी जकाँ सह दैत बजलौं-

“हँ-हँ काका, सएह नीक हएत। अनेरे जँ कियो बुझत माने जेकर निन्दा करबै तँ ओ तिलकेँ ताड़ बना नाँहकमे फसाद बढ़ौत।”

रघुनन्दन काका बजला-

“बौआ, दुनियाँ बीरान भऽ गेल।”

कहि चुप भऽ गेला। दुनियाँ जँ बीरान भऽ गेल तखन एते दिन रहलौं केतए? मनमे तर्क-वितर्क उठए लगल। मुदा तेकरा समेट बजलौं-

“से की काका?”

भीतुरका मनक बात जँ कियो सुनए चाहि रहल होथि, तेकरा

पेब जहिना वक्ताक मन खुशसँ खुशनुमा बनैए तहिना रघुनन्दन काकाकेँ सेहो भेलैन। बजला-

“बौआ, कहबी छै जे संगे-संग एलौं, संगिया मरि गेल, हम भुतिआइ छी। शुरूमे यएह भेल। तँए ओ नहि कहबह।”

रघुनन्दन कक्काक मनक बात तँ नहि बुझि पेलौं। रामधुन मे जहिना संग-संग सभ रमधुनियाँ बनि जाइए तेही धुनमे बजलौं-

“माया-मोहकेँ छोड़ू काका, अपन जे जीवन रहल अछि, बस तेतबे सुनि अपन मन भरि जाएत।”

रघुनन्दन काकाकेँ भरिसक भेलैन जे अपन मनक बात मनोज बुझि गेल। आगू बजला-

“बौआ, सुदिखोरीक चर्च उठिते समाजमे जबरदस भूचाल उठि गेल। वैचारिक तूफानसँ दण्डकारण्य वन तँ आबि बसल। दर्जनो मुकदमा उठि गेल, जेकर औऐल मुदालह बनैत जेल तक पहुँच गेलौं। मुदा गुण रहल जे जहिना दर्जनो मुकदमा भेल, तहिना दर्जनो नव-नव संगी, मुकदमामे फँसने, सेहो भेटल। बीचमे बजा गेल-

“तखन तँ जेते संगसँ छुटल तेतेसँ बेसी आबिए गेल।”

खुशी होइत रघुनन्दन काका बजला-

“बौआ, अपन परिवारसँ लऽ कऽ दियादवाद, समाजक एक अंग विरोधी बनि आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। खाएर जे भेल। अखन सुदिखोरी, दोसर-तेसर रूपमे, ओहूसँ जटिल बनि गेल अछि मुदा पैछला जे रूप छल माने सुदिखोरीक, ओइ रूपकेँ बदरूप बनाइये कऽ छोड़लौं।”

कहि मुस्कुरेला।

बजलौं- “तखन तँ..?”

रघुनन्दन काका बजला-

“तेतबे नहि मनोज, अपन किसानी जीवनकेँ ओइठाम आनि निश्चिन्त भऽ गेल छी जैठाम अपना विचारे वैज्ञानिक ढंगसँ खेती करए लगलौं। अपना हाथमे पानि–वोरिंगक माध्यमसँ–रखने छी, अपना संग पाँच आरो परिवारक जीवन-जापन तँ कइये रहलौं हेन।”

बजलौं-

“आब की चाही।”



शब्द संख्या : 3325, तिथि : 06 नवम्बर 2020

पोसलाक फल

घरहटमे फँसने एक पनरहियासँ गामक कोनो हाल-चाल नहि बुझि पेलौं। घरहटमे जानिकऽ माने नियारि कऽ नहि लगलौं, अनायास फँसि गेलौं। नान्हिटा विर्ड़ो पछबरिया गाममे उठल आ अपना गाम अबैत-अबैत बड़का तूफान जकाँ भऽ गेल। दरबज्जा खसि पड़ल। खसैबला अन्दाजमे रहैत तँ नियारिकऽ बना लइतौं। जइसँ क्रमबद्ध काज चलैत गामक लग-लगी ओहिना धेने रहैत जहिना धेने छल। माने भेल जे दरबज्जा बनबैक ओरियानमे लगि जइतौं आ समयपर बना लइतौं। संजोग भेल जे जौड़ कीनए दोकान गेलौं तँ दोकानेपर सुनलौं जे सुखनी दादी सात दिनसँ बिमार छैथ।

सुखनी दादीक बिमारक नाओं सुनि मन हलचला गेल। भाय, सुखनी दादीक सुखक साधनक रूपमे नहि हलचलेलौं, हलचलेलौं ऐ कारणे जे सुखनी दादी गामक सभसँ बिसवास पात्र, अनका ले जे होथि मुदा हमरा ले तँ छथिए। जहिना कहल गेल अछि जे भिनसुरके सूर्य देखि लोक बुझि जाइए जे औझुका दिन केहेन हएत। तहिना सुखनी दादीक बच्चेसँ ओहन करामात रहलैन। जखन साते-आठे बर्खक रहैथ आ आसीन मासक दुर्गापूजाक समयमे जे चिक्कैन माटि आनैथ, तइमे सँ बड़कियो भौजीकेँ आ लालो काकीकेँ दऽ दइ छेली। बाँकी अपना-ले रखै छेली। जइसँ घर-आँगनक निपनियाँ करैत दुर्गास्थानमे साँझ दइले सेहो दिआरीक माटि रहिये जाइन। ई बात, सुखनी दादीक मुहसँ ओइ दिन सुनने रही जइ दिन पड़ोसिया

ऐठाम देखली जे हमरे सन सात-आठ बर्खक बच्चिया बड़की भौजीक माटि चोरा कऽ लऽ अनने छल जइसँ दुनू परिवारमे माने बड़की भौजीक सेहो आ बच्चियाक सेहो तेना गीज-गीजन झगड़ा भेल जे बजै-जोकर नहि रहल।

जखनसँ सुनलौं जे 'सुखनी दादी सात दिनसँ बिमार छैथ' तखनसँ अपन काज बिसरए लगलौं आ सुखनी दादी मनमे आबए लगली। दादी मोन पड़ली एक दिनक झगड़ाक पनचैतीक पंचक रूपमे। संजोग एहेन बनल जे अपनो ओइ पनचैतीमे रही। रहबो केना ने करितौं, पड़ोसियाक झगड़ा छी, आ अपने केना ने रहितौं। नइ पंच बनबैत तँ नहि बनबैत मुदा सुननिहारक रूपमे सुनैक अधिकार तँ अछिए। सभ तरहेँ दादीकेँ अगुआएल बुझि बाजल छेलौं- 'दादी, अहाँक अछैत हम की बाजब। अहाँ अपना नजैरिये पनचैती कऽ दियौ।'

ओना, घटनाक आभास दादीकेँ लगि गेल छेलैन जे दुनू गोरेक बीच भानस करैबला जारन चोरबैक घटना छी। नवका तूरक पंच जकाँ तँ दादी छेली नहि जे पन्ना-मे-पन्ना आ छिन्ना-मे-छिन्ना मारि दोखीकेँ निरदोखी आ निरदोखीकेँ दोखी बना, चोरोकेँ कोर्टक सर्टिफिकेट दइतैथ। सोझमतिया दादी, बाजल छेली- 'ओइ बेचारीकेँ जँ भानसक जरने नहि छल आ तोरामे सँ लइये लेलक तँ की हेतइ। तोहर की मन छह जे हम खाइ आ ओ भुखले मुँह ताकइ। अपनामे सँ हम ओते जारन दऽ दइ छिअ। आ चेता दइ छिअ जे एहेन-एहेन तुच्छ चीज-ले एते पसार नहि करी।"

बजैत-बजैत दादीक मुहसँ हँसी फुटलैन। दादीक मुँहक हँसी देखि मनमे तर्क-वितर्क हुअ लगल जे दादी निर्णय सुना हँसली किए? कोट-कचहरीक हाकिम निर्णय सुनेला पछाइत गम्भीर मुद्रामे

रहै छैथ, आ दादी किए हास मुद्रामे छैथ? नइ रहल गेल, पुछलयैन-
“दादी, हँसलिऐ किए? जँ अपन कएल निर्णयपर अपने हँसि देब तखन ओ भेल की?”

बेवहारिक जिनगीक बहल बरदपुरुख जकाँ सुखनी दादीक जीवन सभ दिनसँ रहलैन। जिनगीक चढ़ा-उतरीसँ सुखनी दादीक विचारमे एतेक सक्कतपन तँ आबिये गेल छेलैन जे नान्हि-नान्हिटा बात वा नान्हि-नान्हिटा वस्तु-ले घटना अनेरे किए होइए। जीवनक जहिना एक स्तर अछि तहिना सीमो तँ अछिए। मनुक्ख जखन वर्तमान समयक प्रति सचेष्ट भऽ जाइए जे काल्हुक माने बीतल काल्हुक सीखल लूरियो आ वस्तुक संग लूरियोक नव सिराक जरूरत आइ अछि, तँए हू-ब-हू ओ रूप नहियेँ रहल। जहिना कोनो लत्तीनुमा गाछ प्रतिदिन किछु-ने-किछु नव सिरासँ आगू बढ़ैत रहैए तहिना ने मनक विचारोक बाढ़ि प्रति-क्षण प्रति-पल बाढ़िक आशा रखैए। जइसँ अतीतकेँ बेतीत भेल स्वीकारि आइकेँ पुनित मानि सुनीति दिस बढ़ैए। भविष्य तँ सहजे कल्पना छी जे सपनो भऽ सकैए आ अपनो तँ भइये सकैए। दादीक परिपक्व विचार ई मानि नेने छैन जे मनुक्खक बीच जेते दुखक दाही अछि, तइमे, नगण्य रूपमे, माने एक-आधअना कहियौ आकि पाँच-सात प्रतिशत कहियौ, अपन साधसँ बाहरक छी, जेकरा भगवानक दाही कहियौ आकि प्राकृतिक। बाँकी जे तेरानबे-सँ-पनचानबे प्रतिशत आकि साढ़े पनरहअना-सँ-पनरहअना अछि, तेकर कर्ता-धर्ता स्वयं मनुक्ख अपने छी। तइमे दुनू अछि, किछु लोकक अपने सिरजल अछि तँ किछु लोककेँ फुसलाइयो कऽ आ किछुकेँ धमकाइयो कऽ जीवनमे साटि दइए जइसँ दाही सेहो अछिए। खाएर जे अछि, तइसँ सुखनी दादीकेँ कोन मतलब छैन, बजितो तँ छथिए जे ‘अपने मुअए जग मुअए’, तहिना ‘अपने जिअए सभ जिअए।’

सुखनी दादीक स्पष्ट विचार बनि गेल छैन जे अधिक पूजी नमहर काजमे लगाबी जइसँ छोट-छोट अनेको काजक निर्माण होइत चलैए। जइसँ मानवोचित गुण सेहो जगिये गेल छैन। एक साँझक भानसक जारन मनसँ उधिया गेल छैन, जइसँ एहेन-एहेन काजकेँ साधारणो-सँ-साधारण बुझै छैथ, तँए एहेन काजक निराकरणो तँ तहिना ने हएत। अपन तइ दिनक विचार सुखनी दादीक मनमे आबि अनायास नाचि गेलैन जइसँ हँसी लगि गेलैन, तँए हँसल छेली, जइ दिनमे मानवोचित विचार बेवहार-रूपमे आबि गेल छेलैन मुदा सासुरबास नहि भेल छेलैन। वाला छेली मतवाला नहि भेल छेली। भेल ई छेलैन जे अपन पितियौत काकीकेँ चुल्हि लग जारन नहि देखि अपन माएसँ चोरा सुखनी दादी जखने चुल्हि लग माने काकीक चुल्हि लग राखए लगली कि पाछूसँ माए देखि लेलकैन। जखन सुखनी दादी घुमि कऽ अपना ओसारपर पहुँचली कि माए कहलकैन-

“गे चोरनी, तूँ जारन चोरेले हेन?”

सुखनी दादी बजली-

“नइ, कहाँ।”

ओना, सुखनी दादीक अभ्यन्तर ईहो कहैत रहैन जे एक तँ चोरि सेहो केलौं माने माएसँ छिपा कऽ, आ दोसर झूठो तँ बाजिये रहल छी। मुदा माए छी ने, आन नइ ने छी, जे कहबै से मानिये लेत किने। भेल तँ मनकेँ मनाएब अछि। माए बजली-

“बुच्ची, झूठ बजने दोख होइ छै।”

दादी बजली-

“माए, जखन तूँ आँगनसँ बहरेलही तखन हम अपना

ओसारपर सँ काकीक ओसार लग गेलिऐ कि काकीक चुल्हिपर वर्तन चढ़ल, आगूमे सलाइ राखल आ काकीकेँ औनाइत देखि बुझि गेलौं जे जारन दुआरे औना रहली अछि। तँए अपन गठूलासँ एक पाँज जारैन आनि कऽ दऽ देलिऐन, ऐ मे झूठ की बजलौं।”

सुखनी दादीक बात सुनि माइक मन मानि गेलैन जे सुखनी केतौ ने झूठ बाजल आ ने चोइर केलक। अपन परिवारक बुझि काकीकेँ जारन देलक आ अपना काजकेँ छिपौलक कहाँ, सुहृदे मुहेँ कहिये देलक। यएह ने छी मानवोचित धर्म-कर्म। काजक औगताइमे, माने डोरी नहि रहने, दोकान गेल रही, तैठाम दादीक सम्बन्धमे सुनलौं। अपन काजक दुआरे मन छनगले छल। बिमार दादीक नाओं सुनि आरो मन छनैग गेल। दोकानदारकेँ कहलिऐ-

“तूफानीलाल, जल्दी हमरा जौड़ दाए।”

तूफानीलाल बाजल-

“हाथक बँटलाहा साबेक जौड़ नहि अछि।”

भाय, हाथक कारीगिरीसँ साबेक जौड़ बनै छल, तँए दुनू हाथक जोड़सँ जौड़ निर्मित भेल, वएह साबे जखन मशीनमे गेल तखन दू वस्तु बन्हैक ‘डोरी’ भऽ गेल। एकर माने ई छोड़ि बुझब जे साबे मशीनक मुँह देखि करखन्नाक माल बनि गेल आ उपजौनिहार रहि गेल साबेक बोझे[7] बन्हैत? तँए साबेक जौड़ छी आकि डोरी, से अखन नहि।

बजलौं-

“नीक जौड़ दाए ने।”

तूफानीलाल बाजल- “प्लास्टिकक डोरी सभसँ मजगूत होइ

[7] साबे छिछलौआ वस्तु होइए, तँए बोझ बन्हैमे सभसँ कठिन होइए।

छै।”

‘प्लास्टिक डोरी’ सुनि मन भन-भना गेल जे एक दिस प्लास्टिकक सभ परहेज करैए आ अपने घरो ओहीसँ बान्हि ली से केतेक उचित हएत..? बजलौं-

“आरो कोनो नइ छह?”

बाहरेमे राखल ठेंगाक बोझ जकाँ साबेक डोरी देखबैत तूफानीलाल बाजल-

“ओइ बोझमे सँ अपने चुनि कऽ लऽ लिअ।”

सएह केलौं। पाइ दैत दोकानपर सँ विदा भेलौं। कनियेँ दूर जखन आगू बढ़लौं कि अपन काज मोन पड़ल। बन्हनिहार बरदाएल हएत तेकर धड़फड़ी मनमे आबि गेल। एक तँ पहिनहिसँ धड़फड़ाएल रहबे करी जे सुखनी दादी सात दिनसँ बिमार छैथ। मनमे हुअए जे दुनियाँमे जेतेक लोक अछि ओ तँ साते दिनक बीच ने मरैए। सातटा जे दिन बनल अछि तही दिनक बीच ने लोक जीबो करैए आ मरबो तँ करिते अछि। ..मन अस-बिस करए लगल जे जँ दादीक भेँट नहि कऽ लेब, माने ई जे जाबे तक कोनो घटनाक जानकारी नइ रहल आ तइ बीचक जे समस्या रहल, ओकर भागी किए कियो बनत। मुदा जखन कानसँ सुनि लेलौं जे आइ सातम दिन छिऐन, माने सात दिनसँ सुखनी दादी अस्सक छैथ। हो-न-हो अपने डोरी पहुँचाबए घरपर जाइ आ एम्हर कहीं दादी मरि गेली, तखन तँ मरै बेर जहिना ओ खोज करैत मरती, तहिना ने अपनो जीवन भरि दादीक मरती बोझक भार कपारपर लदने रहब..! की नीक की बेजाए से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। तीनबट्टीपर ठाढ़ मन अपनेमे घिच्चम-तिर करैत रहए कि संजोग बनल। डोरी सठि गेने बन्हनिहारे माने मजूरे, खोज करैत पहुँच गेल। डोरी दैत बजलौं- “श्याम भाय,

एकटा औगताइमे पड़ि गेल छी, ओइठामसँ हम भेल अबै छी।”

तीनबट्टीसँ कनियेँ आगू एकबट्टीपर जखन बढ़लौं कि पुन: सुखनी दादी तूफानमे खसल गाछ जकाँ हहा कऽ मनमे खसली। पचासी बर्खक सुखनी दादी जीवनमे कहियो ओहन रोगसँ नहि रोगेली जे छह-मास, साल भरि बिछान पकड़ा दइए। सुखनी दादीक घरसँ कनी पाछूए रही कि सुखनी दादीकेँ बाड़ीमे रामझिमनी तोड़ैत देखलयैन तँ मन शान्त भेल। मनमे भेल जे अनेरे एते काल अपसियाँत छेलौं। ठमैक कऽ ठाढ़ भऽ गेलौं। अपने मन मनाही केलक जे जँ कियो काज करैत होथि, तखन कुशल-समाचार बुझैले काज नहि रोकक चाही। हँ, एहेन जँ आपत्ति-विपत्तिक घटना भेल होइ तखन तँ रोकलो नहियेँ जा सकैए। मनमे तर्क-वितर्क भइये रहल छल कि देखलौं जे कोनियाँमे रामझिमनी नेने बाड़ीसँ सुखनी दादी निकैल रहल छैथ। आगू बढ़लौं, कि मनमे धक-दे उठल जे अखन बिमारीक बात नहि पुछबैन। जखन काज कऽ रहली अछि तखन तँ ओ स्वस्थ भेबे केली किने। काजे ने स्वस्थ-अस्वस्थक परिचय दइए। शरीर मोटगरे-डटगर अछि आ मन अस्वस्थ अछि, तखन या तँ कहबै जे हम बिमार छी या नइ तँ एते कहबे करबै ने जे मन खराप अछि, कि बगदल अछि आकि रोगाएल अछि। कहैले की केकरो रोक अछि जे नहि बाजह। मनक जीत, जीत छी आ मनक हार, हार भेल। आब जँ हारनिहार बुझैथ जे मनक माने तन मन भेल जे निरोग तँ अछिए, तँए ने एहेन मोटगर-डटगर छी, मुदा मन तँ पूर्ण स्वस्थ तेहने अछि जे जड़ि-पालोक कोनो ठेकाने ने अछि। खाएर जे अछि, चलू रमरमा दियौ। ..लगमे पहुँचते दादीकेँ गोड़ लागि आगूमे ऐ आशासँ ठाढ़ भऽ गेलौं जे पहिने गोड़ लगैक असिरवाद देती तखन ने आगूक हाल-चाल पुछबैन।

अगरजानी जकाँ सुखनी दादी बजली- “बौआ, ऐबेर एहेन

समय तरकारी खेतीक भऽ गेल जे केते तरकारी खेती केनिहार किसानक घर बिलैट जाएत। ताके ने भेल जे खेती होइत। मुदा अपने जे दसे धूर बाड़ीकेँ पोसने-पालने छी तइसँ निश्चिन्त छी। तोरा रामझिमनी छह की नहि। नहि छह ते झोरामे दऽ दइ छिअ, नेने जइहह।"

संतोखी दास जकाँ बजलौं- "ऐँह, अनेरे अपन हिस्सा किए देब दादी। एक तँ तूफानमे दरबज्जा खसि पड़ल जइसँ तीमन-तरकारी कीनैत-कीनैत तबाह छीहे। 'मुर्दापर जहिना पचास मनक लाद तहिना सौ मनक, सएह ने हएत।' दरबज्जाक माने मिथिलाक दरबज्जाक चर्च नहि कऽ रहल छी, जैठाम एक लोटा पानि सदिकाल राखल रहैए, दरबज्जापर दरबारी रहौथ वा नहि रहौथ मुदा लोटाक जल स्वागत-ले चौबीसो घन्टा तैयार रहि कहबे करैए- 'पीबैक इच्छा हुअए तँ पहिने पीब लिअ। आ जँ पियास नहि लगल अछि तखन पएर धोइ बैसू। समयपर दरबज्जाबला एबे करता, आगूक प्रक्रिया प्रारम्भ करता।"

बिच्चेमे मुँहक बात छिनैत सुखनी दादी बजली- "बौआ, यएह छी जीवन। जेते समय कर्मकेँ धर्म बुझि सत्कर्ममे अपनाकेँ लगौने रहबह, तेतेकाल दुनियाँसँ अलग रहबे करबह। यएह भेल ब्रह्मचर्य जीवन। यएह जीवन बना दिन-राति चलैत रही। यएह भेल समैयक संग-संग चलब।"

अपना विचारे दादी बाजि रहल छेली मुदा अपन मन टँगाएल छल जे कहुना आइ दलानक चार[8] चढ़ि जाए। जे रहैक ठौर भऽ जाएत। मुदा जइ जिज्ञाससँ आएल छेलौं, से दादीकेँ अखन तक पुछबे ने केलिऐन अछि! बिना बुझने जाएबो तँ उचित नहियेँ हएत।

---

[8] ठाठ

दादीक मनकेँ अपना दिस टारि अनैक परियास करैत बजलौं-

“दादी, अनेरे लोक माया-जालमे पड़ि जिनगी भरि फिरिसान रहैए।”

आगूएसँ दादी विचारकेँ लोकैत बजली- “बौआ, जँ धरतीपर जन्म नइ भेल रहितह, पंचतत्वमे रहितह, ताबे तकक तँ कोनो हिसाबे ने रहितह, मुदा जखन धरतीपर जन्म लऽ लेलह तखन तोरो ने धरती किछु कहतह आ तोहूँ ओकरा कहबहक।”

ओना, सुखनी दादीक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं मुदा अन्तिम बात जे बजली, ‘तोरा ने धरती किछु कहतह आ तोहूँ ने कहबहक’, तइसँ मन ढलैक गेल। बजलौं-

“ईहो कोनो चोराएल अछि। से तँ कहबे करबै ने।”

अपने कोन मने बाजल छेलौं आ दादी कोन मने बजली से तँ वएह जनती, मुदा अपने जे बजलौं तइमे हुनका की भेट गेलैन से नहि कहि, मुस्की दैत बजली-

“बौआ, अखन तक जेकरा स्वर्ग-नर्क बुझै छह, तेकरा निरमबैक ओ धरती छी। ओना, ऐ धरतीकेँ लोक सुभूमि आ कुभूमि सेहो बुझैए।”

दादीक विचार, साहोर वा आमक गाछ परहक अमरलत्ती जकाँ ऊपरे-ऊपरे लतड़ल जा रहल छेलैन, आ अपन मन तेते छनगल छल जे क्षण-क्षण जीह उड़ै छल। विचारमे मोड़ देब उचित बुझलौं। तइ बीचमे दादी एकटा झोरा आनि रामझिमनी दऽ देली।

झोरा भरि रामझिमनी जखन आगूमे दादी रखि देली तखन अपन मन मानि गेल जे आब किछु बाजब, नाकर-नुकर करब माने नइ लेब की लेब, उचित नहि हएत। जखने नाकर-नुकर हएत तखने दूरी बनत। जखन अपन आ आन परिवारमे भेद नहि बुझै छिऐ

तखन अपन परिवारक आवश्यकताक पूर्ति नहि करत तँ परिवार चलत केना। ओना, नाकर-नुकर ओइठाम उचितो भऽ जाइते अछि जैठाम परिवारक दूरी अछि। खाएर जे अछि तइसँ अपना कोन मतलब। बेल खाइक काज अछि आकि गाछ आ फल गनैक काज अछि। एक तँ ओहिना अपन मन कछमछ करिते छल जे कखन घरपर जा काज देखब। मुदा ऐठाम तँ सुखनी दादी तेहेन रामायण पसाइर देली अछि जे थाहे ने पेब रहल छी जे राम मनुक्ख छिया आकि ब्रह्म..!

अकैछ कऽ मन कहलक जे जइ जिज्ञासासँ आएल छी माने दादीक बिमारी सुनि, सएह किए ने पुछिऐन। मुदा लगले मन दुतकारलक जे चानीक रुपैआ जकाँ जहिना बोली टना-टन छैन तहिना एक कोनियाँ रामझिमनी तोड़ि अनलैन हेन, तखन केना कहबैन जे दादी सुनलौं जे अहाँ बिमार छी। अपने मन मनाही केलक जे ई अशिष्टता हएत। मुदा जे उड़न्ती बात सुनने छेलौं से सत्य अछि कि फुसि, सेहो तँ भाँज लगाएब अछिए। से केना बुझब? बजलौं-

“सभ परिवार आनन्द छी किने दादी। एक पनरहियासँ तेना काजमे भूत बनि भुतिया गेल छी जे गाम-घरक कोनो सुधिये ने रहि गेल।”

अपना मनमे ई छल जे जखने परिवारक चर्च करब आकि दादी अपने लगसँ ने बाजब शुरू करती। अनेरे तँ मुहसँ अपन नीक-बेजा खसबे करतैन। जँ नहि बुझैमे औत तँ टोन करैत टोनिया देबैन, नहि जँ बुझैत गेलौं तँ सभ समाचार बुझि लेब।

परिवारक नाओं सुनि दादीकेँ अपन दायित्व बोध जगलैन। बजली-

“बौआ, सातम दिन बाड़ीसँ अबैत रही कि एकाएक डाँड़

कचकल। जेना झन-दे मगजमे लगल। ओ लगले बढ़ि गेल। दर्दमे बदैल गेल। माने जोरसँ डाँड़ दुखाए लगल। भेल जे खसि पड़ब।”

‘खसब’ सुनि मन दहैल गेल। बजलौं- “खसलौं ने ते?”

अनुभवी दादी, अपन अनुभवक व्याख्यान करैत बजली-

“बौआ, अखन तोहूँ बाले-बोध भेलह। ओना, उमेर किछु रहए मुदा जे नइ बुझल अछि तइले ते कियो बाले-बोध भेल। तहिना जँ कमो उम्रबलाकेँ जे बुझल रहत तँ ओ चफलगर भेबे कएल किने।”

दादीक विचारक धारक प्रवाहमे भँसैत बीचमे बजा गेल-

“हँ, से तँ भेबे कएल किने।”

सुखनी दादी आगू बजली- “जखने दर्द तेज हुअ लगल कि बैस गेलौं आ बौआकेँ माने पोताकेँ शोर पाड़लिऐ। आवाज सुनिते सभ परानी दौड़ल आएल। हाथे-पाथे उठा कऽ पुबरिया घरक ओसारपर ओछाइन ओछा बैसा देलक।”

अपन आँखिक देखल बात छल जलेसर कक्काक। काकाकेँ तीनटा बेटा आ तीनटा पुतोहु छैन। छहटा दन्तार खलीफा घरमे छैन। लताम तोड़ैत काल गाछपर सँ खसि पड़ला। निच्चाँमे थाल-पानि सेहो रहइ। एकटा ईंटा कोण गरे थालमे सेहो ठाढ़ छल। खसिते काका चिचिया-

चिचिया शोर पाड़ैत रहि गेला, कियो अँगनासँ निकैल नहि एलैन। ओना, तीनू बेटा आँगनमे नहि रहैन, मुदा तीनू पुतोहु तँ रहबे करैन। कहब जे ओ सभ जँ नहि सुनने होथि? हँ, अहूँक बात मानि लेब। अखन लोक कानमे ठेकी लगा अमेरिकाक बात मोबाइलसँ सुनैत रहैए आ अपन घर-आँगन, बाड़ी-झाड़ी, टोलो-पड़ोस सभ बिसैर अनसुन भइये गेल अछि। मुदा से नहि, पहिने तँ तीनू दियादनी सुनि कऽ जलेसर कक्काक भारभीस कहि अनसुनी केलैन पछाइत

जखन टोलक लोक पहुँच हल्ला केलक जे जलेसर काका लतामक गाछपर सँ थालमे खसि पड़ला, जइसँ जाँघसँ खून छरछर बहै छैन तखन तीनू दियादनी अपन बाँट-बखरा करैत जलेसर काकाकेँ कियो देखनिहार हिस्सामे पड़बे ने केलैन। अपना औरुदे काका मरौथ आकि जीबौथ। अपन जिनगीक आवश्यक काज तँ लोक अपने करए नहि चाहैत अछि आ आनक के करत। नहि तँ चुल्हि लग पति पत्नीकेँ पानि भरि पहुँचा दैन केते नीक भेल। ई बात गाम-गमाइक भेल। शहर-बजार पहुँचने संस्कारमे बदलाव पाइ कइये देलक अछि। जँ से नहि केलक अछि तँ गाममे जाबे वएह छेली ताबे चुल्हिक इज्जत बँचबैत पुरुख माने पति चुल्हि लग पानि पहुँचबै छेलैन आ शहर गेने अनकर पानि वएह माने जिनका पहुँचबै छेलैन, पहुँचा रहली अछि। ओना, जलेसर काकाकेँ ढाठैक माने पुतोहु सभकेँ नहि देखैक कारण, दोसरो छेलैन। दोसइ ई छेलैन जे बेटाकेँ बिआह करैकाल तेते ढाख-डंफ बजा सोरहा करै छला जे अपना स्तरसँ ऊपर स्तरक परिवारक पुतोहु सभ परिवारमे आबि गेलैन...। माने ओहन स्तरक परिवारसँ आबि गेलैन, जइ परिवारमे दोसराक हाथे काज होइए। एक तँ काजक दुआरे मन छनगल छलेहे तैपर अनेरे रंग-बिरंगक विचार सभ मनमे जागए लगल। मुदा चाबस्सी दी काजकेँ, जे बाहरी सभ चिन्तासँ खींच अपना धुनिमे रमा लइए। औनाइत मनक औनैनी पकैड़ सुखनी दादी अपना लग थतमारि लेली। बजलौं- “पछाइत की भेल दादी?”

सुखनी दादी बजली- “अहाँक पचासी बर्खक देह ओहिना ठाढ़ अछि आकि ओकर तेल-मोबिलक जोगार सेहो करै छिऐ।”

सुखनी दादीक विचार नीक जकाँ मनमे नहि गरल मुदा पचासी बर्खक जिनगीक विचार तँ मनमे गरिये गेल। जइसँ मन आसचर्जित भइये गेल। अचरज करैत बजलौं- “पचासी बर्खक देह

अछि? अपना ते होइए जे पचासो बर्खक देह देखब कि नहि देखब। तेहेन गाड़ी-सवारी चलौनिहार सभ सड़कपर फड़ि गेल अछि जे चलब कठिन भऽ गेल अछि। तहिना खेबो-पीबोक चटक-मटक आ ओढ़बो-पहिरबक भइये गेल अछि। जइसँ कखन छी आ कखन नहि छी, तेकर कोनो ठेकाने ने अछि।"

किछु बात बजैले पेटेमे छल कि बिच्चेमे दादी बजली- "बौआ, पोसल देहक फल छी।"

'पोसल देहक फल' सुनि मन तरैस गेल, माने मनमे पियास जगि गेल जे घरक काज माने जे काज घरपर चलै छल ओ विचारक तर पड़ि गेल आ 'पोसल देहक फल' चर्च सुनैक जिज्ञासा मनमे ऊपर आबि जोर मारि देलक। अंगरेजीमे जहिना सभ प्रश्नक जड़ि ह्वाट् (What) शब्द छी तहिना बजलौं-

"से केना दादी?"

अपन प्रश्नक उत्तर नहि दैत सुखनी दादी बजली-

"बौआ, अखन कोनो काजक धड़फड़ी नहि ने छह? बहुत बात अछि आ बहुत बातक विचार करैक सेहो अछि।"

एकाएक अपन बिसरल काज मोन पड़ि गेल, मुदा दादीक बात सुनैले मन कच्छड़ काटिये रहल छल। मुदा जइ जिज्ञासासँ आएल छेलौं से तँ अखनो धरि पछुआएले छल। बजलौं-

"दादी, अखन ने अहीं मरैले उताहुल छी आ ने हमहीं केतौ पड़ाएल जाइ छी। घरहटसँ निचेन होइ छी, तखन जहिना एक पनरहिया घरहटमे लगेलौं तहिना एक पनरहिया अहाँक जिनगीक विचार बुझैमे लगाएब। अखन एतबे कहि दिअ जे ओसारपर बैसला पछाइत की भेल?"

विहुसैत दादी बजली- "की हएत! पोसलाक फल भेटल।"

दादीक विचार बुझबे ने केलौं। एक बेर बजली 'बाड़ी पोसल', दोसर बेर बजली 'देह पोसल' आ तेसर बेर 'पोसलाक फल', मुदा की पोसलाक फल? से तँ बजला पछातिये बुझब। पुछलयैन-

"से की दादी?"

ठहाका मारि दादी बजली-

"बौआ, चारू दिससँ घोरन जकाँ परिवारक सभ लुधैक कियो मालिस केलक, तँ कियो पानि आनि गिलास आगूमे देलक, कियो डॉक्टर बजबए गेल; केते कहबह। यएह कहलियह जे पोस मानि परिवार पोसलाक फल देलक।"



शब्द संख्या : 3039, तिथि : 12 नवम्बर 2020

अन्तिम परीक्षा

दिवाली पाबैनसँ एक दिन पहिने, सूर्यास्तक समय दरबज्जाक ओसारपर बैसल कमलदेव बाबूक मनमे ऐगला-पैछला सभ विचार तर पड़ि गेलैन आ अखन जे भार एलैन अछि, तइ पाछू अपन जीवन भरिक प्रशासनिक पदक इमानदारी दाँवपर चढ़ि गेल छैन। ..प्रशासनकेँ तीन अंगमे एक अंगक जिनगीक बीच रहलौं, तीत-मीठ देखैत अपन इमान बँचबैत हँसी-खुशीसँ सेवा-निवृति भेलौं, अखनो प्रशासनक सीनियर अफसर मानले जाइ छी। गाम-समाजक लोककेँ मतलबे कोन कमलदेव बाबूसँ रहलैन, एस.डी.ओ. सँ लऽ कऽ कमिश्नर बनि सेवा निवृत्त भेला, गामसँ कोनो मतलब नहि रहलैन। गौंओकेँ हुनकर खगता नहियेँ रहल। अपन कोट-कचहरी छी अपने गेने-एने ने काज हएत, तइले कमलदेव बाबूक खगते किए रहत..! तही बीच अपराजित माने कमलदेव बाबूक पत्नी, चाह नेने दरबज्जापर पहुँच, हाथमे चाहक कप धरा देलकैन। अपन विचारमे डुमल कमलदेव बाबू बिनु किछु बजनहि चाहक घोंट लिअ लगला। तैबीच अपराजित अपन चाहक घोंट मारैत बजली-

“कथीक सोगसँ सोगाएल छी?”

अखन तक कमलदेव बाबूक आदत रहलैन जे प्रशासनिक जे विषय रहत, ओ पत्नी तककेँ नहि कहबैन। यएह ने शासक-शासितक बीच दूरी भेल। कमलदेव बाबू बजला- “अपने देशक सुप्रीम कोर्टमे कृष्ण अय्यर[9] साहैब न्यायमूर्ति भेला अछि। ओ

[9] वैद्यनाथ राम कृष्ण अय्यर

प्रशासनक तीनू अंगमे न्यायालयकेँ श्रेष्ठ बुझि अपन इमानदारीक सम्बन्धमे कहने छैथ- ‘हमहूँ कोनो समाजक छी। निसचित समय-ले ऐठाम छी, फेर जहिना पहिने परिवार-समाजक अंग बनि छेलौं, तहिना ने रहबोक अछि।’ यएह विचार मोन पड़ि गेल तँए चेहराक सोगाएल रंग बुझि पड़ि रहल अछि।”

ओना, कमलदेव बाबू पत्नीसँ पूर्ण सन्तुष्ट छैथ, किए तँ परिवारक जे ढर्रा माने परिवार चलैक जे दिशा रहल अछि तइमे अपराजित पूर्ण निपुण छथि। तखन कहि सकै छी जे अपराजित जखन एते पतिधर्मा छैथ तखन विश्वासपात्र किए ने छैथ जे प्रशासनिक सेवाकेँ दुनू मिलि असान बना निमरजना करितैथ? विचारक दौड़मे एहेन विचार आबि सकैए मुदा प्रशासनिक तकनीकक बोधो तँ तइले चाही, से अपराजितकेँ तँ नहि छेलैन। तँए कमलदेव बाबूकेँ विचार-विमर्श करैक अनुकूल जगह नहि छेलैन। विचार-विमर्श ले तँ अनुकूल विचारो आ अनुकूल जगहो चाही, से नहि छेलैन।

ओना, पत्नीसँ माने अपराजितसँ, गप-सप्प करैक मन कमलदेव बाबूकेँ नहि छेलैन, किए तँ पाँचमे दिन समारोह हएत जइमे सभसँ श्रेष्ठ किसानकेँ दस लाखक पुरस्कार भेटतैन। ओही किसानक चुनावक भार कमलदेव बाबूकेँ देल गेल छैन आ हुनके हाथे सम्मान पत्रक संग दस लाख रुपैआक चेक सेहो देल जेतैन।

किसानक तँ देशे भारत छी, करोड़ोक संख्यामे किसान छथिए, तइमे एकटा पुरस्कार अछि, तँए करोड़मे एककेँ चुनव बाल-बोधक खेल नहियेँ छी, तैसंग ईहो खतरा अछिए जे उचितकेँ नहि भेट जँ अनुचितकेँ भेटत तँ करोड़ोक मुहेँ बेइमान सेहो कहेबे करब। एक-आधक प्रश्न नहि अछि जे एकटाकेँ जँ अनुचितो देलिऐ तँ दोसर

सही कहनिहार हएत आ करोड़ोक जे संख्या अछि ओ अपनाकेँ ओइसँ अलग मानि मुँह बन्न केने रहत। ऐठाम तँ करोड़ोक प्रश्न अछि तँए समस्या जटिल अछिए।

..कमलदेव बाबूक मनमे ईहो होनि जे अपन सरकारी सेवामे कहियो पत्नीकेँ ने कोनो बातक जानकारी देलिऐन आ ने विचार पुछलयैन। नहि पुछला पछातियो हँसी-खुशीसँ अपन बत्तीस बर्खक सेवा इमानदारीसँ निमाहलौं। ओही इमानदारीक चलैत ने आइ ओहन भार, सेवा-निवृतिक पछातियो देल गेल अछि...।

ओना, जीवनमे अनेको बेर एहेन प्रश्न कमलदेव बाबूक सोझामे माने काज करैक दौड़मे आबि चुकल छेलैन मुदा तेकरा ओ ऊपर-निच्चाँक मध्य अपनाकेँ बुझि दुनू दिससँ माने ऊपरोसँ आ निच्चोँसँ विचार-विमर्श करैत काजक निपटान करैत पार लगा लेलैन। दोसर बात ईहो अछि जे प्रशासनक भीतर, निर्णय गोपनीय सेहो रहिते अछि, जइसँ समयानुकूल परिवर्तित करैक सम्भावना रहैए, मुदा ई तँ से नहि छी। माने एकटा किसानकेँ श्रेष्ठ किसानक सम्मान देब, बाँकी करोड़ो किसानक मनमे उठबे करतैन जे हमरा संग अन्याय भेल अछि।

अन्यायोकेँ सभ एक्के रंग थोड़े बुझै छैथ। कियो खिस्सा-पिहानी जकाँ बुझै छैथ, तँ कियो अपन जीवन बुझि अपनाकेँ विरोधमे ठाढ़ करैत मुकाबला सेहो करिते छैथ। एहेन परिस्थितिक बीच ठाढ़ छी। तैसंग कमलदेव बाबूक मनमे ईहो उठैत रहैन जे अपना जनैत जीवनमे कहियो अनुचित काज नहि केलौं, हँसी-खुशीसँ अपन संगी सभक बीच सेहो रहलौं आ सेवा-निवृतिक पछाइत समारोहपूर्वक सम्मान सेहो पेलौं, मुदा आइ तँ ओहन क्षितिजपर पहुँच गेल छी, जैठाम अस्सी बर्खक जीवन माने उमेरक

हिसाबसँ बीत चुकल अछि, तइमे बत्तीस बर्ख जवाबदेहीक जीवन सेहो बीतल अछि, जँ कनियोँ नाकर-नुकर हएत तँ सभ केलहा-धेलहा पानिमे चलि जाएत। पानियेँटा मे किए जाएत, शेष जीवन जे अछि सेहो जीब गरगट भऽ जाएत। जखने मृत्युक समय गरगट भेल तखने ने लोक बाजत जे करनी देखियौन मरनी बेर..! करनी मरनीक जे चर्च अछि ओ शारीरिक नहि, मानसिक छी। शरीरक क्षेत्र विचारक क्षेत्रसँ अलग अछि। जेकरा अनेको रोग-वियाधिसँ सामना करए पड़ै छै। कहलो जाइ छै जे शरीर वियाधिक घर छी।

कमलदेव बाबूकेँ पत्नीसँ नहि पुछैक इच्छा रहितो बजला-

"कठिन घड़ीमे पड़ि गेल छी..!"

ओना, संयमित भाषामे कमलदेव बाबू बजला मुदा 'कठिन घड़ीमे पड़ि गेल छी', ई की भेल? कोन चीजक कमी अपना अछि जे कठिन घड़ीकेँ असान घड़ी नहि बनौल जा सकैए। फुदैक कऽ अपराजित बजली-

"केहेन कठिन घड़ी?"

पत्नीक प्रश्न सुनि कमलदेव बाबूक मनमे अस्सी मन पानि एक्केबेर, पहाड़क झरना जकाँ, झहैर गेलैन। झहैर ई गेलैन जे अनेरे कोन दुरमतिया चढ़ि गेल जे मधुमाछी छत्तामे गोला फेक देलिऐ। मुदा आब उपायो तँ दोसर नहियेँ अछि। जखन गोला फेक देलिऐ आ मधुमाछी उड़ि गेल तखन काटैक डरे भगने हएत। सेहो तँ नहियेँ अछि। तहूमे कोनो-कोनो जीबठगर मरदनमा माछी एहेन होइए जे कोस-कोस भरि चानिपर उड़ैत काटैले पछुअबैए। ..कमलदेव बाबूक मनमे उठलैन जे परम प्रिय पत्नी छैथ जँ कहिये देबैन तँ की हएत?

जहिना विश्वमोहिनीक सभामे नारदजीकेँ बनरमुँह देखि शिवदूत हँसैत रहैन तहिना कमलदेव बाबूक मनमे इमान मोहैत

कहलकैन, कानमे पड़ैत देरी जँ कहि दैथ माने विचार दैथ जे हमरो भाए की एक्की-दुक्की किसान छैथ, पचास बीघाक जोत छैन, दू जोड़ा बरद छैन, तेसलिया नारक टाल अखनो छैन...। तखन की करब?

विचित्र स्थितिमे अपनाकेँ देखि कमलदेव बाबू नारदजी जकाँ अपन चौरासियो आसन समहारि विचारकेँ बदलैत बजला-

"अनेरे कोन नोकरीक चक्करमे पड़ि जिनगी बर्वाद कऽ लेलौं जे मरणतियो बेर जान नहि छोड़ए चाहैए।"

पतिक विचार सुनि अपराजितक मन चपचपेलैन। चपचपाइक कारण भेलैन जे पेंशनक आमदनीसँ अतिरिक्त आमदनीक उपाय भऽ रहल अछि। अपन मनक चपचपीमे चपचप करैत अपराजित बजली-

"काल्हि दिवाली छी, लक्ष्मी पूजाक संग काली पूजा सेहो हएत, तइ बीच तँ साक्षात् लक्ष्मीए-क आगमन ने भऽ रहल अछि।"

जखन मन अनुकूल रहल तखन कोनो शब्द कानमे एने जे अर्थ प्रकट करैए वएह शब्द शंकुल मन रहने ओइसँ तिरछिआएलो आ विपरीतो अर्थ दइते अछि। ओना, पत्नीक बीचक जे बेवहारिक जिनगी कमलदेव बाबूक रहलैन तइ अनुकूल आभास भइये गेलैन मुदा आभास तँ आभास छी। एक तँ ओहुना कमलदेव बाबूक मन पत्नीकेँ सोझमे देखि खिन्न भइये जाइ छैन जे माता-पिता माने पत्नीक माता-पिता, जेहेन छेलैन तइ अनुकूल बच्चासँ बढ़वाड़ि भेलैन, मुदा सियान-चेष्टगर भेलापर पत्नीक रूपमे जखन अपना संग एली तखन अपनो ने ऐ प्रश्नपर विचार तेही दिन करि कऽ ओइ साँचमे ढालैक संकल्प मनमे रोपितौं..?

लगले अपने मन उत्तर देलकैन जे आइ अस्सी बर्खक जिनगी

बितला पछाइत जे मन कहि रहल अछि तइ दिन माने शुरूक दिन तँ ओ बाल-बोध कृष्णे जकाँ छल, जैठाम अन्हारक अपेक्षा इजोत कम, वा इजोतक हिसाबे अन्हार बेसी छलैहे। पत्नीक मुँहक कहल लक्ष्मीक चर्च करैत कमलदेव बाबू बाजए चाहलैन मुदा मन ईहो कहैत रहैन अखन ई काज माने जे जिम्मा आएल, ओ मनकेँ तेना झकझोड़ि देने अछि, जे किछु आगू-पाछू सुझिये ने रहल अछि। मुदा जे प्रश्न तत्काल सोझामे आबि गेल अछि ओकर निपटान तँ अपने ने करब। जँ अखने नहि सलटा लेब तँ आगू, भारी-भरकम गुड़ घाव जकाँ जँ नहियोँ तँ रूँइउपार घाव जकाँ तँ भइये जाएत। पत्नीक चित्तकेँ चेतन करैत कमलदेव बाबू बजला-

"काल्हि दिवाली पाबैन छी, दीपक इजोतमे लक्ष्मी पूजा हएत आ निसभेर अन्हारमे कालियो पूजा हेबे करत। तेकर परात माने परसू गोबरधन पूजाक संग बलिराजाक पूजा सेहो हेबे करत।"

कमलदेव बाबू अपना विचारे विचारक भूमिका माने धरती तैयार करैत सिलसिलेबार ढंगसँ विचारक क्रम, मनमे बनैबते रहैथ कि बिच्चेमे अपराजित टपैक गेली- "चारिम दिन भैयादूज सेहो छी।"

कमलदेव बाबू बजला-

"भैयादूजक संग चित्रगुप्त पूजा सेहो छी।"

पतिक विचारमे विचार साटैत अपराजित बजली-

"हँ, से तँ छीहे।"

पत्नीक सुढ़ियाएल मन देखि कमलदेव बाबू बजला-

"लक्ष्मीक जे चर्च केलौं ओ मात्र धनसँ सम्बन्धित लक्ष्मी छैथ, मुदा क्षीर सागरमे जे विष्णुक संग लक्ष्मी छैथ ओ उच्चकोटिक दोसर श्रेणीक छैथ। तेसर श्रेणीक ओ लक्ष्मी छैथ जे इन्द्रक संग छैथ, तँए

केते मोन राखब, जइ दिनक जे भोग-पारस हएत से भोगब। एते तँ मनमे अखनो खुशी अछिए ने जे केहनो दुनियाँ किए ने रहल, मुदा अस्सी बर्ख तँ जीब लेबे केलिऐन।”

ओना, कमलदेव बाबूक विचार सुनि अपराजितक मन उज-गुजा गेलैन। जइसँ पति-मुँहक कहल सभ बात नीक जकाँ नहियेँ बुझली, मुदा एते तँ भावनामे जगबे केलैन जे अपनो बाल-बच्चाकेँ अपना आँखिये लोक नहि देखि पबैए, तैठाम जँ पाँच पीढ़ीक वंशगत बीच जीब रहल छी, यएह कम भेल। ऐ सँ बेसी की चाही। अपराजित बजली- “हँ! से तँ नीक कि बेजाए, जीब लेबे केलिऐन..!”

भावसँ भरल अपराजितक मन देखि कमलदेव बाबूक अपनो मन भावुक भऽ गेलैन। विचार जगलैन जे पत्नीकेँ किए ने चीज-बोस गनैक भाँजमे लगा दिऐन आ अपने ओइ दृष्टिसँ समस्यापर विचार किए ने करी जे अपन जान अपना मुट्ठीमे पकैड़ इमानक बीच सीमाक रक्षा करी। मनकेँ दहलबैत कमलदेव बाबू बजला-

“आब की चाही।”

ओना, तुष्टिक खियालसँ कमलदेव बाबू बाजल छला, मुदा परदेशियाक पत्नी जकाँ, माने जखन परदेशसँ कमा-खटा परदेशी गाम अबै छैथ आ परिवारकेँ नजैरमे रखि पत्नीसँ पुछै छथिन जे आरो की खगता अछि, तहिना अपराजितक मनमे सेहो जगलैन। ओना, कमलदेव बाबू अपना काजकेँ प्रमुखतासँ पकड़ने छैथ, तँए पत्नीक संग बेसी समय नहि लगबए चाहि रहल छला, मुदा पत्नियोँ तँ जीवनक संगी छिऐन्हेँ। बकलेलो-ढहलेल बेटा-बेटी वा पति-पत्नी किए ने रहए मुदा माता-पिता वा पत्नी-पतिक बीच प्रिय सम्बन्ध रहिते अछि। सुपुट मुहेँ कमलदेव बाबू पत्नीकेँ कहलैन- “अखन

जिनगीक अन्तिम परीक्षाक घड़ी आबि गेल अछि, जँ ऐ मे चुकब तँ शेष जीवनक संग मृत्यु सेहो नारकीय हएत।”

पतिक बात सुनि अपराजित विस्मित हुअ लगली। मनमे अनेको विचार जागए लगलैन। मुदा तइ सभ विचारकेँ मनेमे शान्तिसँ सैंत बजली- “हमरा की कहै छी?”

पत्नीक बात सुनि कमलदेव बाबूक मनमे अनेको प्रश्न एकसंग उठि गेलैन। उठि गेलैन जे कहैले ते बहुत किछु अछि मुदा छी कोन जोकरक, से तँ अपनो मन कहैए किने। मुदा तइमे दोख केकर। की लोहेटाक दोख आकि लोहारोक? अपने मन दुतकारि कमलदेव बाबूकेँ जवाब देलकैन। शुरूमे, माने जखन अपराजितक संग सम्बन्ध स्थापित भेल तइ दिनमे, पत्नीक अध्ययन नीक जकाँ जँ भेल रहैत तँ जहिना अपन जीवनक निर्माण उच्च श्रेणीक केलौं, तहिना तँ करौल जा सकै छल। जँ से भेल रहैत तँ दुनियाँमे केकरो दोसरकेँ तकैले जाए पड़ैए से तँ संगेमे ने छेली। मुदा की अपन मन नहि कहैए जे चूक भेल। ओना, जँ मानल जाए तँ दुनू दिससँ चूक भेल मुदा चूकक जवाब तँ ओकरे ने दिअ पड़त जे अपने अकास छुबि लेलक मुदा जीवनसंगीकेँ भानसक भनसिये रखला। विचलित होइत कमलदेव बाबू बजला- “अखन किछु ने कहै छी, जहिना साधु-संयासी एकान्त बास तकै छैथ तहिना अखन छोड़ि दिअ।”

ओना, अपराजित साधु-संयासीक एकान्त बास केना बुझि पेबितैथ जे एकाग्रता जीवनक सभसँ मूल्यवान भावनाक भवन छीहे, जैठाम अमृत बरसा सेहो होइते अछि, मुदा एते तँ बुझबे केली जे अखन पति अपन वेदनामे बिरहाएल छैथ तँए ऐठामसँ हटिये जाएब नीक हएत। ‘हँ, हूँ’ बिनु किछु बजनहि अपराजित ओतए-सँ हटि गेली।

पत्नीकेँ लगसँ हटिते, अपराजितक सम्बन्धसँ पूर्वक विचारो आ विचारक संकल्पो कमलदेव बाबूक मनमे बिजलोका जकाँ छिटकलैन। छिटैकते देह भुलैक गेलैन। रूइयाँ-रूइयाँ जगि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। मोन पड़लैन समाजक बीचक ठाढ़ भेल पहाड़क दुर्गम स्थल।

बच्चेसँ कमलदेव तीक्ष्ण बुइधिक छैथ। हाइ स्कूल तक अबैत-अबैत अपन गाम-समाजक अध्ययन गहींर रूपेँ तँ नहि मुदा चलैनिक हिसाबसँ माने बेवहारिक हिसाबसँ अध्ययन कऽ लेलैन। अध्ययनक क्रममे देखलैन जे समाजक ओही जातिक हमहूँ छी जइ जातिमे बाबू-बबूआन सेहो छथिए। जइ बीच माने साधारण परिवार आ जमीनदार परिवारक बीच नमहर खाधि अछि। बिनु पढ़लो-लिखल, पढ़ल-लिखलक ओइ ओहदापर विराजमान छैथ जे साधारण परिवारक तीक्ष्ण-सँ-तीक्ष्ण बुइधिक लोक किए ने होथि जे हीरा रहितो कोयलासँ झाँपल रहल अछि। समाजक बीच कोनो बेवस्थाकेँ तोड़ब, वा सुधारब नान्हिटा काज नहियेँ अछि। ओ बेकती-विशेषसँ नहि समाज-विशेषसँ तोड़लो जा सकैए आ सुधारलो तँ जाइये सकैए। बेकती-विशेष एते जरूर कऽ सकै छैथ जे अगुआ कऽ समाजक जागरण करैत समस्याक सोझा ठाढ़ होइथ। कमलदेव बाबू से नहि केलैन अपन प्रतिभाकेँ अपनेमे समर्पित करैत, आइ.ए.एस. भेला। ओना, जीवनमे नवपन जरूर अबैत गेलैन मुदा काजक ओझरी काज दिस खींच मनोचित जीवनसँ अलग खिंचेत गेलैन। मुदा किछु भेलैन अपन इमानकेँ अपन धर्म मानि जीवन-धारण केने रहला। तेकरे फलाफल एते भारी काज पकड़ब छिऐन्हेँ।

अपनापर सँ कमलदेव बाबूक मन अपन भार दिस बढ़लैन। भार दिस बढ़िते अपन ओ काज मन पड़लैन जे जीवनक अन्तिम परीक्षाक रूपमे आगूमे ठाढ़ भेलैन। आगू-पाछू केतबो कमलदेव बाबू

तकलैन मुदा रस्ता नहि देखि मन सामर्थ्यहीन हुअ लगलैन। जहिना अपन बुइधिक नि:आशा देखि लोक दोसरकेँ पुछैए तहिना कमलदेव बाबूक मनमे सेहो एलैन जे हमरा सन-सन केते पदाधिकारी भेला अछि, आ जेहेन भार अपना भेटल अछि तेहेन भार समहारि अपन इज्जतकेँ ओहिना बरकरार रखलैन अछि जेना मानवोचित होइए। ..कमलदेव बाबूक मनमे आशाक तीक्ष्ण लकीर खिंचेलैन। खिंचेलैन ई जे अपनो तँ ओहन जीवनमे संगी रहबे केलाह अछि जे कौलेजसँ लऽ कऽ प्रतियोगिता परीक्षा तक संग रहला। जहिना अपने एस.डी.ओ. सँ कमिश्नर धरि बनलौं तहिना ने सोमनाथ सेहो बनला।

सोमनाथपर नजैर पड़िते कमलदेव बाबूक मनमे आश जगलैन। आशो केना ने जगितैन? जे काज वा विचार अपने नहि बुझै छी ओ दोसरोसँ मदैत लऽ कएले जा सकैए। दिन-राति लोक करितो अछिए...।

सोमनाथपर नजैर पहुँचते कमलदेव बाबूक मनमे बेचैनीक जगह चैन एलैन। मन चैन होइते सोमनाथक जीवनपथ दिस नजैर दौड़ौलैन तँ देखलैन जे ओ तँ बदनियतिक बदनामी मुकुट सभ दिन पहिरनहि रहला। रंग-बिरंगक विचार हुनका सम्बन्धमे माने सोमनाथक सम्बन्धमे अखनो लोक बजिते छैथ। लगले अपन मन कहलकैन, 'जखन एक रंगक जीवन रहल अछि, माने सोमनाथक संग, तखन जीवने ने किए देखल जाए। लोक तँ अनेरो कखनो जातिक उन्मादमे, कखनो साम्प्रदायिक उन्मादमे तँ कखनो क्षेत्रीय उन्मादमे एक-दोसरकेँ बदनाम सेहो करबे करैए। मुदा, तइसँ अपना कोन मतलब अछि। अपना तँ ओतबे मतलब अछि जे सोमनाथक काजक दौड़ केहेन रहलैन। जँ नीक रहलैन तँ नीक भेला, नहि जँ अधला रहलैन तँ अधला भेला। अधलासँ अधला विचार केलाक पछातिये ने अधला हेबाक सम्भावना सेहो रहिते अछि। ..एकाएक

कमलदेव बाबूक मनमे अनायास खसलैन जे जहिना आइ अपने विशाल जनसमूहक बीच ठाढ़ छी तहिना ने सोमनाथोकेँ एकबेर ठाढ़ हेबाक मौका भेटलैन। परिणाम की भेलैन? परिणाम यएह ने भेलैन जे माफी मांगि जान बँचौलैन। एकाएक कमलदेव बाबूक मन ओइ सीमापर आबि अँटकलैन जे एहेन लोकसँ माने सोमनाथ सन लोकसँ, विचार लेब जोखिम उठाएब हएत। लगले अपने मन कहलकैन जे जँ सोल्होअना अलग हएब सेहो नीक नहि हएत। अपन काज छी अपना मनसँ निर्णय करब। तइ बीचमे जँ पुछि कऽ किछु जानकारी लऽ ली, ओते तँ विचारैमे असान हेबे करत। कमलदेव बाबूक मन मानि गेलैन जे सोमनाथसँ विचार लेल जा सकैए। किछु छैथ मुदा एते तँ छथिए किने जे पैघ-सँ-पैघ जवाबदेहीक बीच सभ दिन रहला। ओना, जहिना अपने बीस बर्ख सेवा निवृत्ति, नोकरीसँ भेना भेल अछि तहिना हुनको भेल छैन। जइसँ एते तँ अनुभव आरो बेसी भइये गेल हेतैन जे जहिना जीवन द्वन्द्वक बीच चलैए, तहिना विचारक द्वन्द्व सेहो अछिए। तहूमे नोकरीक जीवन किछु आरो होइए आ नोकरी छुटला पछातिक जीवन किछु आरो होइए। ऐ बीच जँ अपन भूल-चूक माने जीवनक भूल-चूककेँ विचारक दौड़मे समहारि-सुधारि नेने होथि, ईहो तँ सम्भव भइये सकैए। मोबाइल उठा कमलदेव बाबू सोमनाथसँ सम्पर्क करैत बजला-

"सोम भाय, एकटा तेहेन जवाबदेहीक भारमे पड़ि गेलौं अछि जे अनभुआर रहने किछु सुझिये ने रहल अछि। तँए अहाँसँ सम्पर्क केलौं...।"

उमेरक हिसाबसँ सोमनाथ अस्सी बर्खक भइये गेल छैथ, मुदा जीवनक कोनो दुर्गति बाँकी नहि रहल छैन। हीया हारि सोमनाथ बजला- "शरीरक सभ अंग शिथिल पड़ि गेल अछि। प्राणटा बाँचल

अछि, तँए बजै छी। मुदा ने आँखि काज करैए आ ने कान। मनोमे ओहन शक्ति नहियेँ रहि गेल अछि जे किछु गम्भीर विचार करब।”

कमलदेव बाबू बजला-

“सएह।”

सोमनाथ उत्तर देलखिन-

“हँ, से सएह।”

सोमनाथक उत्तर पेब कमलदेव बाबूक मन घुरमोड़ लेलकैन। घुरमोड़ लैत मनमे उठलैन जे जखन लोक दुनियाँक निस्सारता बुझि जाइए, तखन ओकरा वास्तविकताक बोध होइ छै, मुदा तइमे एकटा जबरदस मोकर सेहो फुटिते छै। ओ फुटब भेल जे पाछू उनैट जखन ओ तकै छैथ तखन दुनियाँकेँ माने लोककेँ अपन करनीक फलमे ओझराएल देखि रिसिया जाइते छैथ, जइसँ ओहन दुनियाँसँ अपनाकेँ बिमुख करए चाहै छैथ। अपन विचारपर कमलदेव बाबूक अपन बिसवास जगलैन। बिसवास ई जगलैन जे विचार दइसँ सोमनाथ अनठा रहला अछि। तँए किए ने ओहन नहरनी भिराबी जे अधिकसँ अधिक तरक पीजकेँ निकालि सकइ। जइसँ माने जइ निकालबसँ मनमे सुआसो अबैए आ शरीरक रोग सेहो तँ भागिते अछि। कमलदेव बाबू बजला-

“भाय, आब अपने सभ ने दुनियाँक विधि-विधाता भेलिऐ, तँए प्राण अछैत जँ हारि मानि लेब तखन अपना सन लोक माने ओइ स्तरक लोक, बेपनाह हेबे करता किने।”

कमलदेव बाबूक विचार सुनि सोमनाथ बजला-

“कमल भाय, सरकारी कार्यक्रम छी, सभ तौर-तरीका निर्धारित हेबे करत, ओकरा नीक जकाँ देखि ओइ अनुकूल काज कऽ लेब।”

कमलदेव बाबू बजला-

“बड़बढ़ियाँ।”

ओना, बजैक क्रममे ‘बड़बढ़ियाँ’ मुहसँ कमलदेव बाबूकेँ निकैल गेलैन मुदा जखन गौड़ केलैन तखन बीचमे नैतिकताक प्रश्न मनमे उठि गेलैन। अपन नैतिकता काजक पछाइत की कहत? अखन तँ काजक दौड़ अछि, समय निर्धारित अछि तइ बीचमे समारोहक सम्पादन करैक अछि। ओना, कार्यक्रम तय करैमे धड़फड़ी भेल, किए तँ जेते नमहर काज अछि तेते मनन-चिन्तन करैक समय नहि भेटल। समारोहक जे सम्मान अछि, ओ देशक माटि-पानि-हवासँ लऽ कऽ मरल-अधमरल, जीअल-अधजीअल तकसँ ने जुड़ल अछि। अपन नैतिकता की कहत? मुदा तइसँ पहिने ने देखब जे ‘नैतिकता छी की?’

नैतिकता छी की? मनमे उपैकते कमलदेव बाबूक मन विचारक संग अनायास भूत दिस भगलैन माने अतीत दिस बढ़लैन। शास्त्र-पुराणमे जइ तरहक नैतिकताक प्रतिपादन भेल अछि ओ समय सापेक्ष छल। ओना, विचारोक अपन आयु होइए। आजुक नीक विचार काल्हि अधला भऽ जाइए। तहिना काजो आ समाजोक अछिए, एकक नीक दोसरक अधला भऽ जाइए। एक गामक अनुकूल दोसर गामक लेल प्रतिकूल भऽ जाइए। खाएर जे अछि मुदा एते तँ निर्विवाद अछिए जे मानवोचित बेवहार जे शास्त्र-पुराण देलैन ओ अखनो माने एकैसमी शदीक आजुक वैज्ञानिक युगमे सेहो ओहिना गतिशील अछि जहिना हजारो बर्ख पूर्वमे छल।

एकाएक कमलदेव बाबूक मन अतीतसँ ससैर वर्तमानमे आबि अँटैक गेलैन। अँटैक ई गेलैन जे समयाचारकेँ जँ नैतिकतासँ अलग देखब तखन ओ समयोचित केना भेल? जँ से नहि भेल तँ ओ

समुचित केना भेल? तहिना लोकाचार अछि। लोकक समयोचित मन भावनकेँ केतेक उचित आ केतेक अनुचित कहल जाए, ई के करत। नीक यहए ने भेल जे अपन जिम्मेवारीकेँ इमनदारीसँ पुरबैत चली, सएह ने भेल सभसँ पैघ नैतिकता। एकाएक कमलदेव बाबूक मन फुला गेलैन। विचार जगलैन, अखन पाँच दिन समारोहकेँ बाँकी अछि। बुझल जेतइ।



शब्द संख्या : 2933, तिथि : 18 नवम्बर 2020

गाम आब ओ गाम रहल!

फागुन मास। फगुआसँ तीन दिन पहिने, लुक-झुक सूर्यास्तक समय, मननदेव चेतनाथकेँ कहलक-

“भाय, अमावस दिन महादेव बाबाक जन्म भेलैन, माने शिवराति दिन। परसू ओहो अमावस अपन पूर्णचन्द्र देखता। वसन्तोक आगमन भइये गेल। सरस्वती-पूजा वा वसन्त-पंचमीक हिसाबसँ वसन्तो माससँ ऊपर टपिये गेल, आ अपना सभ अधमरू जकाँ पड़ले रहि गेलौं।”

ओना, चेतनाथ वसन्तक ओझरीमे तेना ओझरा गेल जे जे पहिने सुनने छल से बिसैर गेल आ पछातिक सुनबे ने केलक। वसन्तक ओझरीमे ई ओझरा गेल जे सालक बारह मास छअ ऋतुमे विभाजित अछि। माने भेल दू-दू मासक ऋतु। वसन्त पंचमी माघक बीसम दिन वा इजोरिया पक्षक पंचमी-के माने चारिम दिनक परात, चढ़ैए। तइ हिसाबसँ फगुआ एक मास बीस दिन–माने पचास दिन–पर फागुनक पूर्णिमा-दिन होइए। दोसर दिस फगुआक परात, माने फागुन अन्त भेला पछाइत वसन्तक जन्म होइए। जे दू मास पुरबैत बैशाखक पूर्णिमा-दिन अन्त होइए।

मननदेव बाजि कऽ चुप भऽ गेल। आवाजक आगम बन्न होइत देखि चेतनाथक भक्क खुजल। भक्क खुजिते विचारलक तँ मनमे एलै जे मननदेव किछु विचार चाहि रहल अछि, मुदा अपने तँ सभ बात सुनलौं नहि, तखन की विचार दऽ सकै छिऐ? मुदा चुप्पो रहब

तँ कठाइन हेबे करत किने। जँ दोहरा कऽ मननदेवक विचार नहि सुनि लेब तँ विचारे की कऽ सकै छी..! चेतनाथ बाजल- “से की भाय?”

ओना, मननदेव बुझि गेल जे चेतनाथक मन केतौ दोसर ठाम विरहा गेल अछि तँए भरिसक हमर बात नीक जकाँ नहि सुनि-बुझि पौलक। नइ तँ आनठाम भलेँ लोक बजैमे धकचुका जाए मुदा जैठाम सभ दिन, माने बच्चेसँ दुनू गोरेक बीच सोझा-सोझी गप-सप्प होइत आबि रहल अछि, तैठाम धकचुकाइक प्रश्न की अछि। मननदेव बाजल- “दोस, एकटा साहित्यिक कार्यक्रम करए चाहै छी, सएह की विचार?”

समर्थन करैत चेतनाथ बाजल-

“बढ़ियाँ विचार अछि दोस। जखन तैयार होइ, हमहूँ तैयार छी।”

चेतनाथक सह पेब मननदेव बाजल-

“मित्र, जीवन-मरणक कोनो ठेकान नहि अछि। वसन्ती लहरि मझधारमे उठिये रहल अछि, चलू दुनू गोरे अखनेसँ कार्यक्रम शुरू कऽ दिऐ।”

चेतनाथ बाजल-

“असम्भव तँ नहियेँ अछि, अछि तँ सम्भवे। एक गोरे वक्ता बनब, दोसर गोरे श्रोता। फेर बदल करैत चलब, दू हृदयक मिलान होइत चलत, कार्यक्रम सफल हेबे करत। हृदयेक मेल-मिलान ने साहित्यिक क्रार्यक्रमक उद्देश्य अछि।”

चेतनाथक विचार सुनि मननदेवक मन पाछू उनैट तकलक तँ बुझि पड़लै जे जखन एक गोरे वक्ता हएब तखन दोसर श्रोता सम्भव भेल। मुदा जैठाम दुनू गोरे सम्मलित वक्ता हएब तखन श्रोता

के हएत? फेर लगले अपने मनमे उठलै जे जँ श्रोता नहि रहत तखन की कार्यक्रमे छोड़ि दी? साहित्यसँ सिनेह रखैबला भलेँ लोक पतरा गेल बुझि पड़ैए मुदा साहित्यक मूल आत्मा तँ मनुष्येक बीच अछि किने। ओही आत्माक आत्मबलपर ने समाजक महल ठाढ़ अछि। ..सरपट डेग उठबैत मननदेव बाजल-

“भाय, अपन कर्म कियो करत अपन बुधि-विवेक-विचारसँ। कियो अपन उद्धार करैत माता-पितासँ लऽ कऽ परिवार समाज देश धरिक उद्धार करै पाछू लगैए आ कियो देश-समाज आ परिवारक संग अपने सेहो गर्तमे जाइते अछि, जइसँ समाजक संग परिवारोक विचार, दुदिशिया भइये गेल अछि। तइ बीचक विचार करए चाहै छी किने..!”

ऐठाम एकटा प्रश्न उठि गेल अछि जे जहिना मननदेव चेतनाथकेँ कखनो ‘भाय’, कखनो ‘दोस’, कखनो ‘मित्र’ कहैए, तहिना चेतनाथो मननदेवकेँ सेहो कहिते अछि। एकर कारण दुनूक बीच बच्चेसँ घुलल-मिलल जीवन तेना रहल जे क्रियागत रूपमे, काजक आधारपर एक-दोसराक बीच सम्बोधन होइत रहल अछि। ओना, अपना ऐठाम परम्परागतो बेवहार एहने रहल अछि। किए तँ देखिते छी जे जहिना ब्रह्माकेँ हजारो नामक उपाधि छैन, तहिना विष्णु, महादेवकेँ सेहो छैन। तेतबे नहि, आरो-आरकेँ छैन्हे। तहिना मननदेव आ चेतनाथ दुनू गोरे मिलि जखन कोनो काज करैए तखन एक दोसरकेँ सेहो कहिते अछि- ‘वाह दोस, देखल जेतइ.!’ तहिना जखन स्वर्ग-नर्कक चर्च करैत मैत्रेयी नदी पार करए लगैए तखन सेहो बजिते अछि, ‘मित्र, संगे-संगक टपान बनाउ.!’ तहिना अधला काज केलाक पछाइत सेहो कहिते अछि, ‘जो रे गदहा, अपने ते गेबे केलेँ, सात पुरुखा खनदानोकेँ लऽ गेलेँ.!’ खाएर जे से...। बेवहारिक जीवनमे सेहो एक-दोसराक बीच एना जानि-अनजानि भइये जाइए।

वएह आदमी एकटा काज अनुभवी जकाँ समापन करैए आ दोसर काजमे गोबर-गणेश जकाँ सेहो भइये जाइए। अखन एतबे।

मननदेव आ चेतनाथ एक्के गाम आ एक्के टोलक माने गंगापुर गामक दच्छिनवारि टोलक आ एक्के जातिक सेहो छी। एक-दोसरक घरोक दूरी ओते नै छै जेते भेलापर अनठियापन अबैए। एक उमेरिया रहने दुनू बच्चेसँ खेलाएलो-धुपाएल आ स्कूलमे नाउओ संगे लिखौलक। दुनूक विचारमे बच्चेसँ नीक मनुक्ख बनैक जिज्ञासा जगल। जइसँ लोअरे प्राइमरी स्कूलसँ दुनूक बीच प्रतियोगिता भऽ गेल, जेकर फलाफल ई होइत रहल जे एक बेर मननदेवक रिजल्ट अगुआ जाइ, तँ दोसर बेर चेतनाथक। ओना, आन जकाँ ईहो कनारि दुनूमे सँ केकरो मनमे नहियेँ रहै जे एक-दोसरसँ चोरा कऽ किछु पढ़ियो लेब आ बुझि कऽ मनमे रखियो लेब। जइसँ एक-दोसरमे भैंसा-भैंसीक कनारि होइए, से ऐ दुनूक बीचमे माने मननदेव आ चेतनाथक बीचमे कहियो नहि रहल। स्पष्ट दुनू बुझैए जे ज्ञाने एहेन धन छी जे दोसराकेँ देलासँ घटै नै छै, अभ्यास भेने बढ़बे करैए। तँए कहियो माने बी.ए. तक, एहेन भावनाक जन्म दुनूक मनमे उठबे ने कएल। आजादीक आन्दोलनक इतिहासक-विचार, माने अंगरेजी शासनक खिलाप, सेहो धीरे-धीरे ठंढाइये गेल। तेकर अनेको कारण भेल; ओना, ओ पीढ़ी जे आन्दोलनसँ जुड़ल रहला, धीरे-धीरे, माने उमेर पाबि मरितो गेला। अपन देशक अपन शासन भेल जइसँ रंग-बिरंगक जिनगी शुरू भेल। खाएर जे भेल तइसँ मननदेव आ चेतनाथकेँ कोन मतलब, अपन जीवनकेँ जीवन बना जीबैसँ मतलब मात्र छै।

बी.ए. परीक्षा देला पछाइत, दुनू गोरे विचारलक जे अपन शक्तिक उपयोगसँ अपन जिनगी बनबैत चलब। ओना, दोसरकेँ सहारा देबो आ लेबो उचित अछिए। किए तँ मनुक्ख सामाजिक

प्राणी होइक नाते समाजसँ जुड़ल अछि, जइसँ जीवनक अनेको एहेन आवश्यकता अछिए जे समाजेक सहयोगसँ पूर्ति कएल जा सकैए। बी.ए.क रिजल्ट नहि निकलल छल, तइसँ पहिने दुनू गोरे विचारि लेलक जे जखन धरतीपर वेटिकन सिटी सन देश, जेकर एक हजार जनसंख्या आ 0.44 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल छै, तैठाम अपन गाम तँ पाँच हजार जनसंख्याबला आ पाँच गुणा जमीनबला अछिए। तइ बीचमे अपनो दुनू गोरे छीहे। समाजक रंगो-रूप देखिते छिऐ जे घूस दऽ कऽ जखन नोकरी लेब तखन घूस खाइ काल कण्ठी केना बान्हि लेब। विधाता जखन जोड़ भरि हाथ, जोड़ भरि पएर, जोड़ भरि आँखिक संग जोड़ भरि कानो देलैन आ ज्ञानक बखारी सेहो दइये देलैन, तखन अपन ने भार भेल जे जेना एकरा चलाबी-बनाबी। एक तँ अहुना दुनूक मनमे जिनगीक कोनो कलुषता नहियेँ आएल छल, जइसँ जीवन दूषित होइत। गामक सिनेह अखन ओहिना बनल अछि जेना गामे अपन सभ किछु छी। परिवार, दियाद, समाज, माटि-पानि, आचार-विचार। एहेन दुनियाँ–जैठाम सभ किछु अछि–मे, के नहि बास करए चाहत।

अपन गामसँ दोसर जगह जाइक माने गामसँ बाहर जाइक परिपाटीक अपन इतिहास अछि। शुरूमे, माने आइसँ पचास बर्खसँ पूर्व ऐ परिपाटीक जन्म भेल। अपना ऐठाम माने मिथिलांचलमे दाही-जरती सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। बुझले अछि जे बारह बर्खक रौदीक पछाइत जनकजी जखन अपने हाथे हर पकड़लैन, तखन बरखो भेल आ सीतो भेटलैन। तहिना ने मनुक्खोक जीवन अछि। जखन अपन सुख-दुख ले अपने हाथे सभ किछु करब शुरू करब तखन जीवनक संग जानकियो भेटबे करती। मुदा अखन जे मिथिलावासीक पड़ाइनिक रूप अछि ओ दोसर तरहक अछि। एकर माने ई नहि कहए चाहै छी जे चूड़ा-दहीक भोक्ता मैथिल,

सुख-चैनिक धुनिया, चरि-जनिया पलंगपर ओंघरनियाँ मारनिहार, कोढ़ि-निकम्मा अपनाकेँ बना लेलैन तँए घरसँ भागैक नौबत बनि गेल छैन। प्राकृतिक आपैत-विपैत आइये नहि, सभ दिनसँ होइत रहल अछि, तैबीच मिथिलाक जे जनसंख्याक घनत्व अछि ओ आइ भलेँ, शहरीकरण भेने पछुआ गेल हुअए मुदा भरिसक देशमे सभसँ सघन आबादीबला जगह सभ दिनसँ रहल अछि। जहिना अपना सभ हिमालय पहाड़-कातक वासी छी तहिना केरल सेहो समुद्र–कातक राज्य छी, अपने सभ जकाँ ओहो घनगर अछि। देशक बाँकी जे राज्य अछि ओ अपन हाथ अपने छातीपर रखि विचार करत। जहिना सघन आबादीबला मिथिला अछि तहिना केरलो अछिए आ तहिना कनी-मनी कम बंगालो अछिए। जनसंख्याक सघन घनत्वबला मैथिल आपैत-विपैत पड़लापर अपना गामसँ बाहर जा कमा कऽ आनि अपन परिवारकेँ जीवित रखलैन। समयानुकूल, जेना ऐठामक श्रमिककेँ मात्र खेतीसँ जुड़ल कलाक अनुभव छेलैन। ..ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे हजारो बर्ख ऊपरसँ बाहरी शासक शासन करैत रहल, जे जीवनक संग कम खेलबाड़ केने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। गुलामीक जीवनो-दर्शन आ किरियो-कलाप वेदरंग भइये जाइए। से भेबे कएल। मुदा ओ अखन नहि, अखन बस एतबे जे केना मिथिलांचलक लोक बाहर जाइ छला। दुरकाल समय भेलापर जखन जनगण बेसहारा भऽ जाइथ, तखन गामक संग इलाकाक लोक जेर बना-बना माने सामुहिक रूपमे, पूब मुहेँ जाए लगला। नेपालक इलाका होइत, बंगालक ढाका तक पटुआ, धान काटए जाइ छला। तैसंग धनरोपनी करए सेहो जाइ छला। नेपाल-बंगालक संग असाम सेहो जाइ छला। कहब जे गाड़ी-सवारीक सुविधा तँ नहि छल, तखन एते दूर केना जाइ छला? ..पएरे जाइ छला। जेना-जेना सुविधा बढ़ैत गेल तेना-

तेना उपयोगमे अबैत गेल। तीनसँ छअ मास कमा लोक अबै छला आ परिवारक संग समय बितबै छला। साले-साल लोकक आबा-जाही हुअ लगल।

पछाइत, देश स्वतंत्र भेलापर अपना ऐठामक श्रमिक पूब दिशाक संग पच्छिम दिशा पकैड़ पंजाब सेहो जाए लगला। कृषिसँ जुड़ल श्रमिककेँ कृषि काज भेटने अनुकूल रोजगार भइये गेल।

पछाइत परिवेश बदलने लोककेँ चहुमुखी पड़ाइनक रस्ता भेटल। पढ़ल-लिखल लोककेँ जहिना पढ़ै-लिखैक काज भेटल, तहिना बिनु पढ़ल-लिखल लोककेँ कारखानामे श्रमक काज सेहो भेटल। मिथिलांचलक कृषि आधारित परिवार तहस-नहस हुअ लगल। अखन एतबे।

मननदेवो आ चेतनाथो पिताक एकलौता सन्तान, दुनूक अपन कृषि अधारित ओहन परिवार अछि जे भोजन-वस्त्रक संग कौलेज तक सेहो पढ़ा सकैए। रिजल्ट निकलैसँ पहिने मननदेवो आ चेतनाथो पिताकेँ कहलैन-

“हम नोकरी करए बाहर नहि जाएब।”

पिता तँ आखिर पिते छिया किने, ओ केना चाहता जे अपन अंग भंग हुअए। दुनूक पिता कहलखिन-

“तोरा भगबै के छह जे बाहर भगबह। अपन सभ किछु छह, तइ बीच जे रहबह तइसँ नीक जीवन दुनियाँमे केतए भेटतह।”

किछु दिन पूर्वक परिवेश किछु आरो छल, मुदा आजुक परिवेश ओहन बनि रहल अछि जे गामक अपन सभ किछु छोड़ि बाहर जा बसैक लिलसा लोकक मनकेँ पकैड़ लेलक अछि। बाध्यता तँ ऐठामक किसानकेँ भइये गेल छैन जे बेवस्थाहीन जीवन जीब रहला अछि। सार्वजनिक बेवस्था एतेक पछुआएल अछि जे अखनो

खेतमे ओहने हर चलि रहल अछि जेहेन–अढ़ाइ बीतक–हर जनकजी चलौने रहैथ।

ओना, सम्पूर्ण मिथिलाक दाही-जरती सेहो एक रंग नहियेँ अछि, किछु मौनसुनक कारणे, माने किछु प्राकृतिक बुनाबटिक कारणे आ किछु जमीनक आकारक कारणे अन्तर भइये गेल अछि। तैसंग सामाजिक बेवस्था सेहो एकरंग ने अखन अछि आ ने हजारो बर्खक गुलामीक बीच रहल। किछु बेवहार सार्वजनिक अछि, तँ किछु बेकतीगत वा जातिगत सेहो अछिए। राजा-रजबार, जमीन्दार, मास, जेठरैयति इत्यादि अनेको आम समाजक लोकक ऊपर शासन लदने छला जइसँ रंग-बिरंगक शासन पद्धति सेहो बनियेँ गेल अछि।

अखनो समाजक बीच एकरूपताक अभाव अछिए। जहिना समाजक बीच जीवनक बेवहारमे अन्तर अछि तहिना जीवनमे सेहो अछिए। तेकर अनेको कारण अछि। अखन से सभ नहि, बस एतबे जे केना जाति, सम्प्रदाय समाजकेँ विभाजित केने अछि। एक जातिक बेवहार दोसर जातिसँ किछु भिन्नो अछि आ किछु मिललो तँ अछिए, जे समाजमे दूरी बनौने अछि। तहिना सम्प्रदायक बीच सेहो अछि। एक सम्प्रदायिक रीति-रिवाज दोसरसँ भिन्न गढ़ल अछियो आ दिनानुदिन गढ़लो जाइते अछि। आजुक परिवेश, जैठम मनुक्खक निर्माणक मुख्य जगह छी, तैठाम एक-दोसरमे अन्तर अछिए। आजुक जे शिक्षण संस्थान अछि, ओकरो योगदान समाजकेँ विघटनक कारण अछिए। ओना, जखन विकास-प्रक्रिया आगू बढ़ैए, तइसँ मनुक्खक जीवनमे खुशहालीक सम्भावना बनैए, तखन वैचारिको आ आर्थिको विघटन हएब सोभाविक प्रक्रिया छीहे। मुदा तइमे आँखि मुनि कऽ, अन्धाधुन केलासँ नहि आँखि खोलि कऽ केलासँ अपन पूर्वजक देल विचारो आ जीवनोक रक्षा हेबे करत। जे जरूरियो अछिए। देखिते छी विचारक छलांग लोक ओतए तक मारि

दइ छैथ जे धरतीपर जेतेक मनुक्ख छी, ओ सभ एक जाति भेलौं, मनुक्ख जाति आ सबहक एकरंग जीवन हेबा चाही। तँए दुनियाँक कोनो कोण किए ने हउ, ओ अपन मातृभूमि भेबे कएल। ..मुदा वएह अपन जन्मदाता–माता-पिता–केँ वृद्धावस्थाक सेवा बिसैर बीरान बनियेँ रहल अछि। यएह तँ छी बुइधिक करामात..! चेतनाथ बाजल-

"भाय मनन, मनुक्ख ओहन उच्च कोटिक मननशील प्राकृतिक देन छैथ जे सामाजिक जीवनकेँ उच्च कोटिक जीवन बुझै छैथ।"

मननदेव बाजल-

"हँ, से बुझिते नहि छैथ, छथियो। तँए ने हुनकामे समाज-निर्माण करैक शक्ति सेहो छैन। मनुक्ख अपन जीवनमे समृद्धताक मुख्य द्वार समाजेकेँ बुझै छैथ। तँए हुनकामे ईहो बल हएब जरूरी अछिए किने जे अपन समाज निरमित करैत अपन जीवन सेहो आइक अनुकूल निरैम जाए।"

मननदेवक विचार सुनि चेतनाथमे जेना चेतना जगल तहिना सजग होइत बाजल-

"भाय मनन, अखन तक कहाँ केतौ देखै छी जे कोनो गाम एहेन भेल जइमे सभ साहित्यकारे भेला अछि आकि वैज्ञानिके। तँए ई कहब जे ओइ समाजकेँ साहित्यक खगता नै छैन, सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जहिना कोनो-कोनो गाममे, कहियो-काल गोटेक साहित्यिक कार्यक्रम होइए। तहिना अपनो दुनू गोरे मिलि किए ने कार्यक्रम निमाहि सकै छी?"

मननदेव बाजल- "हँ, तँ और की..!"

दुनू गोरे माने चेतनाथो आ मननदेवो, सहमत भेल जे कियो आन रहैथ वा नहि, अपने दुनू गोरे किए ने वसन्तमे वसन्त गाएब।

संयोग बनल, संजोग की बनल जे जखने दुनू गोरे–माने मननदेव आ चेतनाथ–साहित्यिक कार्यक्रमक विचार शुरू केलक, तखने एक गोरे दच्छिनसँ उत्तर मुहेँ जाइ छला, जे दुनूक विचार सुनलैन। वएह विचारदेव काका लग जा कऽ बजला। जइसँ पचहत्तैर बर्खक विचारदेव काका सेहो टुघरल-टुघरल पहुँच गेला।

विचारदेव काका कनी फरिक्केमे अबैत रहैथ कि आगूएसँ चेतनाथ बाजल-

"गोड़ लगै छी काका। अहीं सन-सन विचारवानक खगता समाजमे अछि।"

चेतनाथ अपन विचारक समापन केनौं ने छल कि मननदेव बाजल-

"अबियौ-अबियौ काका, हमरो हाजिरी।"

किछु बीतल समयमे जे विचारदेव काका समाजक विचारो आ काजोकेँ देखैत आबि रहल छला तइमे जेना नव कलश कलशैत देखि पड़लैन। तँए, अपन सभ सोग-पीड़ा बिसैर विचारदेव काका बजला- "विचारि कऽ एलौं अछि, तँए हमरो शुभकामना तोरा सबहक कार्यक्रम संग अछि।"

ओना, विचारदेव कक्काक मन स्पष्ट मानि रहल छैन जे बेकतीगत रूपमे नीक विचार समाजमे अखनो जीवित अछि, जेकरा अपन शक्तिक जरूरत अछि, जे हएत तँ समाजेसँ। अखन अपने छी, जाबे कर्म करैक ओ शक्ति छल ताबे घरसँ बाहर धरि करबे केलौं। जइसँ अपन आर्थिक स्थितिपर प्रभाव सेहो पड़ल। एकटा बेटा रहितो अपन परिवार लऽ कऽ दिल्लीमे रहैए। बेटी-जमाए तँ पहिनहिसँ रहिते छैथ, असगर दुनू बेकती छी, पाकल आम दुनू भेलौं। कहियो फुटो-फुट खसि सकै छी, आ कहियो दुनू संगो खसिये

सकै छी। के-केकरा देखत। यएह तँ भेल अछि समाज-निर्माताक दृष्टिमान खेल। केकरा कहबै, के सुनत..!

विचारदेव कक्काक निआस मनमे ओहिना आस एलैन जहिना राधा-कृष्णकेँ वृन्दावनक कदमक गाछक झूलामे अबैत रहैन। तँए ने बरहमासामे गबै छला जे 'अपन जिनगी अपन हाथ, अपन करम अपन साथ।' ..एकाएक विचारदेव कक्काक मनमे उत्साह जगलैन। उत्साहित मनमे बमछैत विचार उठलैन- 'पचहत्तैर बर्खक जीवन जे जीब चुकल छी, ओहिना जीब लेलौं? आँखि उठा जखन समाज दिस तकै छी तखन कहाँ अपनासँ उमेरगर दुइयोअना लोक समाजमे देखाइए। अधासँ बेसी लोक तँ साठि बर्खसँ कनी आगू कि पाछू मरि रहला अछि। सत्तैर बर्खसँ ऊपरक चारियोअना लोक जीवित कहाँ छैथ, तैठाम पचहत्तैर बर्ख अपन विचारानुकूल जीवन बीता लेब, बाल-बोधक खेल थोड़े छी.! आजुक समाज ओइ सीमापर पहुँच गेल अछि जे एक्के मुहेँ एक बातकेँ सत्तरह रंगक व्याख्या करैत सोलह रंगक झूठे बजैए। मुदा केकरा कहबै जे सुनत-बुझत। केकर के सुनैले तैयार अछि आकि सुनबे करैए। की पचहत्तैर बर्खक जीवन, बेठेकान जीवन ले, माने भेल जे ऐगला जिनगीक कोनो ठेकान नहि अछि, कखन छी कखन चलि जाएब माने मृत्यु भऽ जाएत। हारि कबूल कऽ लिअए?'..विचारदेव कक्काक मनमे एकाएक उत्साह जगलैन। पुन: बजला- "पहिने हमरा ई बात दुनू गोरे बुझा दए जे की करए चाहै छह?"

मननदेव बाजल- "काका, दुनू गोरे विचार केलौं अछि जे वसन्तक ऋतु अधासँ बेसी, वसन्त पंचमीक हिसाबसँ, बीत गेल मुदा अपन मनमे जे धाएल रंग-अबीर छल ओ ओहिना पड़ल अछि। तँए विचारि रहल छी जे साहित्यिक मंच बना दुनू गोरे फगुआ गाबि ली। मुदा तेसर तँ कियो छला नहि, तँए अखन तक सूरे-सार कऽ रहल

छेलौं।”

मननदेवक विचार सुनि विचारदेव कक्काक मनमे सेहो अपन चढ़न्त जुआनीक विचार जगलैन, मुदा किछु बजैसँ पहिने चेतनाथक विचार सुनब उचित बुझलैन। बजला-

“चेतू, तोहर की विचार छह?”

चेतनाथ बाजल-

“जाबे तक तेसर सुननिहार नहि छला ताबे तक धकमकाइ छेलौं जे सामूहिक गानक सुननिहार के हेता। मुदा जखन अहाँ सोझामे छी तखन आब कि मिसियो भरि धरी-धोखा मनमे अछि। हीय खोलि गबैले तैयार छी। रविन्द्रनाथो चाचा अपन ‘गीतांजलि’मे कहै छैथ- ‘एकले चलो, एकले चलो।’ से जँ नहि चलब तँ एको डेग चलि सकै छी। जहिना, जइ साबेक जौड़सँ बड़का-बड़का घर बन्हाइए तइ साबेकेँ की अपन गति एहेन नहि छै जे अपने बोझ बन्हाइते ने रहैए। तइसँ की समाजक लोक कम पिछड़ाह अछि। कखन संग रहत आ कखन ससैर जाएत, तेकर की कोनो ठीक अछि।”

चेतनाथक विचारकेँ विचारदेव काका धियानसँ सुनलैन। ओना, विचार नीक लगलैन मुदा बीचक भेद देखि बुझि गेला जे चेतनाथ अखन बालबोध अछि, तँए ओहन परिपक्वता बजैमे नहि एलैए जेहेन मनुक्खमे हेबा चाही। जँ से आएल रहितै तँ समाजसँ निराश नहि भेल रहैत। ओना, समाजक बीच निराश हेबाक ओहन सम्भावना नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि, मुदा ओ अछि जीवनक ऊपरका तरहत्थीपर। गहींरक तरहत्थीक विचारक फल ओहन अछि जइमे देब-देब मात्र अछि। देब-देबक माने भेल आनसँ बिना किछु नेने देब। ओना, दुनियाँक बीच वैचारिको आ बेवहारिकोमे देब-लेब

दुनूक चलैन अछि, सेहो तँ उचित अछिए। जँ से नहि हएत तँ दुनियाँक जे सघनता अछि तइमे एको डेग आगू उठाएब असान थोड़े अछि। हँ, तखन एतेकेँ तँ अनुचित कहले जा सकैए जे ‘देब’ बिसैर सोल्होअना ‘लेब’क जिनगी बना छाती तानि समाजमे लोक चलैए। अपन विचारकेँ अपना मनेमे घोंटि विचारदेव काका बजला- “बौआ, जहिना तोरा दुनू गोरेमे समाजक बीच साहित्यक निर्माण, माने साहित्यिक कार्यक्रम करैक जिज्ञासा छह तहिना हमरो छल। साले-साल गामोमे साहित्यिक कार्यक्रम करै छेलौं आ आन गामक अनेको कार्यक्रममे सेहो भागीदार बनिते छेलौं। तइसँ साहित्यकार समाजक बीच एकरूपता बनल छल, जइसँ बुझि पड़ै छल जे समाजक बीच साहित्य जीवित अछि, मुदा..?”

‘मुदा’ कहि विचारनाथ काका रूकि गेला। रूकैक कारण भेलैन जे अपन विचार जे बाल-बोधक मनपर थोपब से उचित नहि। अखन यएह नीक हएत जे पहिने दुनू गोरेक–माने मननदेवोक आ चेतनाथोक–पेटमे जे जिज्ञासा भरल अछि, ओकरा निकालि देखि ली। पछाइत, जहिना बाल-बच्चाक भोजनक उपाय माता-पिता बुझबो करै छैथ आ ओरियानो तँ करिते छैथ। जे केते उमेरक बच्चाकेँ केहेन भोजन भेटलासँ ओकर जीवन सुदृढ़ बनल रहत। समाजक बीच बसने मनुक्खकेँ समाजसँ एते गुण भेटिये गेल छैन जे सामूहिक रूपमे बच्चा पालन करबाक कलासँ भिज्ञ छथिए। ओना, समयानुकूल सेवा माता-पिताक आर्थिक साधनपर सेहो निर्भर करिते अछि, तँए किछु-ने-किछु विषमता अछिए। मुदा लाख विषमताक बावजूदो एते तँ एकरूपता अछिए जे जीवनक मूल तत्त्वसँ जुड़ल अछि।

पेटा-पेटी विचार तीनू गोरेक जगि चुकल छेलैन। जहिना विचारदेव काका मननदेव-चेतनाथक पेटक बात बुझए चाहैथ तहिना

चेतनाथो आ मननदेवो विचारदेव कक्काक पेटक बात बुझए चाहि रहल अछि। चेतनाथ बाजल- “काका, अपने सृजनशीलो छी?”

चेतनाथक प्रश्न सुनि विचारदेव काका विस्मित भऽ गेला। मने-मन विचारलैन जे की जवाब देब नीक हएत। जे सृजन केलौं ओ प्रकाशित नहि भऽ सकल, आ वर्तमान परिवेश तेना मरोड़ि देलक अछि जे आब सृजन करैक शक्तिये नहि रहल। मुदा समाजो तँ समाज छी, समाजक बीच मुँह नुकाएब कायरता हएत..।

विचारदेव काका बजला-

“बौआ, हमरा सन जे सर्जक छला, जिनका अपन घरोक ठेकान नहि छेलैन माने साले-सालक बरखा-पानिक बँचाव करैक ठेकान, तिनकर तँ सभ कएल-धएल बर्खाक पानिमे जहिना सड़ि-गलि गेलैन तहिना अपनो भेल। आब अपना लग किछु ने बँचल अछि। बँचल अछि मात्र अपन शरीर आ अपन विचार, तेकर जँ जरूरत हुअ तँ दधिची जकाँ अपन हार तक दऽ सकै छिअ। दधिचीक वंशक ने अपना सभ भेलिऐ। तैयार छिअ।”



शब्द संख्या : 3038, तिथि : 24 नवम्बर 2020

जिनकर जीत तिनकर माला

कातिक मासक देव-उठान पावनिक डालीक सजाबटक वस्तु-जात ले झंझारपुर हाट दिनेश भाय गेल छला। हाटक गहमा-गहमीसँ बुझि पड़लैन जे दस बर्ख पहिने जइ रूपमे छल भरिसक तेही रूपमे अखनो अछिए। तेकर अनेको कारणमे मुख्य कारण बुझि पड़लैन जे बरखा-पानि तेना घेराएल अछि जे बजार लगैक जगहे ने अछि। तँए सड़कक काते-कात तँ दोकान सजल अछि मुदा ओ उट्ठा दोकानक रूपमे अछि। खाएर जे अछि तइसँ दिनेश भायकेँ कोन मतलब छैन। मतलब एतबे छैन जे छठिये पावनिक कोनियाँ जकाँ देव-उठानक डाली सेहो होइए, तेकरे सजबैक वस्तु-जात ले हाटपर गेल छला।

सभ वस्तु कीनला पछाइत दिनेश भाइक मनमे कनी कचोट लगलैन। कचोट तँ कनियेँ लगलैन मुदा तेहीसँ देह झनैक उठलैन। झनैकते मुहसँ अनायास खसलैन-

“जे वस्तु अपन हाथसँ उपार्जित करै छेलौं, सएह कीनए हाटपर एलौं अछि। की यएह कल्याण हमरा सन किसान सबहक जिनगीमे भेल अछि। मुदा सुननिहार के अछि? जे अपनाकेँ सुननिहार कहैए ओ मतिसून अछि आ जे सुनत ओ तँ सहजे गतिसून अछि।”

मन मारि दिनेश भाय हाटसँ घरमुहाँ भेला। झंझारपुरक पुवारि टोलसँ निकैल जखन बलियारिक पाँतरक नहर लग एला तखन पूबसँ पच्छिम दिस, माने झंझारपुर जाइत दिस, रीतलालकेँ अबैत

देखलैन। रीतलालकेँ देखिते दिनेश भाइक मनमे उठलैन जे संजोग नीक अछि जे अपने घर दिस जा रहल छी आ रीतलाल बजार दिस जा रहल अछि तँए गप-सप्प करैक जगहे ने अछि..! मुदा फेर अपने मनमे भेलैन जे जखन रीतलाल लगमे औत तखन जँ टोका-टोकी नहि करब तँ गौंआँ केना भेलौं? लगले मनक विकार जगलैन जइसँ विचार उठलैन जे जँ कियो तेसर गौंआँ बीचमे रहितैथ तखन तँ हुनका दिस मुँह घुमा गप-सप्पमे लगि जाइतौं, जइसँ रीतलाल अपन रस्ते-रस्ते चलि जाइत। दोखियो तँ नहियेँ होइतौं। बड़ होइत तँ कुशल-क्षेम होइत, आ जँ परिवारक कोनो महत्वपूर्ण काजक विचार-विमर्श करैत होइ तखन की कएल जाए। मुदा सेहो गर नहि भेटलैन। लगले मन मुड़ैत विचार देलकैन जे एहेन पतीतक मुँह देखब पतितपनकेँ पोसब हएत। फेर मनमे भेलैन जे तइले ते अपने ने मुँह घुमा कऽ आगू बढ़ैत मुदा से नजैर गारि किए देखि रहल अछि? आ अपने मुँह नुका लेब, से केते उचित हएत..!

विचित्र स्थितिमे दिनेश भाय पड़ि गेला। तैबीच रीतलाल सेहो आगू डेढ़-दू डेगपर आबि गेलैन। बेवस भऽ दिनेश भाय बजला-

“केहेन रहल रीतलाल?”

रीतलाल बाजल-

“नीक रहल।”

जहिना बजैत दिनेश भाय आगू बढ़ैत गेला तहिना रीतलालो बढ़ैत गेल। जइसँ लग्गा[10] भरिक दूरी दुनू गोरेक बीच भऽ गेलैन।

बिहारमे पहिल किस्तक चुनाव भेना तीन दिन भेल छल। तेसर किस्तक चुनाव भेला पछाइत रिजल्ट निकलत। यएह सोचि दिनेश

---

[10] लग्गा साढ़े छअ हाथक होइए

भाय बाजल छला। दिनेश भाय नेता कम आ किसान बेसी छैथ। मुदा रीतलाल सोल्होअना नेते छी। नेतागिरीक अपन लूरि-मुँह छइहे। दुनू गोरेक बीच जखन किछु दूरी बनलैन तखन दिनेश भाय माइटिक मूर्तिमे शक्ति सवरूप देव-देवी-दुर्गा देखैक नजैर खिड़ौलैन। तँ पचास बर्खक रीतलालपर नजैर नाचए लगलैन। अनेको प्रश्न दिनेश भाइक मनमे उठए लगलैन। जेम्हरे तकैथ तेम्हरे झुण्डक-झुण्ड शिकारीकेँ शिकार खेलैत देखैथ। तैबीचमे रीतलालोकेँ सेहो देखैथ। देखला पछाइत दिनेश भाइक मनमे कखनो तामस उठैन तँ कखनो हँसी लगैन। जइसँ मन अक्छए लगलैन। अकछैत मन अपने फुरने बाजए लगलैन- 'कियो अपना कुरमासँ खेले करत ते करह।'

बजैक क्रममे तँ दिनेश भाइक मुहसँ निकैल गेलैन मुदा लगले अपने मन निरविचार भावे सलाह देलकैन जे अनुचित देखि मनमे रीस नहि उठए आ उचित देखि खीस नहि उठए तँ ओइ रीस-खीसक मोल की भेल आ ऋषिये-मुनि किए रिसियाह-खुशियाह होइ छला। जे अखनो दुर्वासा ऋषिक क्रोध सुनि करेज थरथराए लगैए। सभकेँ अपन-अपन सीमा अछि, जइमे सीमावद्ध जीवनक फलसँ तृप्त भइये जाइए। जखन कि अतृप्त मनमे आरो अतृप्तिता बढ़ि आबि जाइए। ऐ मे केकर दोख..?

अपन मनक विचारपर दिनेश भायकेँ अपने क्रोध उठलैन जइसँ साँसक गति तेज होइत फुटलैन- 'पचास-पचपन बर्खक उमेर रीतलालक हएत, अपन कहुना हएत तँ साठि-पैंसैठ बर्ख हेबे करत। 1947 इस्वीक आजादीसँ पूर्व भारतक मानस-पटलपर पूर्ण समर्पणक विचारसँ देश सेवा छल मुदा स्वतंत्र देश भेला पछाइत जखन संविधान सभाक बैसार शुरू भेल तहियासँ राजसत्ता पेबाक विचार सबहक मनमे उदय भेल। ओना, विचारक रूपमे मिथिलांचलमे मुख्यत: तीन पार्टी, बेकती-विशेष छोड़ि कऽ कॉग्रेस,

सोसलिस्ट आ कम्युनिस्ट पार्टी अपन भागीदारी राजसत्ताक बीच रखलैन।

1952 इस्वीक चुनावमे सैद्धान्तिक विचारधाराक प्रभाव समाजमे छल। ओना, समाजक बीसो प्रतिशत लोक बुझनुक नहि छला, मुदा जइ सत्तासँ समाज चलै छल तइ अनुकूल तँ छलाहे। जइसँ गाम-गाममे एहेन विचार छल जे गामक भोँट सभकेँ हेबा चाहिऐन। किए तँ अपन जीवन देशक पाछू गामौने छैथ। 1952क चुनावमे कॉग्रेस पार्टीकेँ नमहर पार्टी बुझि बेसी हिस्सा भोँट आ दोसर-तेसरकेँ उचितसँ कम भोँट भेटल। ओना, जहिना कॉग्रेस 1880 इस्वीक पछाइत अस्तित्वमे आएल, तहिना कम्युनिस्ट पार्टी 1925 इस्वीमे, सोसलिस्ट 1927 इस्वीमे सेहो आबि चुकल छल। 1956 इस्वीक चुनावसँ भोँटमे विकृति आएल जे बढ़ैत-बढ़ैत आजुक परिवेश बनौलक अछि। दिनेश भाइक मन देशक चुनावी इतिहास दिससँ अक्छए लगलैन मुदा इतिहासक विषय तँ मनमे घुरियाएले रहलैन..!

थोड़ेक सीमा टपिते दिनेश भाइक मन पचास बर्खक रीतलालपर पुन: आबि अँटैक गेलैन। बिना किछु विचार केनहि मुहसँ, खापड़िक मकै-लावा जकाँ फुटिकऽ भुइयाँपर खसलैन-

“सभ दिन रीतलाल बहुरूपियाक बहुरूपिये रहि गेल।”

अपन मुहसँ खसल विचारपर जखन दिनेश भाय अपने विचार करए लगला जे रीतलालकेँ बहुरूपिया कहलिऐ से जाइज कहलिऐ कि नजाइज। जखन राजनीतिसँ जुड़ि नेतृत्व करैए तखन अपनाकेँ सीमावद्ध करए पड़तै। जाबे अपन सीमा निर्धारण नहि करत ताबे अपन अस्तित्व ठाढ़ नहि हएत। आ जखन अस्तित्वे ने ठाढ़ हएत तखन बेकतीक व्यक्तित्व केना ठाढ़ भऽ सकैए। जेना, बेलक काँटक

डरे कियो बेलक फलेकेँ दुसैए जे एकरा कौओ-कुकुर ने पुछै छै। आ कियो काँटसँ बेधल डारिक गाछपर चढ़ि बेल तोड़ि नहि खाइए सेहो बात नहियेँ अछि। अपन हारक हार थोड़े कियो कबुल करैए जे रीतलाल करत। मुदा की ईहो झूठ नहियेँ छिऐ किने जे जइ रीतलालकेँ समाजमे दहेजक बाढ़िक चालिकेँ रोकक चाहिऐ से नहि रोकि ओही पाछू अपनो बेहाल भऽ गेल आ अखनो एक मदक आमदनी भेटिये रहल छै। प्रश्न अछि जइ दहेजक कुरीतिकेँ सरकारसँ राजनेता धरि अधला कहैए ओ एहेन तेज गतिए माने द्रुत गतिसँ चलि केना रहल अछि? बेरुका पहर, संयोग बनल जे दिनेश भाय रीतलालेक घरक आगू देने खेत देखए उत्तरवरिया बाध जाइ छला। दरबज्जेपर रीतलाल सेहो छल। भिनसुरका उखड़ाहाक हाटक गप-सप्प आकि अधटोक गप-सप्प रीतलालक मनमे उठल से रीतलाल जानए। मुदा दिनेश भायकेँ देखिते बाजल- "दिनेश भाय, चाह पीबैक बेर छै, चाह पीब लिअ, पछाइत जाएब।"

रीतलालक प्रति जे अखन तक दिनेश भाइक कुधारणा बनि गेल छैन ओ परीक्षाक मुँहपर पड़ि गेलैन। परीक्षाक मुँहपर ई पहुँच गेलैन जे एक धारणा बनैए, सुनल विचारपर। दोसर बनैए, कएल काजक विचारपर, जे देखल भेल। रीतलालक प्रति दिनेश भाइक धारणा 'सुनल विचार'पर आधारित छैन। एकाएक दिनेश भाइक मन चौंकलैन जे सचमुच अपनो सत्यसँ भटकल छी। मुदा लगले रणभूमिक कृष्ण जकाँ सातो घोड़ाक छोर खिंचैत अपनाकेँ रणभूमिक योग्य मानि दिनेश भाय दलान दिस डेग बढ़बैत बजला- "रीतलाल, आबो की तूँ अपनाकेँ धिये-पुते बुझै छह जे एना बजलह- 'चाह पीबैक बेर अछि।' आब तँ एना बाजह जे चाहेक दिन-राति छी। जखन मन हुअए समये-समय अछि।"

चटसार परक लोक रीतलाल छीहे, गप-सप्पमे दिनेश भायकेँ

केना ठेलय देतैन। बाजल- “भाय साहैब, दुनियाँमे केतौ बबो बनि गेल छी, केतौ पितो छीहे आ केतौ भाय तँ केतौ पित्ती नइ छी सेहो बात नहियेँ अछि, मुदा केतौ किछु छी, अहाँक आगू धिये-पुता छी किने।”

रीतलालक विचार दिनेश भाइक मनकेँ झनझना देलकैन मुदा दिन-भरि तँ लोकक मन कोनो-ने-कोनो रूपेँ झनझनाइत रहिते अछि, मुदा ओ तँ मात्र झनझनी धरि रहि गेल अछि। अपन विचारकेँ सम्हारैत दिनेश भाय बजला- “रीतलाल, बहुत दिनसँ तोरासँ गप-सप्प करैक मन होइत आबि रहल अछि मुदा परिवारमे तेना ओझरा गेल छी जे अपनो हित-अपेछित बीरान भऽ गेल छैथ।”

तैबीच रीतलालक छोट बेटी–सुभद्रा–जे बी.ए.मे पढ़ैए, चाह नेने दरबज्जापर पहुँच गेल। सुभद्राकेँ देखि दिनेश भाय बजला- “बौआ, कोन क्लासमे पढ़ै छह?”

सुभद्राकेँ बजैसँ पहिनहि रीतलाल मथाहाथ दैत बाजल-

“भाय साहैब, विचित्र स्थितिमे पड़ि गेल छी। साल भरि आरो कौलेजक खर्चक फेरामे रहब, पछाइत बिआहक फेरामे पड़ि जाएब।”

पिताक बात सुनि सुभद्राक मनमे मिसियो भरि क्रोधक लहरि नहि जगल। तँए पिताक विचारकेँ सीमापर पहुँचला पछाइत अपन उत्तर दिनेश चाचाकेँ देबैन। ओना, अट्ठारह बर्खक सुभद्राक मनमे जगि चुकल अछि जे माता-पिताक संग बेटी नमहर समस्या बनियेँ गेल अछि। जहियासँ बच्चा पालैक पूर्ण भार उठा माता-पिता प्रौढ़ बना कर्म-क्षेत्रमे प्रवेश करैक सीमा तक पहुँचा दइ छैथ तेकर पछातियो, जखन कि ओ बेटी खुद एते सक्षम भऽ गेल अछि जे अपन परिवारक निर्माण ओ स्वयं कऽ सकैए। मुदा कारण केतए

नुकाएल अछि से तँ तकला पछातिये ने भेटत।

सुभद्रा बाजल-

“चाचाजी, बी.ए.मे पढ़ै छी।”

सुभद्राक बात सुनि दिनेश भाय रीतलाल दिस मुखातीव होइत बजला-

“रीतलाल, तोरे सबहक ई देश-दुनियाँ छिअ, तखन तूँ किए कनै छह। एहने ठाम ने लोक कहैए- ‘राँड़ कानै, एहिवाती कानै, तइ लागल बड़कुमारि कानै।”

ओना, रीतलाल दिनेश भायसँ तीन डेग आगू बढ़ि छअ मासा सुना दइतैन मुदा जीवनक संघर्ष चाहे उनटा हौ कि सुनटा, नव सीख तँ सिखैबते अछि। तही बीच ने विचारधारा सेहो अपना गतिये चलिते अछि। रीतलालकेँ अपन तीस सालक राजनीतिक जीवन मनमे झलैक उठल। झलैक ईहो उठल जे भरिसक एहेन तँ ने भ्रम मनमे जनैम गेल अछि जे एहेन विचार दैत हुअए जे दुनियाँक किरदानीकेँ तँ हम खूब जनै छी मुदा अपन किरदानी कियो ने बुझैए...। जइसँ रीतलालक मनमे पछताबा भेबे कएल। रीतलाल बाजल-

“दिनेश भाय, तीस-पैंतीस बर्खसँ तँ ओहूँ देखैत अबै छी जे अहाँ लग कहियो कोनो झूठे वा गलत काज केलौं हेन।”

रीतलालक विचार सुनि दिनेश भाय गुम्म भऽ गेला। गुम्म होइक कारण भेलैन जे दिनेश भाइक ओहन जीवन बनि गेल छैन जे जरूरत भरि सम्बन्ध समाजमे बनौने छैथ। रीतलाल समाजक बीच राजनीतिसँ जुड़ल अछि, मुदा दिनेश भाइक नजैरमे बेठेकान लोक अछि। तँए ठेकान-बेठेकानक बीच जेते दूरी हेबा चाही से तँ राखबे ने नीक हेतैन। दिनेश भाय जखन पाछू उनैट तकैथ तँ केतौ एहेन ठेकनगर विचार नजैरपर चढ़बे ने करैन। किए तँ जखन समाजमे छी

तखन जँ कियो नीक वा अधला जे करैथ, मुदा घटनाक पछातियो तँ जिज्ञासा करैत ओइ घटनाकेँ मुहाँमुहीं जानि लेबे ने नीक हएत। तइ दृष्टिसँ रीतलाल सोल्होअना निर्दोख दिनेश भाइक नजैरमे बनि रहल छल। मुदा बीचमे लोकक मुँहक सुनलो आ हवाक रूखियोसँ दिनेश भाय रीतलालकेँ पतीत बुझिये रहल छैथ, तँए मनमे भटभटी नहि छैन सेहो बात नहियेँ छैन। सेहो छैन्हे, मुदा एहेन मोड़पर दिनेश भाय पहुँच गेल छैथ जे मनमे साँप-छुछुनैरिक पड़ि भऽ गेलैन। जँ छोड़ि देब तँ आन्हर भऽ जाएब, नहि जँ खाएब तँ जान गमाएब..! बेवस मनकेँ सबस करैत दिनेश भाइक मन फुरफुरेलैन। फुरफुरेलैन ई जे जखन प्राणो छुटैकाल, माने जीवनक अन्तिमो सीमापर पहुँचल यात्रीकेँ गंगाजल पियौलासँ पवित्रताक भान होइते अछि तखन रीतलाल तँ सहजे अखन बच्चे अछि। जेना मनमे कोनो तरहक मलिनता नहि रहलापर होइ छै तहिना दिनेशो भायकेँ भेलैन। बजला-

“रीतलाल तोरासँ बहुत रास गप-सप्प करैक अछि, मुदा अखन हमहूँ खेत देखए विदा भेल छी।”

अधडरेड़ेपर दिनेश भाय अपन विचारकेँ ऐ नजैरसँ रोकलैन जे कर्मकेँ माने काजकेँ रीतलाल केते महत्त दइए आकि सोल्होअना मुखौटिये कारोबार रखने अछि। अपन प्राण-प्रतिष्ठाकेँ बँचबैत रीतलाल बाजल-

“भाय साहैब, असथिरसँ पहिने चाह पीब लिअ। पछाइत पान खाएब, दुनू भाँइ टहलैत खेतो तक जाएब आ ओमहरसँ घुमि एला पछाइत फेर चाहो पीब आ जेते गप-सप्प बाँकी अछि सभ पुरा लेब। जिनगीक कोन ठेकान अछि, कबीर बाबा कहने छैथ ‘पलमे पड़लए भऽ सकैए।”

रीतलालक विचारमे अपन सहमत दैत दिनेश भाय बजला-

"जखन अपन गाम छी तखन दिन आकि राति की? अपन जे पैछला बँकियौता काज अछि, सभ पुराइये लेब ने नीक हएत।"

ओना, दिनेश भाइक मनमे खटैकिये रहल छेलैन जे जइ नजैरिये रीतलालकेँ बुझै छेलौं तइसँ भिन्न रूप देखमे आबि रहल अछि..! तैबीच सुभद्रा पान नेने पहुँच गेल। झलफल होइत समय, तँए दिनेश भाइक मनमे कछमछी रहबे करैन जे कखन खेतक आड़िपर पहुँचब।

पान खा दुनू गोरे माने दिनेशो भाय आ रीतलालो, उत्तर मुहेँ खेत देखए विदा भेला। ओना, दिनेश भाय ऐ ताकमे छला जे रीतलाल किछु बाजत आ रीतलाल अपना ताकमे जे दिनेश भाय बजता। चुपाचुपीमे किछु समय निकलला पछाइत समयकेँ नष्ट होइत देखि दिनेश भाय बजला-

"रीतलाल, अखन अपना सभ खेतक आड़ि दिस जा रहलिऐ हेन तखन किसान भेलिऐ किने?"

अपना देशमे किसान एते प्रतिष्ठित शब्द बनि गेल अछि जे सभ अपनाकेँ ओहि परिवारसँ सम्बन्ध स्थापित केनहि छैथ। मुदा प्रतिष्ठाक पाछू वास्तविकतोकेँ ओहने प्रतिष्ठा भेटत तखन ने। दिनेश भाइक विचारक प्रवाहमे रीतलाल भँसैत बाजल-

"अहूमे कि कोनो चोराएल बात अछि। गामकेँ जँ देखल जाए तँ सोल्होअना परिवार ने खेतसँ जुड़ल छी।"

रीतलालक विचारकेँ आगू बढ़बैत दिनेश भाय बजला-

"अपना ऐठाम लोक बजै छैथ जे देवालय पहुँचैक डोरी जखन लगैए तखन ओइ स्थानक दर्शन करैक उड़ी-विड़ी मनमे लगैए। यएह डोरी लगाएब भेल जे जइ खेत जा रहल छी, माने देखैले, ओइ

खेतक नीक-बेजाएक चर्च करैत खेतक आड़िपर पहुँच अपना नजैरसँ देखि जखन करब तखने ने भेल वास्तविक भूमिक दर्शन।”

दिनेश भाइक विचारक प्रवाहमे रीतलाल भँसि रहल छल। काल्हि धरि रीतलाल जइ नजैरिये दिनेश भायकेँ देखि रहल छल, तइसँ भिन्न रूप आइ देखबामे एलइ।

खेतक आड़िपर सँ विदा भेला पछाइत दिनेश भाय रीतलालकेँ पुछलैन- “रीतलाल, खेतमे की सभ देखलह?”

‘खेतमे की सभ देखलह’ रीतलाल बुझबे ने केलक। बुझलक एतबे जे अखन खेत जोतै-जोकर नहि भेल अछि, पान-सात दिनक पछाइत हएत। ई एहेन कोन बड़का विचार भेल जे दिनेश भाय बजला। ओना, रीतलाल किछु अछि तँ चटसार परक लोक छीहे, तँए गैंचिया चालिक[11] लूरि छइहे। बाजल- “दिनेश भाय, अपनेके संगमे ने छी, आगू-आगू अहाँ कहबै तखन ने पाछूसँ..?”

रीतलालक बोलीसँ दिनेश भाय बुझि गेला जे ई काग वचन छी आकि कोयलीक। सुग्गाक छी कि चिलहोरिक। बोली अकानब बाल-बोधक खेल थोड़े छी। अपने मन कहलकैन, अनेरे समुद्र उपछब हएत। दिनेश भाय खेतक आड़िसँ आगू बढ़ैत बजला- “रीतलाल, अपना गाममे ने एकरंग खेत अछि आ ने एकरंग मलगुजारी।”

अखन धरिक जे धरती रीतलालक राजनीतिक छल ओ ओइसँ भिन्न छल। अनभुआर भेल रीतलाल बाजल- “भाय साहैब, दुनू भाँइकेँ एकठाम बैसार दुआरे एना विचारमे..?”

रीतलालक विचारकेँ मनेमे रखि दिनेश भाय बजला- “अपना गाममे तीनटा जमीन्दार, अंग्रेजक जमानामे, बाहरक छला। तीनूक

[11] गैंची माछक चालि

अपन-अपन भागो माने जमीनक हिस्सा, छेलैन्हे। तीनूक बँटवारा गाममे छेलैन। तीनू अपन-अपन मलगुजारियो बनौने छला आ खेत नपैबला लग्गी सेहो। तँए एक्के गाममे, एक कट्ठा खेत दू रंग अछि। आ एक्के आड़ि-पाटिक खेतक मलगुजारियो दू रंग अछि।"

रीतलाल बाजल- "भाय साहैब, रस्ते-रस्ते गप केलासँ किछु सुनबो करै छी आ किछु नहियोँ सुनि पबै छी तँए दरबज्जेपर चलू जे निचेनसँ सभ गप सुनबो करब आ विचारो करब। मन हएत तँ पहिने जलखै कऽ लेब, नहि तँ चाह पीब पान खा असथिरसँ गप-सप्प करब।"

रीतलाल ऐठाम पहुँच, दुनू गोरे बैसला। तैबीच सुभद्रा चाह सेहो नेने आबि चुकल छल। खेतसँ घुमला पछाइत जे विचार खेतक सम्बन्धमे दिनेश भाइक छेलैन, ओकरा दोहरा कऽ बाजब उचित नहि बुझलैन। जखन दुनू गोरे छेलौं तखन ओ दू पुरुख-पात्रक बीचक विचार छल, मुदा जखन परिवारमे पहुँच चुकल छी, तखन तँ ओहन विचार ने उचित हएत जे सभसँ सम्बन्धित अछि, माने परिवारक सभसँ...। दिनेश भाय बजला-

"रीतलाल, केते दिनसँ राजनीति करै छह?"

रीतलाल बाजल-

"बुझू जे अंगरेजे जमानासँ शुरू केलौं आ स्वतंत्र भेलाउत्तर अखन तक करिते छी।"

दिनेश भाय बजला-

"जहियासँ राजनीति शुरू केलह तहियासँ आइधरिक सभ बात सुनैले तैयार छिअ। तँए बीचमे टोका-टोकी नहि करिहह। एकहरफी जड़ि-सँ-छीप धरि सुना दाए।"

दिनेश भाइक विचार सुनि सुभद्राक मनमे जागल जे हमरो सन

परिवारक बात सुननिहार जँ समाज छैथ तखन हम तँ सहजे परिवारक भेलिऐन। तँए, हमहूँ किए ने सुनब? ओना बाल-बोध सुभद्रा हरिद्वारक झड़नासँ उतरल गंगा जकाँ पवित्र अछिए, किए बुझैत जे बेकती-बेकतीक विचारमे विषमता अछि। चाहक गिलास दुनू गोरेक हाथमे पकड़बैत सुभद्रा बाजल-

"पानक सभ वस्तु आँगनसँ नेने अबै छी, एतै सोझामे पानो लगाएब आ विचारो सुनब।"

सुभद्राक विचार रीतलालकेँ ओते नीक नहि लागल जेते दिनेश भायकेँ लगलैन। दिनेश भाय बजला- "परिवारक विचार तँ परिवार भेल। जे विचार बेकता-बेकती जीवनसँ जुड़ल हुअए तइसँ नीक ने हएत जे सामूहिक हुअए।"

रीतलाल बाजल- "भाय साहैब, बहुत बात एहेन अछि जे अहाँ लग बजैमे लाज नहि हएत, मुदा परिवारक जवाबदेह होइक नाते परिवार लग बाजि केना लजाएब।"

ओना, बजैक क्रममे रीतलाल बाजि गेल मुदा अपने मनमे ठहकल, जे केना बच्चामे बड़का नेता सबहक विचार (भाषण) सुनैक जिज्ञासा जगल? जगबे नहि कएल, जा-जा सुनबो करैत रहलौं। राजनीतिक दलसँ सेहो जुड़लौं। राजनीति फील्डक कार्यकर्ता सभसँ सेहो जुड़लौं। मंचपर चढ़ि भाषणो सुनलौं आ भाषण करबो केलौं। मुदा आइ की स्थिति अछि, सीमाबद्ध दलसँ जुड़ल छी आकि सीमाहीनसँ...।

अपने मन रीतलालक सकपका गेल। ओना, दिनेश भाइक मनमे हवा बहिये रहल छेलैन जे केना ऐठामक नेतृत्वक विकास भेल अछि। रीतलालक विचार सुनि दिनेश भाय एक्के बेर डलना

तरकारी[12] जकाँ घोंटैत बजला- "रीतलाल, जखन दुनू गोरेक हेराएल भैयारी भेटल तखन की आइये सभ गप करब जरूरी अछि। जहिना काल्हि, परसू, चारिमदिन समय अछि तहिना ने अपनो सभकेँ गप-सप्प करैक जीवनक कड़ी सेहो अछिए।"

दिनेश भाइक विचारमे हारल नटुआ जकाँ हूँहकारी भरैत रीतलाल बाजल- "हँ, से तँ अछिए।"

दिनेश भाय मने-मन बुझि रहल छला जे मनुक्खक जे बुनियादी जीवनक बुनियाद अछि ओ तँ समयक संग चलिते अछि। सभ बुझिते छी जे दुपहर होइत-होइत अन्नक चाह होइए आ तहिना मौसम अनुकूल वस्त्रोक होइए, मन खराव भेला वा कोनो अन्य रोग-वियाधि भेने इलाजोक होइत अछि, तहिना जीवन ले घरोक खगता अछिए। जखन जेहेन समय बनत तखन तेहेन विचारकेँ ढंगसँ बुझौने लोक नीक जकाँ बुझैए माने बेवहारिक बोध होइ छै। दिनेश भाय बजला- "रीतलाल, मोटामोटी बुझह जे तोरासँ पहिल मिलन छी तँए अखन कोनो जरूरी अछि जे पदार्थ आ चेतनाक माने ऊर्जा आ शक्तिक चर्च आइये कऽ ली। अखन जे समय अछि बस तेकरे चर्च करब समयानुकूल हएत।"

रीतलाल बाजल- "हँ, से तँ ठीके। ने समय पड़ाएल जाइए आ ने अपने सभ।"

रीतलालक विचारमे दिनेश भाय अपन सह पौलैन। सह पेबिते सहैट कऽ रीतलालक विचारकेँ पकैड़ बजला- "रीतलाल, आगू-पाछूक गप-सप्प आगू-पाछू होइत रहत। अखन जे समय अछि

---

[12] डलना तरकारीमे अनेको विन्यास रहैए

सएह गप करह।”

ऐगला-पैछला गप-सप्पपर झाँपन पड़िते रीतलालक मन जेना सर्रास भेल। बाजल-

“सएह नीक हएत भाय साहैब।”

दिनेशो भाइकेँ मन अपने मनाही केलकैन जे अखन अंगरेज जमानाक जीवन आ सत्तैर सालक जनतंत्रक जीवनमे की परिवर्तन आएल अछि। आकि ओहिना माने अंगरेजे जमानाक गाम जकाँ, अखनो गाम पड़ल अछि। आकि ओइसँ निच्चाँ-मुहेँ ससरल अछि कि ऊपर-मुहेँ उठल अछि। दिनेश भाय बजला-

“पहिल किस्तक चुनाव भऽ गेल; दोसर तेसर किस्त बाँकी अछि। रिजल्ट दिन किनका माला पहिरेबहुन?”

अखन धरिक विचार-विमर्शक पछाइत रीतलालक मन जेना राग-विराग मुक्त भऽ गेल होइ आ संकल्पक संग पौरुषपन जन्म लऽ नेने होइ, तहिना रीतलाल बाजल-

“भाय साहैब, काज शब्दमे, माने क्रिया भाषाक तहमे नुकाएल खेल कऽ रहल अछि। तँए किनका माला पहिरेबैन। एकटा माला नोमिनेशनसँ पहिने कीनलौं जे नोमिनेशन दिन पहिरेबैन। मुदा ओहन-ओहन उम्मीदवार भेला जे टिकटेमे सिद्धान्त पढ़ितो छैथ, गढ़ितो छैथ आ मानितो तँ छथिए।”

रीतलालक विचार सुनि दिनेश भाय मुसकुराइत बजला-

“खाएर जे भेल से नोमिनेशन दिन भेल। चुनावमे केहेन रहलह?”

रीतलाल बाजल-

“और जे भेल से भेल, जे पैछला सभ चुनावसँ ऐ बेरक

चुनावमे आमदनी नीक भेल।"

दिनेश भाय बजला-

"माला घरेमे रखने रहि जेबह। आकि..?"

रीतलाल बाजल-

"जिनकर जीत तिनकर माला छिऐन।"

दिनेश भाय बजला-

"सएह।"

"हँ, सएह ने ते और की।"

बाजि रीतलाल चुप भऽ गेल।

❑

शब्द संख्या : 3025, तिथि : 30 नवम्बर 2020

❑❑❑

❑❑

❑

Notes